विक्रम संवत 2079 ■ पौष/माघ मास(11) ■ 01जनवरी 2023 ■ मूल्य : 23 रु.

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

चरैवेति

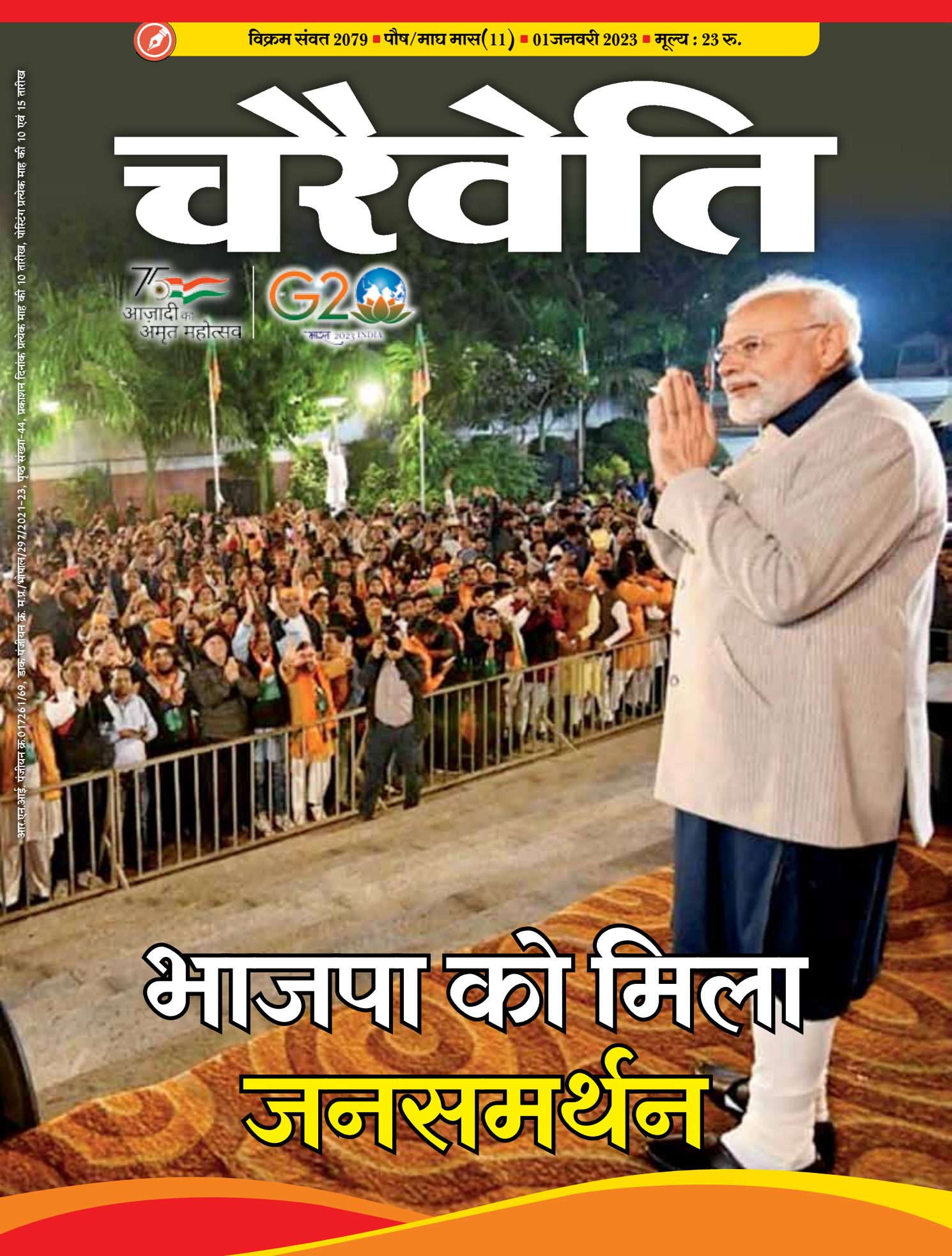

भाजपा को मिला जनसमर्थन

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद भवन में महापरिनिर्वाण दिवस पर डॉ. बी. आर. अंबेडकर जी को पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने भारत रत्न बाबा साहेब डॉ. भीम राव अम्बेडकर जी की पुण्यतिथि पर भाजपा मुख्यालय, में पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने संसद भवन में महामना पंडित श्री मदन मोहन मालवीय जी की जयंती पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अपनी मां श्रीमती हीराबेन मोदी जी के अंतिम संस्कार में शामिल हुए।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पूर्व पीएम श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती पर 'सदैव अटल' पर पुष्पांजलि अर्पित की।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 'वीर बाल दिवस' के अवसर पर संबोधित किया।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी गुजरात में मुख्यमंत्री जी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए।

▶ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2001 के संसद हमले के दौरान शहीद हुए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- मोदी जी पर अटूट विश्वास

कवर स्टोरी ▶ 05

- भाजपा को मिला जनसमर्थन

- **कवर स्टोरी :** 09
  जनता को मोदीजी के विकासवाद और गरीब कल्याण में विश्वास...
- **कवर स्टोरी :** 11
  गुजरात ने रिकॉर्ड ध्वस्त किए- अमित शाह...
- **आत्मनिर्भर बनता म.प्र. :** 13
  मध्यप्रदेश निवेश का केंद्र: मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान
- **वसुधैव कुटुम्बकम :** 15
  जी-20 और भारत की अध्यक्षता...
- **बढ़ता जनसमर्थन :** 18
  अबकी बार 200 पार: विष्णुदत्त शर्मा
- **उपज का अधिकतम लाभ :** 19
  कृषकों के हित में "न भूतो न भविष्यति" वाला वर्ष रहा है 2022 : कमल पटेल
- **अंत्योदय साकार :** 20
  भाजपा ने गरीबों का जीवन स्तर सुधारा : विष्णुदत्त शर्मा
- **गौरव यात्रा :** 21
  जनजाति गौरव यात्रा...
- **क्रांतिकारी बदलाव :** 22
  स्वास्थ्य सेवा भविष्य की जरूरतों के अनुरूप...
- **एक भारत श्रेष्ठ भारत :** 23
  संकल्प विकसित भारत के निर्माण का है : सरकार (DevINE) इरादे से काम...
- **जीरो टॉलरेंस** 25
  2014 से पूर्वोत्तर में शांति का दौर ...
- **कीर्तिमान :** 26
  2022 में मध्यप्रदेश ने गढ़े अनेक कीर्तिमान...
- **भाजपा पर विश्वास :** 29
  जनता का भाजपा पर विश्वास: कैलाश विजयवर्गीय
- **मन की बात :** 30
  G-20 को जन-आंदोलन बनाना है हर क्षेत्र में भारत का दमखम
- **पुण्यतिथि :** 36
  भारत को विश्वगुरु बनना है
- **जयंती :** 37
  » 11 सितम्बर 1893 :स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिकागो की धर्मसभा में दिया...
  » क्रांतिकारी विचारों के प्रेरक थे लालाजी
- **त्यौहार :** 39
  सूर्य नारायण का पर्व है मकर संक्रान्ति
- **विचार-प्रवाह :** 40
  भारत के राष्ट्रवाद की अवधारणा

मुख्य व्रत-त्यौहार

2. पुत्रदा एकादशी व्रत 4. प्रदोष व्रत, रोहणी व्रत 6. स्नानदान व्रत, पौषी पूर्णिमा,षोडषकारण व्रत प्रारम्भ 10. सं. गणेश, तिल चौथ व्रत 14. मकर संक्रांति 15. मकर संक्रांति पुण्यकाल 18. षट्तिला एकादशी व्रत 19. तिल द्वादशी, प्रदोष व्रत 20. शिव चतुर्दशी व्रत, ऋषभदेव निर्वाणोत्सव 21. स्नानदान श्राद्ध, मौनी अमावस 23. चन्द्रदर्शन 25. तिल कुंद, विनायकी चतुर्थी 26. बसंत पंचमी, दशलक्षण पर्व प्रारम्भ, पुष्पांजली व्रत प्रारम्भ 27. शीतला षष्ठी 28. अचला, रथ सप्तमी, माँ नर्मदा प्राकट्योत्सव 29. भीष्माष्टमी 30. महानंदा नवमी

मुख्य जयंती-दिवस

6. छेरछेरा 10. विश्व हिन्दी दिवस 12. महर्षि महेश योगी जयंती 14. स्वामी रामानंदाचार्य जयंती 20. अ.भा. मारवाड़ी युवा मंच स्था. दि. 21. वीर हेमूकालाणी शहीद दिवस 26. माँ परमेश्वरी, कवि निराला जयंती, म. खटवांग जयंती 28. संत महादेव, महर्षि नवल जयंती, लाला लाजपतराय जयंती 30. शहीद स्मृति दिवस 31. अवतार मेहेरबाबा की अमरतिथि

वर्ष-54, अंक : 11, भोपाल, जनवरी 2023

हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

श्रेष्ठ आदर्शों की ऐसी अखण्ड संस्कार परंपरा से ही समाज जीवित व एकात्म रहकर अपनी प्रगति करता है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

मोदी जी पर अटूट विश्वास

गुजरात के विधानसभा चुनाव के परिणामों ने इतिहास रच दिया। भारतीय जनता पार्टी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुजरात की जनता ने ऐतिहासिक विजय प्रदान की। भारतीय जनता पार्टी का वोट शेयर बहुत ज्यादा रहा। देश की जनता का भारतीय जनता पार्टी के प्रति अपनेपन का भाव अलग-अलग राज्यों में हुए उप-चुनावों में भी साफ-साफ दिखा।

हाल ही के संपन्न विधान सभा चुनावों ने एक बार फिर स्थापित कर दिया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी का जनाधार तेजी से बढ़ रहा है। गुजरात के विधानसभा चुनाव के परिणामों ने इतिहास रच दिया। भारतीय जनता पार्टी को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुजरात की जनता ने ऐतिहासिक विजय प्रदान की। भारतीय जनता पार्टी का वोट शेयर बहुत ज्यादा रहा। देश की जनता का भारतीय जनता पार्टी के प्रति अपनेपन का भाव अलग-अलग राज्यों में हुए उप-चुनावों में भी साफ -साफ दिखा। उत्तर प्रदेश में रामपुर में भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी की जीत शानदार रही। इतना ही नहीं बिहार में जिस तरीके का धोखा भारतीय जनता पार्टी को दिया गया था, उसका भरपूर बदला बिहार की जनता ने लिया। इसीलिए वर्तमान के उपचुनाव में बिहार में भारतीय जनता पार्टी का प्रदर्शन आने वाले चुनावों का स्पष्ट संकेत दे रहे हैं, कि आगामी सारे चुनावों में बिहार में भारतीय जनता पार्टी बहुत बड़ी जीत दर्ज करने जा रही है।

गुजरात के इतिहास का सबसे बड़ा जनादेश देकर गुजरात की जनता ने अभूतपूर्व इतिहास बना दिया। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि लगभग विगत 25 वर्षों से भारतीय जनता पार्टी लगातार गुजरात में शासन कर रही है। कई राजनैतिक विशेषज्ञों ने भाँति-भाँति के राजनैतिक गणित और ज्ञान का प्रदर्शन करके यह जतलानें और बतलानें की कोशिश की थी की गुजरात में सरकार विरोधी लहर है। पर उनके सारे के सारे दुष्प्रचार धरे के धरे रह गये और गुजरात की जनता ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और श्री अमित शाह जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी को भरपूर जनादेश दिया। गुजरात के लोगों ने जाति,वर्ग,धर्म,समुदाय और हर तरह के विभाजन से ऊपर उठ कर भारतीय जनता पार्टी को वोट दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह बात एक बार फिर स्पष्ट हो गयी कि भारतीय जनता पार्टी गुजरात के हर घर, हर परिवार का हिस्सा है। गुजरात की जनता भारतीय जनता पार्टी के द्वारा किये गये विकास के कार्यों को सराहती थी,सराहती है और भविष्य में भी सराहती रहेगी, ऐसा विश्वास है।

कई तथाकथित बुद्धिजीवी हिमाचल प्रदेश के चुनाव के नतीजों के बारे में जरूरत से ज्यादा उत्साह का प्रदर्शन कर रहे हैं। जबकि वास्तविकता में जो हार-जीत का फैसला हुआ है उसमें अतंर मात्र एक प्रतिशत वोटों का ही है। हिमाचल प्रदेश में यह तथ्य सर्वविदित है कि वहां पर हर पाँच वर्ष में सरकारें बदली जाती हैं। लेकिन यहां पर यह बात ध्यान देना चाहिए कि हर बार जब भी सरकार वहां पर बदली है तो वोटों का अतंर हमेशा 5-6 प्रतिशत से ज्यादा ही रहा है। जबकि इस बार ऐसा नहीं हुआ।

एक नई पार्टी जो अपने 'आप' को परिर्वतन का मसीहा बताया करती थी, इस बार के चुनावों ने जनता की नजरों में उनकी क्या स्थिती है, साफ-साफ बता दी। हिमाचल में तो उनके लगभग पूरे प्रत्याशियों की जमानतें जप्त हो गयीं और गुजरात में उनके बड़े नेता मीडिया के सामने लिख-लिख कर के बड़े-बड़े दावे कर रहे थे, उसका क्या परिणाम हुआ यह सबके सामने है। इन चुनावों ने यह साफ-साफ बता दिया कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछले आठ वर्षों में देश ने एक बहुत बड़े सकारात्मक बदलाव का अनुभव किया है। यह बदलाव काम करने का भी है और कार्यशैली का भी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आने वाला समय देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हम सारे भारतवासियों को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास और सबका प्रयास इसी भावना पर तेजी से चलते हुए विकसित भारत के लिए काम करना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत सरकार नार्थ-ईस्ट के विकास के लिए पूरी प्रतिबद्धता से तेजी से काम कर रही है। विगत आठ वर्षों में नार्थ-ईस्ट के लिए अनेकों नई योजनाऐं शुरू की गयीं और कई सारी पूर्ण हो गयीं। इन योजनाओं से नार्थ-ईस्ट को बहुत लाभ हुआ है, और आगे भी बहुत लाभ होने वाला है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में नार्थ-ईस्ट के लिए पीएम डिवाइन योजना नार्थ-ईस्ट के विकास को निश्चित ही नई गति प्रदान करेगा। इसी तरह से 2014 के बाद जब से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी का शासन आया है भारत के पूर्वोत्तर के क्षेत्र में स्थायी शांति का माहौल बन गया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय बदलाव आया है। हेल्थ और वेलनेस का नया दृष्टिकोण भारतीय जनमानस में और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य का मूलमंत्र बन गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में सरकार आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से सबको स्वास्थ्य सेवा देना सुनिश्चित कर रही है। इसी के साथ-साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में योग पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है, इसीलिए योग की विश्वव्यापी स्वीकृति बनती जा रही है, जो हर भारतवासी के लिए गर्व का विषय है। योग के बहुत फायदे हैं, जिससे शरीर और मन के तत्वों का संतुलन होता है।

मध्यप्रदेश मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में निवेश का बड़ा केन्द्र बन कर उभर रहा है। मध्यप्रदेश सरकार प्रदेश में एमएसएमई की इकाई डालने पर सब्सिडी,सस्ती जमीन, पूँजी इत्यादी की सहायता दे रही है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश ने विकास के क्षेत्र में अनेकों कीर्तिमान स्थापित किये हैं। इन्ही के परिणाम स्वरूप आगामी विधानसभा के चुनावों में सरकार व संगठन के बेहतर समन्वय से निश्चित ही मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी प्रचण्ड बहुमत से एक बार फिर सरकार बनायेगी। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

भाजपा को मिला जनसमर्थन

नए भारत की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब

- **1 प्रतिशत वोट से पिछड़ने के बावजूद भाजपा हिमाचल के विकास के लिए 100 प्रतिशत प्रतिबद्ध रहेगी।**
- **लोगों ने भाजपा को वोट दिया क्योंकि भाजपा देश हित में कड़े फैसले ले सकती है।**
- **गुजरात के इतिहास में बीजेपी को सबसे बड़ा जनादेश देकर गुजरात की जनता ने एक नया इतिहास रचा है।**
- **भारत का भविष्य Fault Lines को बढ़ाकर नहीं, Fault Lines को गिराकर ही उज्ज्वल बनेगा।**

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जो परिश्रम किया है, उसकी खुशबू चारों तरफ अनुभव कर रहे हैं।

जहां भारतीय जनता पार्टी प्रत्यक्ष नहीं जीती, वहां भाजपा का वोट शेयर, भाजपा के प्रति स्नेह का साक्षी है। गुजरात, हिमाचल और दिल्ली की जनता का बहुत विनम्र भाव से आभार।

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं ने जो परिश्रम किया है, उसकी खुशबू चारों तरफ अनुभव कर रहे हैं। जहां भारतीय जनता पार्टी प्रत्यक्ष नहीं जीती, वहां भाजपा का वोट शेयर, भाजपा के प्रति स्नेह का साक्षी है। गुजरात, हिमाचल और दिल्ली की जनता का बहुत विनम्र भाव से आभार। भाजपा के प्रति ये स्नेह देश के अलग-अलग राज्यों के उपचुनावों में भी दिख रहा है। यूपी के रामपुर में भाजपा को जीत हासिल हुई है। बिहार के उपचुनावों में भाजपा का प्रदर्शन, आने वाले दिनों का स्पष्ट संकेत कर रहा है। चुनाव के दरम्यान एक बहुत बड़ी बात, जिसकी चर्चा होनी चाहिए थी, एक भी पोलिंग बूथ में रीपोलिंग करवाने की नौबत नहीं आई है। मतलब की सुख और शांति पूर्ण रूप से लोकतंत्र की भावनाओं को पूरी तरह लेटर एंड स्पीरिट में स्वीकार करते हुए मतदाताओं ने लोकतंत्र के इस उत्सव को बहुत बड़ी ताकत दी है।

आज हम जहां पहुंचे हैं, राज्यों में हो, स्थानीय स्वराज्य के निकायों में हो या केंद्र में हो, ये ऐसे ही नहीं पहुंचे हैं। पांच-पांच पीढ़ियां जनसंघ के जमाने से तपस्या करते हुए, परिवार के परिवार खपते रहे, तब जाकर ये दल बना है। तब जाकर हम यहां पहुंचे हैं। भाजपा के लिए लाखों समर्पित कार्यकर्ताओं ने अपना जीवन खपा दिया है।

व्यक्तिगत सुख, व्यक्तिगत आकांक्षाएं, व्यक्तिगत खुशी, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, व्यक्तिगत सफलता, इन सबको तिलांजलि देकर भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता, समाज और देश की सेवा करने में, समाज और देश को सशक्त करने में जुटा रहता है।

हिमाचल के चुनाव में 1 प्रतिशत से भी कम अंतर से हार-जीत का फैसला हुआ है। 1 परसेंट से भी कम। इतना कम अंतर से हिमाचल में कभी नतीजे नहीं आए हैं। हिमाचल में हर पांच वर्ष में सरकारें बदली हैं लेकिन हर बार जब बदलाव हुआ है कभी 5 प्रतिशत, कभी 6 प्रतिशत कभी 7 प्रतिशत जीतने वाले और हारने वाले के बीच में अंतर रहा है। इस बार 1 प्रतिशत से भी कम, इसका मतलब है कि जनता ने भी भारतीय जनता पार्टी को विजयी बनाने के लिए भरसक प्रयास किया है। हिमाचल में भाजपा भले ही 1 प्रतिशत से पीछे रह गई, लेकिन विकास के लिए प्रतिबद्धता शत-प्रतिशत रहेगी। हिमाचल से जुड़े हर विषय को पूरी मजबूती से उठाएंगे। और केंद्र सरकार के द्वारा हिमाचल की प्रगति, जो उसका हक है, उसमें भी कभी कमी नहीं आने देंगे।

किस प्रकार से दिल्ली कार्पोरेशन को विफल करने के इरादे से जनता के साथ धोखा किया गया। ये काम भाजपा नहीं करती। हिमाचल की प्रगति के लिए भी भारत सरकार की प्रतिबद्धता वैसी ही बनी रहेगी।

बीजेपी को मिला जन समर्थन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि ये ऐसे समय में आया है जब भारत अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है। ये दिखाता है कि आने वाले 25 साल सिर्फ और सिर्फ विकास की राजनीति के ही हैं। भाजपा को मिला जन-समर्थन, नए भारत की आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है। भाजपा को मिला जन-समर्थन, भारत के युवाओं की युवा सोच का प्रकटीकरण है। भाजपा को मिला जन-समर्थन, गरीब, दलित, वंचित, पिछड़े, शोषित, आदिवासियों के सशक्तिकरण के लिए है। लोगों ने भाजपा को वोट दिया क्योंकि भाजपा हर सुविधा को प्रत्येक गरीब, मध्यमवर्गीय परिवार तक जल्द से जल्द पहुंचाना चाहती है। लोगों ने भाजपा को वोट दिया क्योंकि भाजपा देश के हित में बड़े से बड़े और कड़े से कड़े फैसले लेने का दम रखती है। भाजपा का बढ़ता जनसमर्थन ये दिखाता है कि परिवारवाद और भ्रष्टाचार के खिलाफ जनआक्रोश लगातार बढ़ रहा है। और यह बात स्वस्थ लोकतंत्र के लिए एक शुभ संकेत है।

इस बार गुजरात ने तो कमाल ही कर दिया है। चुनावों के दौरान गुजरात के भाई-बहनों और युवाओं से कहा था कि इस बार नरेंद्र का रिकॉर्ड टूटना चाहिए। और वादा किया था कि भूपेंद्र, नरेंद्र का रिकॉर्ड तोड़े, इसलिए नरेंद्र जी-जान से मेहनत करेगा। और गुजरात की जनता ने तो रिकॉर्ड तोड़ने में भी रिकॉर्ड कर दिया। उसने गुजरात की स्थापना से लेकर अब तक सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। गुजरात के इतिहास का सबसे प्रचंड जनादेश भाजपा को देकर गुजरात के लोगों ने नया इतिहास बना दिया है। ढाई दशक से निरंतर सरकार में रहने के बावजूद, इस प्रकार का प्यार, अभूतपूर्व है, अदभुत है। लोगों ने जाति, वर्ग, समुदाय और हर तरह के विभाजन से ऊपर उठकर भाजपा को वोट दिया है। भारतीय जनता पार्टी गुजरात के हर घर का हिस्सा है, गुजरात के हर परिवार का हिस्सा है।

इस चुनाव में गुजरात में 1 करोड़ से भी ज्यादा ऐसे वोटर्स थे जिन्होंने मतदान किया, लेकिन ये वे मतदाता थे जिन्होंने कांग्रेस के कुशासन को, उसकी बुराइयों को देखा नहीं था, वे फ्रेश थे, उन्होंने सिर्फ भाजपा की ही सरकार को देखा था और युवाओं की तो प्रकृति होती है कि वो हमेशा सवाल पूछते हैं, जांचते हैं, परखते हैं, उसके बाद किसी फैसले पर पहुंचते हैं। युवा सिर्फ इसलिए किसी पार्टी को वोट नहीं करते क्योंकि वो दशकों से सत्ता में रही या फिर उस पार्टी के नेता किसी बड़े परिवार के हैं। युवा तभी वोट देते हैं जब उन्हें भरोसा होता है, जब उन्हें सरकार का काम प्रत्यक्ष नजर आता है। और इसलिए, युवाओं ने जब भाजपा को भारी संख्या में वोट दिया है, सीट से लेकर वोट तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं, तो इसके पीछे का संदेश बहुत स्पष्ट है। इसका मतलब है कि युवाओं ने काम को जांचा, परखा और उस पर भरोसा किया है। इसका मतलब ये है कि युवा भाजपा की विकास वाली राजनीति चाहते हैं। इसका मतलब है कि युवा ना तो जातिवाद के बहकावे में आते हैं, ना परिवारवाद के। युवाओं का दिल सिर्फ विजन और विकास से जीत सकते हैं, और भाजपा में विजन भी है और विकास के प्रति प्रतिबद्धता भी है।

जब महामारी के घोर संकट के बीच बिहार में चुनाव हुए थे, तो जनता ने भाजपा को भरपूर आशीर्वाद दिया। जब महामारी के संकट से बाहर निकलते हुए असम, यूपी, उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर एक के बाद एक चुनावों में जनता ने भारतीय जनता पार्टी को ही चुना और

आज जब भारत विकसित भारत के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आगे बढ़ रहा है, तो भी देश की जनता का भरोसा सिर्फ और सिर्फ भाजपा पर है। गुजरात के इस चुनाव में भाजपा का आव्हान था- विकसित गुजरात से विकसित भारत का निर्माण। गुजरात के नतीजों ने सिद्ध किया है कि सामान्य मानवी में विकसित भारत के लिए कितनी प्रबल आकांक्षा है। संदेश साफ है। जब देश के सामने कोई चुनौती होती है, तो देश की जनता का भरोसा भाजपा पर होता है। जब देश पर कोई संकट आता है, तो देश की जनता का भरोसा भाजपा पर होता है। जब देश बड़े लक्ष्य तय करता है, तो उनकी प्राप्ति के लिए देशवासियों का भरोसा, भाजपा पर होता है। जब देश की आकांक्षाएं चरम पर होती हैं, तो भी उनकी पूर्ति के लिए देश की जनता का भरोसा भाजपा पर ही होता है।

आज हम जहां पहुंचे हैं, राज्यों में हो, स्थानीय स्वराज्य के निकायों में हो या केंद्र में हो, ये ऐसे ही नहीं पहुंचे हैं। पांच-पांच पीढ़ियां जनसंघ के जमाने से तपस्या करते हुए, परिवार के परिवार खपते रहे, तब जाकर ये दल बना है। तब जाकर हम यहां पहुंचे हैं। भाजपा के लिए लाखों समर्पित कार्यकर्ताओं ने अपना जीवन खपा दिया है। व्यक्तिगत सुख, व्यक्तिगत आकांक्षाएं, व्यक्तिगत खुशी, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, व्यक्तिगत सफलता, इन सबको तिलांजलि देकर भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता, समाज और देश की सेवा करने में, समाज और देश को सशक्त करने में जुटा रहता है। विचार पर भी बल देते हैं और व्यवस्था को भी सबल बनाते रहते हैं। भाजपा अपने कार्यकर्ताओं की अथाह संगठन शक्ति पर भरोसा करके ही अपनी रणनीति बनाती है और सफल भी होती है। उतार-चढ़ाव भाजपा के राजनीतिक जीवन में भी आए हैं लेकिन आदर्शों और मूल्यों पर अडिग रहकर दिखाया है।

पिछले 8 वर्षों में देश में एक और बहुत बड़ा बदलाव अनुभव किया गया है। ये बदलाव कार्य का भी है, कार्यशैली का भी है। भाजपा की सरकारें भी कार्य को छोटा नहीं समझती। हर काम बड़े लक्ष्यों की प्राप्ति का माध्यम बनता है। इसलिए भाजपा की सरकारों ने गरीबों के लिए पक्के घर, शौचालय, गैस कनेक्शन, बिजली कनेक्शन, नल से जल, बैंक में खाते, मुफ्त इलाज, मुफ्त भोजन, इंटरनेट, ऐसी बेसिक सुविधाओं पर फोकस किया है। पहले की राजनीति में ये बहुत फैंसी विकास नहीं माना जाता था। पहले की राजनीति में इसे बड़े काम के तौर पर देखा भी नहीं जाता था। इसलिए आज जो भी सरकारी लाभ है वो हर व्यक्ति, हर क्षेत्र, हर वर्ग, जो उसका हकदार है, उस तक तेजी से पहुंचने के लिए ईमानदारी से प्रयास किया जाता है। पूरा का पूरा पहुंचे इसके लिए टेक्नोलॉजी का भी भरपूर उपयोग किया जाता है। किस क्षेत्र, किस वर्ग, किस समुदाय में कितने वोट हैं, इस आधार पर न हम देश चलाते हैं, न राज चलाते हैं, न सरकारें चलाते हैं। और आज इस बदली हुई राजनीति के सकारात्मक नतीजे भी देखने को मिल रहे हैं। आज बड़े-बड़े एक्सपर्ट्स भी ये कह रहे हैं कि भारत में गरीबी कम हो रही है।

देश ने पिछले आठ वर्षों में गरीब को सशक्त करने के साथ ही, गरीब तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचाने के साथ ही, आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर पर भी फोकस किया है। रोड हो, रेल हो, एयरपोर्ट हो, टनल्स हों, सोलर पावर प्लांट हो, स्टेडियम हो, ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क हो, जो भी हो, सबसे उत्तम हो, सबसे श्रेष्ठ हो, ये आकांक्षा लेकर आज भारत चल रहा है। हम सिर्फ घोषणा करने के लिए घोषणा नहीं करते। हम राष्ट्र निर्माण के व्यापक मिशन के लिए निकले हुए लोग हैं। इसलिए सिर्फ 5 वर्ष के राजनीतिक नफा-नुकसान को देखते हुए हम कोई भी घोषणा नहीं करते। हमारी हर घोषणा के पीछे एक दूरगामी लक्ष्य होता है, एक रोडमैप होता है। ये बात स्पष्ट है कि देश आज शॉर्टकट नहीं चाहता।

देश का मतदाता आज इतना जागरूक है कि क्या उसके हित में है, क्या उसके अहित में है, वो अच्छी तरह जानता है। देश का वोटर जानता है कि शॉर्टकट की राजनीति का कितना बड़ा नुकसान, देश को उठाना पड़ेगा। आज देश में कोई संशय नहीं कि देश समृद्ध होगा, तो सबकी समृद्धि तय है। हमारे पूर्वजों के पास अनुभव का अगाध ज्ञान था। और अनुभव के निचोड़ से कहावतें बनती थी। और हमारे यहां, हमारे पूर्वजों ने विरासत में दी हुई एक कहावत है- आमदनी अठन्नी और खर्चा रूपैय्या। अगर ये वाला हिसाब रहेगा तो क्या स्थिति होगी ये हम दुनिया में, हमारे अड़ोस-पड़ोस में आज भलीभांति देख रहे हैं। और इसलिए आज देश बहुत सतर्क है। देश के हर राजनीतिक दल को ये याद रखना होगा कि चुनावी हथकंडों से किसी का भला नहीं हो सकता।

जनादेश में एक और संदेश है। समाज के बीच दूरियां बढ़ाकर, राष्ट्र के सामने नई चुनौतियां खड़ी करके जो राजनीतिक दल तात्कालिक लाभ लेने की फिराक में रहते हैं, उन्हें देश की जनता, देश की युवा पीढ़ी देख भी रही है और समझ भी रही है। भारत का भविष्य Fault Lines को बढ़ा करके नहीं, Fault Lines को गिराकर ही उज्ज्वल बनेगा। कभी भाषा की दीवार, कभी रहन-सहन, कभी क्षेत्र, कभी खान-पान, कभी ये वर्ग, कभी वो वर्ग, लड़ने के लिए तो सैकड़ों वजहें हो सकती हैं लेकिन जुड़ने के लिए एक वजह ही काफी है- ये मातृभूमि, ये धरती, ये देश, ये हमारा भारत। जीने के लिए और मरने के लिए इससे बड़ी वजह कोई और हो नहीं सकती। इसलिए हमें देश प्रथम, India First की भावना के साथ आगे बढ़ना है।

खुशी है कि आज भारत के गांव हो या शहर, गरीब हो या मिडिल क्लास, किसान हो या श्रमिक, सभी की पहली पसंद भाजपा है। भाजपा को गुजरात के आदिवासी क्षेत्रों का भी अभूतपूर्व आशीर्वाद मिला है। एससी-एसटी की गुजरात में करीब 40 सीटें आरक्षित है। 40 में 34 सीटें, थंपिंग मेजोरिटी से भारतीय जनता पार्टी जीती है। आज आदिवासी भाजपा को अपनी आवाज मान रहे हैं, आज भाजपा को आदिवासी समुदाय का जबरदस्त समर्थन मिल रहा है। इस बदलाव को पूरे देश में महसूस किया जा रहा है। ऐसा इसलिए हो रहा है, क्योंकि दशकों तक जिन आदिवासियों की आकांक्षाओं को नजरअंदाज किया गया, वो अब देख रहे हैं कि भाजपा लगातार उनकी उम्मीदें पूरी करने में जुटी है। ये भाजपा ही है जिसके प्रयासों से देश को पहली आदिवासी राष्ट्रपति मिली है। ये भाजपा ही है जिसने आदिवासी कल्याण के लिए बजट बढ़ाया और आदिवासी क्षेत्रों में विकास को रफ्तार दी। भाजपा सरकार ने ऐसे अनेक कदम उठाए हैं जिससे आदिवासी समुदाय के लोगों को आर्थिक रुप से मजबूत बनाया जा रहा है। देशभर में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के म्यूजियम बनाकर भाजपा आजादी के उन वीर योद्धाओं को सम्मान दे रही है। भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन को भाजपा सरकार में ही जनजातीय गौरव दिवस घोषित किया गया है। हमारे इन प्रयासों ने आदिवासी युवाओं को, उनके स्वाभिमान को ऊंचा किया है। आज भाजपा आदिवासियों को सशक्त करने के लिए हर संभव प्रयास कर रही है।

हर चुनाव नतीजों के बाद ये चर्चा भी बहुत होती है कि देश की माताएं-बहनें-बेटियां, भाजपा पर इतना आशीर्वाद क्यों बरसाती हैं? अगर कोई ईमानदारी से आत्मचिंतन करे तो ये पाएगा कि आजादी के बाद से, पहली बार आज देश में एक ऐसी सरकार है, जो महिलाओं की समस्याएं, उनकी चुनौतियां, उनकी आवश्यकताएं, उनकी आकांक्षाएं उसे समझने का लगातार प्रयास कर रही है, और उसके अनुसार काम की योजना बनाती है। गांव देहात से लेकर शहर तक, घरेलू कार्य में व्यस्त महिला से लेकर स्वरोजगार करने वालीं या किसी रोजगार से जुड़ी महिलाओं के लिए जितना भाजपा सरकार ने किया है, उतना पहले किसी भी सरकार ने नहीं किया। महिलाओं

के लिए पहले की सरकारों के 70 साल के कार्यों की तुलना में, भाजपा सरकार के 7-8 साल के कार्य कहीं ज्यादा रहे हैं और इसलिए, आज जब भी चुनाव होते हैं तो देश की माताएं-बहनें बेटियां, कमल के निशान का सिर्फ बटन ही नहीं दबातीं, उनके हाथों में एक आशीष का भाव होता है, आशीर्वाद का भाव होता है और जब वो ऊंगली कमल के बटन पर रखती हैं तो हम जैसे लाखों कार्यकर्ताओं के सर पे विजय तिलक भी लगा देती है। महिलाओं के मुद्दे भाजपा के लिए चुनावी मुद्दे नहीं हैं बल्कि भाजपा की हर योजना का वो प्राणतत्व है। महिलाओं का जीवन आसान बनाना हो, महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा रोजगार के, स्वरोजगार के अवसर मुहैया कराना हो, ये भाजपा का कमिटमेंट है। हमें महिला सशक्तिकरण के लिए इतना कुछ करने का मौका देश की जनता ने दिया है।

आने वाला समय देश के लिए, हम सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। सबका साथ-सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास, इस भावना पर आगे बढ़ते हुए हमें विकसित भारत के लिए काम करना है। हमें मिलकर एक दूसरे के साथ काम करना है। आइए, नागरिक के रूप में हम विकसित भारत के संकल्प के साथ जुड़ें, विकसित भारत के इस अभियान से जुड़ें।

फिर एक बार देशभर के लाखों कार्यकर्ताओं को पांच-पांच पीढ़ी की तपस्या को आगे बढ़ाने के लिए हृदय से धन्यवाद। निरंतर समर्थन हमें सात्विक भाव से, सेवा भाव से, समर्पण भाव से कार्य करने की शक्ति देता है। जब जनता-जनार्दन का आर्शीवाद मिलता है तो अधिक परिश्रम करने की प्रेरणा जगती है। अधिक पुरुषार्थ करने का संकल्प जगता है। और संकल्पों को सिद्ध करने के लिए जीवन खपा देकर सिद्धि तक पहुंचाने के लिए लगे रहते हैं। क्योंकि जनता-जनार्दन, इसे ईश्वर का रूप मानते हैं। और यही सामर्थ्य, यही शक्ति एक सेवक के भाव से, सेवा भाव से समर्पण की अप्रतिम राह को पकड़ते हुए चलते रहना-चलते रहना-चलते रहना।

चरैवेति-चरैवेति-चरैवेति।

इसी मंत्र को लेकर के हम चल रहे हैं।

इस चुनाव में अब बहुत लोगों को जानने-पहचानने का भी अवसर मिल चुका है। पिछले कुछ चुनावों का एक बड़े कैनवास पर एनालिसिस करना चाहिए कि जो अपने आपको न्यूट्रल कहते हैं। जिनका न्यूट्रल होना जरूरी होता है, वो कहां खड़े होते हैं। कब कैसे रंग बदलते हैं और कैसे-कैसे खेल खेलते हैं। वो अब देश को जान लेना बहुत जरूरी है। बहुत जरूरी है। उत्तराखंड का इतना बड़ा चुनाव हुआ। कितनी जमानतें जब्त हुई, किसकी हुई, कोई चर्चा नहीं। हिमाचल में इतना बड़ा चुनाव हुआ, कितने लोगों की जमानत जब्त हुई, कितने लोगों का बुरा हाल हुआ, कोई चर्चा नहीं। उन लोगों को भी जानना चाहिए, पहचानना चाहिए। कि ये भी ठेकेदार है। राजनीति में सेवा भाव से एक मूक सेवक की तरह काम करना वो जैसे डिक्वालिफिकेशन माना जा रहा है। क्या नौबत आई है। ये कैसे नए मापदंड लगाए गए हैं। अब देखिए, गुजरात के सीएम भूपेंद्र भाई पटेल करीब-करीब दो लाख वोटों से जीते हैं। असेंबली सीट पे...लोकसभा में भी कोई दो लाख से जीते तो बड़ी बात मानी जाती है। असेंबली में करीब-करीब दो लाख वोटों से जीतना लेकिन ठेकेदारों का, उनका तराजू कुछ और है और इसीलिए, हमें निरंतर... विपरीत... इन जुल्मों के बीच में बढ़ना है। हमें अपनी सहनशक्ति को बढ़ाना है।

हमें अपनी समझ शक्ति को बढ़ाना है। और हमें हमारे सेवाभाव का विस्तार भी करना है और हमारे सेवाभाव की गहराई भी बढ़ानी है। और सेवा भाव से ही जीतना है। क्योंकि जो जहां बैठा है वह बदलने वाला नहीं है। उसका इरादा नेक नहीं है। और इसीलिए हमारी ये कसौटी है हर पल...हमारी कसौटी हैं....खास करके 2002 के बाद विशेष रूप से। शायद जीवन का कोई पल ऐसा नहीं गया। कोई कदम ऐसा नहीं रहा, जिसकी धज्जियां न उड़ा दी गई हो। जिसकी आलोचना नहीं, धज्जियां उड़ा देना, बाल नोच लेना। लेकिन इसका बहुत फायदा हुआ। क्योंकि हमेशा सतर्क रहा। हर इस तरह की बुरी प्रवृत्ति से कुछ न कुछ सकारात्मक खोजता रहा। बदलाव लाता रहा, सीखता गया, बढ़ता गया। और जिन लोगों को चारों तरफ से उछालने वाले लोग रहते हैं, कंधे पर बिठाकर नाचने वाले लोग रहते हैं। उनमें सुधरने की भी संभावना नहीं रहती है। वो तो जो है वहां से भी बिगड़ेंगे। और इसलिए आलोचनाओं ने भी बहुत सिखाया है। हर आलोचना में से हमें काम की चीज खोजते रहना है। अपनी शक्ति को बढ़ाते रहना है। और कठोर से कठोर झूठे आरोपों को सहने का सामर्थ्य भी बढ़ाना होगा। क्योंकि अब जुल्म बढ़ने वाला है।

अब मानकर चलिए, मुझ पर भी बढ़ने वाला है, आप सब पर भी बढ़ने वाला है। क्योंकि ये सहन नहीं कर पाएंगे, ये पचा नहीं पाएंगे। और उसका जवाब... उसका जवाब यही है- **हमें अपनी सहन शक्ति बढ़ाना है। हमें अपनी समझदारी का विस्तार करना है।** हमें अधिक से अधिक लोगों को समावेश करने की दिशा में अपने हाथ चौड़ा करके लोगों को स्वीकारना है, स्वागत करना है।

सकारात्मक रास्ता, सेवाभाव का रास्ता, समर्पण का रास्ता, यही मार्ग हमने चुना है। वही मार्ग हमको यहां पहुंचाया है। और आगे भी हमारे पुरुषार्थ से, परिश्रम से देश की आकांक्षाओं वाला ये देश भी बनेगा। 2047 जब हिंदुस्तान आजादी के 100 साल मनाएगा। विकसित भारत हमारे नौजवानों के हाथ में हम दे के जाएंगे। ▪

मोदी के प्रभाव से
विभिषिका टली

अमरीका की खुफिया एजेंसी- सी.आई.ए. के निदेशक बिल बर्न्स ने कहा है कि यूक्रेन में परमाणु हथियारों का इस्तेमाल रोकने में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर अपने प्रभाव का उपयोग किया। श्री बर्न्स ने कहा कि परमाणु हथियारों पर प्रधानमंत्री मोदी के विचारों का रूसी नेतृत्व पर प्रभाव पड़ा और यूक्रेन युद्ध के संदर्भ में एक वैश्विक आपदा टल गई। भारत ने यूक्रेन में परमाणु हथियारों के इस्तेमाल के खिलाफ बार-बार चेतावनी दी है और कहा है कि इस संघर्ष को संवाद और कूटनीति से खत्म किया जाना चाहिए। श्री मोदी रूसी राष्ट्रपति पुतिन से इस संघर्ष को खत्म करने के लिये बार-बार कहते आ रहे हैं। सी.आई.ए. प्रमुख की यह टिप्पणी इस मायने में महत्वपूर्ण है कि श्री पुतिन ने पहले परमाणु हमले की धमकी दी थी। श्री पुतिन ने कहा था कि रूस युद्ध में हर उपलब्ध तरीका अपनाएगा। ▪

जनता को मोदीजी के विकासवाद और गरीब कल्याण में विश्वास

गुजरात, हिमाचल और दिल्ली के निष्ठावान, समर्पित और देवतुल्य कार्यकर्ताओं का अभिनंदन, जिन्होंने श्रम और समर्पण की पराकाष्ठा तक कार्य करके इस लोकतंत्र के महोत्सव में अपना योगदान दिया और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन वाली सरकार की नीतियों और विजन को आम जन तक पहुंचाया। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने आजादी के बाद के अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। इस प्रचंड बहुमत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि गुजरात की जनता विकासवाद की राजनीति और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गरीब कल्याण नीतियों में विश्वास रखती है। भाजपा को इस बार के चुनाव में गुजरात में 52.5 प्रतिशत वोट और 182 में से 156 सीटें मिली हैं। गुजरात में आज तक किसी भी पार्टी को इतने वोट प्रतिशत और इतनी सीटें नहीं मिल पाई थी।

पिछली बार गुजरात विधान सभा में कांग्रेस का वोट शेयर 41.4 प्रतिशत था जो इस बार घट कर 27.3 प्रतिशत पर आ गया है। उसकी सीटें भी 77 से घट कर महज 17 रह गई है। यह कांग्रेस की गैर-जिम्मेदाराना विपक्षी संस्कृति और उनकी नकारात्मक और वंशवाद एवं परिवारवाद की राजनीति की हार है। यह गुजरात में कांग्रेस की अब तक की सबसे बड़ी हार है।

एक और पार्टी यहाँ चुनाव लड़ने के लिए आई थी। उसका पूरा फोकस गुजरात के अपमान पर केन्द्रित था। उसके नेता कागज लेकर घूमते थे कि गुजरात में उसकी सरकार आ रही है। वो नेता लिख कर दावा करते थे कि आम आदमी पार्टी को इतनी सीटें आएगी। वे तो 'कट्टर ईमानदारी' का बोर्ड लेकर चलते थे। आजाद भारत में ऐसा कोई नेता नहीं हुआ कि जो जनता के सामने बोर्ड लेकर चलता हो कि मैं कट्टर ईमानदार हूँ। जिसको बोर्ड लेकर ये बताना पड़े कि वह कट्टर ईमानदार है, इससे यह पता चलता है कि वह कितना 'कट्टर बेईमान' है। उनके तमाम बड़े नेता गुजरात में चुनाव हार गए हैं। ये बताता है कि गुजरात की जनता झूठे वादों और मुफ्त की राजनीति करने वालों में विश्वास नहीं रखती।

गुजरात, हिमाचल और दिल्ली के निष्ठावान, समर्पित और देवतुल्य कार्यकर्ताओं का अभिनंदन, जिन्होंने श्रम और समर्पण की पराकाष्ठा तक कार्य करके इस लोकतंत्र के महोत्सव में अपना योगदान दिया और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की डबल इंजन वाली सरकार की नीतियों और विजन को आम जन तक पहुंचाया।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने आजादी के बाद के अब तक के सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं।

हिमाचल प्रदेश की देवतुल्य जनता का जनादेश स्वीकार है। लोकतंत्र में जनता का जनादेश सर्वोपरि होता है।

भले ही हमें हिमाचल में अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पाया लेकिन हिमाचल प्रदेश में रिवाज भी बदला है। कांग्रेस और भाजपा के वोट शेयर का अंतर 1 प्रतिशत से भी कम रहा। भाजपा एक सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभाते हुए हिमाचल के विकास और जनता की भलाई के लिए काम करेगी। हिमाचल प्रदेश में मजबूत होकर उभरेंगे।

यहाँ भी एक पार्टी चुनाव लड़ने आई थी। उसने हिमाचल में जीत के तमाम दावे भी किये थे लेकिन पहले ही कह दिया था कि इस बार उस पार्टी के सभी उम्मीदवारों के जमानत जब्त होगी और परिणाम भी यही बताते हैं। हिमाचल

में आम आदमी पार्टी की सभी सीटों पर जमानत जब्त हो गई। 25 सीटों पर तो आम आदमी पार्टी को NOTA से भी कम वोट आया। ये दर्शाता है कि पंजाब और दिल्ली से सटे रहने के बावजूद हिमाचल की जनता ने आम आदमी पार्टी और उसके तमाम नेताओं को सिरे से खारिज कर दिया है।

दिल्ली के भाजपा कार्यकर्ताओं ने अथक परिश्रम किया और शानदार तरीके से एमसीडी का चुनाव लड़ा। दिल्ली की आम आदमी पार्टी सरकार ने एमसीडी को बजट के 33,000 करोड़ रुपये, स्वास्थ्य पर खर्च के लिए 720 करोड़ रुपये और शिक्षा पर खर्च के लिए 450 करोड़ रुपये नहीं दिए और एमसीडी के काम को विफल करने की साजिश की। इसके बाद जब एमसीडी ने फंड जुटाने के लिए Municipal Bonds की अनुमति माँगी तो आम आदमी पार्टी सरकार ने इसकी भी अनुमति नहीं दी। इसके बावजूद भाजपा ने एमसीडी चुनाव में शानदार प्रदर्शन किया।

दिल्ली के लोगों के अधिकारों का जितना हनन आम आदमी पार्टी की सरकार ने किया, उतना किसी और ने नहीं किया। एक तो केजरीवाल सरकार ने पैसा नहीं दिया, ऊपर से Municipal Bonds लाकर भी आर्थिक स्थिति सुधारने के प्रयासों को दिल्ली सरकार ने सिरे नहीं चढ़ने दिया। इसके बावजूद कार्यकर्ताओं ने शानदार परिश्रम किया। एमसीडी में भी सकारात्मक विपक्ष की भूमिका निभायेंगे।

गुजरात और हिमाचल प्रदेश के साथ-साथ कुछ विधान सभा सीटों पर उपचुनाव भी हुए थे। बिहार में कढ़नी विधान सभा सीट पर भी भाजपा ने जोरदार जीत दर्ज की है। नीतीश कुमार के आरजेडी के तथाकथित महागठबंधन में शामिल होने के बाद इस महागठबंधन को भाजपा ने लगातार दूसरी बार हराया है। जनादेश गठबंधन के 'Mathematics' से नहीं बल्कि जनता के साथ पार्टी की 'chemistry' के आधार पर मिलता है। ये जीत दिखाती है कि बिहार की जनता भाजपा और आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के साथ है। ये बिहार में आने वाले दिनों के संकेत हैं।

उत्तर प्रदेश के रामपुर विधान सभा सीट पर हुए उपचुनाव में भी भारतीय जनता पार्टी ने सपा को करारी शिकस्त देते हुए जीत हासिल की है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी जितनी मेहनत करते हैं, वह सबके लिए अनुकरणीय है। आदरणीय प्रधानमंत्री जी दिन-रात जनता के कल्याण के लिए कार्य करते रहते हैं। भाजपा के करोड़ों कार्यकर्ता आपके बताये मार्ग पर चलेंगे और देश के पुनर्निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। ▪

भारत एक विशाल निर्यात अर्थव्यवस्था बनेगा

गूगल के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुंदर पिचाई ने कहा है कि भारत एक बड़ी निर्यात अर्थव्यवस्था बनेगा और देश को खुले इंटरनेट सम्पर्क का लाभ मिलेगा। नई दिल्ली में भारत के लिए गूगल कार्यक्रम में श्री पिचाई ने कहा कि देश को नागरिकों के हितों की सुरक्षा और कम्पनियों को नवाचार की सुविधा देने के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि गूगल अब भारत में स्टार्टअप पर ध्यान केन्द्रित कर रहा है। श्री पिचाई ने बताया कि स्टार्टअप के लिए दिए जाने वाले तीस करोड़ अमरीकी डॉलर का एक चौथाई हिस्सा महिलाओं के नेतृत्व वाले संस्थानों में निवेश किया जाएगा।श्री पिचाई ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की और कहा कि उनके नेतृत्व में तीव्र गति से प्रौद्योगिकी संबंधी परिवर्तन को देखना बेहद प्रेरणादायक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह आवश्यक है कि विश्व में मिलजुल कर कामकाज जारी रहे, ताकि प्रौद्योगिकी का लाभ मानवता की खुशहाली और सतत विकास के लिए मिल सके। ▪

मध्य प्रदेश में भी चलेगी गुजरात जैसी आंधी: विष्णुदत्त शर्मा

गुजरात विधानसभा के चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज करके रिकॉर्ड बनाया है। यह जीत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार की गुड गवर्नेंस, केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह और राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा की कुशल रणनीति व सभी कार्यकर्ताओं के परिश्रम का परिणाम है। पूरा विश्वास है कि गुजरात जैसी आंधी 2023 के विधानसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में भी चलेगी और हम प्रचंड बहुमत से विजयी होंगे।

यह प्रधानमंत्री मोदी जी के प्रति जनता का अथाह विश्वास है

गुजरात के विधानसभा चुनाव परिणाम देश की चुनावी राजनीति के इतिहास में स्वर्णिम अध्याय बन गए हैं। ऐसी प्रचंड जीत गुजरात में पहले किसी दल की नहीं हुई है। यह जनता का प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति अथाह विश्वास ही है, जो चुनाव परिणामों के रूप में दिखाई दे रहा है। केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह को राजनीति का चाणक्य कहा जाता है। यह उनकी कुशल रणनीति का ही परिणाम है कि गुजरात में भारतीय जनता पार्टी ने इतनी विशाल जीत हासिल की है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आशीर्वाद, केन्द्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के मार्गदर्शन और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा के नेतृत्व में भाजपा को यह ऐतिहासिक जीत मिली है। मध्यप्रदेश में हमारे पास आदर्श संगठन और समर्पित कार्यकर्ता हैं। वहीं मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की सरकार ने गरीब कल्याण और विकास के जो काम किए हैं, उनके आधार पर पूर्ण विश्वास है, कि आने वाले विधानसभा चुनाव में प्रदेश में भी पार्टी गुजरात जैसी जीत हासिल करेगी। ▪

गुजरात ने रिकॉर्ड ध्वस्त किए-अमित शाह

मैं महान जनता सहित सभी भाजपा कार्यकर्ताओं का खूब-खूब अभिनंदन करता हूँ। 2022 की गुजरात विधानसभा के चुनाव ने सारे रिकॉर्ड ध्वस्त किये हैं। इसका श्रेय आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और उनके नेतृत्व में हमारे प्रदेश अध्यक्ष श्री सी आर पाटिल जी की अध्यक्षता एवं मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र भाई पटेल जी की कार्यपद्धति को जाता है। उनके नेतृत्व में पेज प्रमुख से लेकर प्रदेश अध्यक्ष तक हमारे सभी पार्टी पदाधिकारी और हमारे एक-एक कार्यकर्ताओं ने इस भव्य जीत के लिए परिश्रम की पराकाष्ठा की है।

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की लोकप्रियता तो स्वाभाविक ही है। गुजरात की जनता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी को दिल से चाहती है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी आजादी के बाद सबसे लोकप्रिय प्रधानमंत्री हैं और विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। गुजरात की महान जनता का उन पर अटूट विश्वास है। लोक सभा में दोनों बार गुजरात की महान जनता ने राज्य की सभी 26 की 26 सीटें भाजपा की झोली में डाल कर आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में अपना अटूट विश्वास प्रकट किया है। यही विश्वास प्रदेश अध्यक्ष श्री सी आर पाटिल जी की रणनीति और श्री भूपेंद्र पटेल जी की सरकार के कामकाज के बल पर भाजपा की प्रचंड जीत में परिवर्तित हुआ है। भाजपा के कार्यकर्ताओं ने अपने परिश्रम के बल पर विजय की ऐसी लकीर खींच दी है कि जिसे पार करने में बहुत पुरुषार्थ करना पड़ेगा।

जब इस बार गुजरात विधान सभा चुनाव का बिगुल बजा तो बहुत तरह की दुविधा थी, शंकाएं थी कि भाजपा को कैसी विजय मिलेगी लेकिन जैसे ही आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने गुजरात में प्रवास प्रारम्भ किया तो भाजपा के पक्ष में एक प्रचंड सुनामी आ गई और हमारे प्रदेश अध्यक्ष श्री सी आर पाटिल जी के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने विश्वास की इस सुनामी को मतों में परिवर्तित कर दिया। पेज प्रमुखों, बूथ समिति के सम्मेलन, उनका प्रशिक्षण - सब के मन में था कि पाटिल जी की यह परिकल्पना कितनी चरितार्थ होगी, लेकिन चुनाव परिणाम आने के बाद सभी को इसका जवाब मिल गया है। 27 वर्षों के विश्वास के बाद भी आज गुजरात की जनता ने भारतीय जनता पार्टी के प्रति जो विश्वास और प्रेम जताया है, उसके लिए बहुत-बहुत बधाई।

आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में और भाजपा के शासनकाल में हम विकास को गुजरात के कोने-कोने और घर-घर में पहुंचाने में कामयाब हुए हैं। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री सी आर पाटिल ने पेज कमेटी, पेज अध्यक्ष की बैठकें आयोजित कर उन्हें प्रशिक्षित किया और उन्हें सक्रिय किया जिससे एक बहुत ही संगठित ढांचा तैयार हुआ और परिणाम आज हमारे सामने हैं। 1990 में और फिर 1998 से आज तक 2022 तक गुजराती जनता ने लगातार भाजपा पर भरोसा जताया है और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी के नेतृत्व में आदिवासी, जंगल, सागर और कच्छ सहित दूर-दराज के क्षेत्रों में भाजपा ने विकास का नेतृत्व किया है। गुजरात में भारतीय जनता पार्टी की सरकार एक पारदर्शी और प्रमाणिक सरकार रही है। हमारे विरोधी भी हम पर भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं लगा सकते हैं। श्री भूपेंद्र भाई पटेल जी ने जिस तरह चुपचाप नेपथ्य में रह कर विकास को जन-जन तक पहुंचाया है, वह एक अदभुत उदाहरण है।

आजादी के बाद ऐसा पहली बार हुआ है कि सूरत शहर और सूरत ग्रामीण की सभी सीटें जनता ने भाजपा की झोली में डाल दी है। आजादी के बाद पहली बार सूरत और ग्रामीण क्षेत्र की सभी सीटें बीजेपी को देने के लिए सूरत शहर और ग्रामीण क्षेत्र के लोगों और कार्यकर्ताओं को दिल से बधाई। इस चुनाव में गुजरात की जनता आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और भाजपा को पुनः और अधिक आशीर्वाद देकर सेवा का अवसर देने के लिए तैयार थी और उसमें सोने में सुगंध सा

आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में और भाजपा के शासनकाल में हम विकास को गुजरात के कोने-कोने और घर-घर में पहुंचाने में कामयाब हुए हैं।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री सी आर पाटिल ने पेज कमेटी, पेज अध्यक्ष की बैठकें आयोजित कर उन्हें प्रशिक्षित किया और उन्हें सक्रिय किया जिससे एक बहुत ही संगठित ढांचा तैयार हुआ और परिणाम आज हमारे सामने हैं।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने परिश्रम की पराकाष्ठा की, पेज समिति के सदस्यों ने हर घर संपर्क किया और प्रत्येक नागरिक को भाजपा की कार्यशैली और कार्य पद्धति से अवगत कराया। गुजरात में भाजपा के कार्यों विशेषकर शांति, विकास, सुरक्षा, 24 घंटे बिजली, हर घर पानी, सांप्रदायिक सदभाव और शिक्षा के नए आयामों - सब को गुजरात की जनता ने हृदय से स्वीकार किया और हमें आशीर्वाद दिया।

काम किया सी आर पाटिल जी की पेज प्रमुखों को एक्टिव करने की परिकल्पना ने। इस चुनाव में गुजरात में नई-नई पार्टी भी आई, कई तरह के दावे किये गए, सौगंध भी खाई गई, कई गारंटी भी बांटे गए, विज्ञापन दिए गए लेकिन जब परिणाम आया तो उनका सूपड़ा साफ हो गया। गुजरात की जनता ने पूरे देश को यह संदेश दिया है कि गुजरात भाजपा का गढ़ था, गढ़ है और हमेशा गढ़ रहेगा।

यदि गुजरात विधानसभा चुनाव में हमारे उम्मीदवारों की जीत का अंतर देखें तो हमारे कई उम्मीदवारों ने एक लाख, 75 हजार, 50 हजार, 40 हजार के बड़े अंतर से जीत दर्ज की है। एक लाख से जीत का अंतर तो लोक सभा चुनाव में भी बड़ा मायने रखता है लेकिन विधानसभा चुनाव में भी हमारे कई प्रत्याशियों ने एक लाख से अधिक वोटों से जीत दर्ज की। भाजपा कार्यकर्ताओं ने परिश्रम की पराकाष्ठा की, पेज समिति के सदस्यों ने हर घर संपर्क किया और प्रत्येक नागरिक को भाजपा की कार्यशैली और कार्य पद्धति से अवगत कराया। गुजरात में भाजपा के कार्यों विशेषकर शांति, विकास, सुरक्षा, 24 घंटे बिजली, हर घर पानी, सांप्रदायिक सदभाव और शिक्षा के नए आयामों - सब को गुजरात की जनता ने हृदय से स्वीकार किया और हमें आशीर्वाद दिया।

गुजरात विधानसभा चुनाव परिणाम से देशभर के भाजपा के कार्यकर्ताओं में नया जोश, नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार हुआ है। भाजपा की यह भव्य विजय देश के राजनीतिक चित्र को परिवर्तित करने वाली विजय है। गुजरात में भाजपा की इस शानदार जीत का सकारात्मक असर देश में आने वाले विधान सभाओं के चुनाव और 2024 के लोक सभा चुनाव पर पड़ने वाला है। गुजरात विधानसभा चुनाव के परिणामों ने भाजपा के राजनीतिक आत्मविश्वास को और मजबूत किया है। ▪

भारत, मजबूत अर्थव्यवस्था और समस्याओं का हल करने वाला- डॉ. एस. जयशंकर

भारत को मजबूत अर्थव्यवस्था वाले स्वतंत्र विचारधारा वाले देश के रूप में देखा जा रहा है। विश्व समुदाय को भारत से बड़ी आशाएं हैं जो समस्याओं का समाधान कर सकता है। भारत कूटनीति और विदेश नीति में दृढ़ता बनाए रखने का पक्षधर है। मूल मुद्दों पर कोई समझौता नहीं किया जा सकता। आतंकवाद के बूते भारत को बातचीत के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। भारत अपने पड़ोसियों से अच्छे संबंध चाहता है लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि आतंकवाद को उचित ठहराया जाए।

चीन के साथ हमारे संबंध सामान्य नहीं हैं। वास्तविक नियंत्रण रेखा को एक तरफा तरीके से बदलने की किसी भी कोशिश को भारत स्वीकार नहीं करेगा। देश की सीमा पर चुनौतियां बनीं हुई हैं और कोविड काल में ये चुनौतियां और बढ़ी हैं।

भारतवंशी मातृभूमि के लिए शक्ति का स्रोत हैं और भारतवंशियों को लेकर मोदी सरकार की दृष्टि एकदम स्पष्ट रही है। उनके हितों का ख्याल रखना सरकार का कर्तव्य है-खासकर तब, जब वे संकट में हों।

सरकार की व्यापार नीतियों और सुधारों से भारत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का मजबूत गन्तव्य बना

भारत में निवेश करने के लिए बहुत से देश इच्छुक है। नरेन्द्र मोदी सरकार के आर्थिक सुधारों और व्यापारिक नीतियों ने भारत को विदेशी प्रत्यक्ष निवेश का मजबूत स्थल बनाने में योगदान दिया है।

भारत वर्ष 2025 तक प्रमुख विनिर्माण केन्द्र के रूप में उभरेगा और पांच ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था भी बन जाएगा। भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था में तेजी से आगे बढ़ रहा है। महामारी के दौरान भारत वैक्सीन निर्माण के सबसे बड़े वैश्विक केन्द्रों में से एक था। देश ने एक सौ देशों को वैक्सीन की आपूर्ति की। जी-20 के लिए हमारा सिद्धान्त है - ''वसुधैव कुटुम्बकम'' और पिछले दो वर्षों में महामारी के दौरान भारत ने वास्तव में इसे कर दिखाया है। ▪

मध्यप्रदेश निवेश का केंद्र

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान

- सरकार स्टार्टअप और एमएसएमई को दे रही है अनेक प्रकार की सुविधाएँ।
- नए स्टार्टअप को एक करोड़ रूपए तक की विशेष प्रोत्साहन सहायता।
- स्टार्टअप में बेटियों को दी जायेगी 20 प्रतिशत अतिरिक्त सहायता।
- प्रदेश के युवाओं से स्टार्टअप शुरू करने का आव्हान।
- देश को स्वावलंबी बनाने में लघु उद्योग भारती के प्रयास सराहनीय।
- मध्यप्रदेश अब निवेश का केंद्र बन रहा है।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मध्यप्रदेश में निवेश की संभावनाएँ तलाशी जा रही हैं।
- इन्वेस्टर्स समिट में शामिल होने के लिए 52 देशों द्वारा स्वीकृति दी गई है।
- मध्यप्रदेश में 5जी सेवाएँ शुरू हो गई हैं।
- शासकीय योजनाओं की जानकारी देने वाला क्यूआर कोड लॉन्च।

देश को स्वावलंबी बनाने में लघु उद्योग भारती के प्रयास सराहनीय हैं। प्रदेश में एमएसएमई की इकाई डालने पर केपिटल सब्सिडी, सस्ती जमीन, पूँजी, ब्याज सब्सिडी आदि सहायता दी जाती है।

हाल ही में एक दिन में ही प्रदेश में 1900 लघु औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन किया गया। अब 5 हजार उद्योगों के प्रारंभ होने की तैयारी है।

राज्य सरकार स्टार्टअप और एमएसएमई को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक प्रकार की सुविधाएँ दे रही है। प्रदेश की स्टार्टअप नीति में नए स्टार्टअप्स को एक करोड़ रूपए तक की विशेष प्रोत्साहन सहायता का प्रावधान किया गया है। इनोवेटिव आइडिया होने पर बैंक से केपिटल फंड की भी व्यवस्था की जाती है। प्रदेश में स्टार्टअप्स को सहायता करने के लिए विशेषज्ञों का स्टार्टअप सेंटर भी बनाया गया है।

देश को स्वावलंबी बनाने में लघु उद्योग भारती के प्रयास सराहनीय हैं। प्रदेश में एमएसएमई की इकाई डालने पर केपिटल सब्सिडी, सस्ती जमीन, पूँजी, ब्याज सब्सिडी आदि सहायता दी जाती है। हाल ही में एक दिन में ही प्रदेश में 1900 लघु औद्योगिक इकाइयों का भूमि-पूजन किया गया। अब 5 हजार उद्योगों के प्रारंभ होने की तैयारी है।

युवाओं को प्रदेश में स्टार्टअप शुरू करना चाहिए। नौकरी करने वाले नहीं, नौकरी देने वाले बनें। अपना खुद का काम-धंधा शुरू करें। सरकार उसमें पूरी सहायता देगी। स्टार्टअप लगाने में बेटियों को सरकार द्वारा 20 प्रतिशत अतिरिक्त सहायता दी जाएगी। युवा यदि दृढ़निश्चय कर लें तो उन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। भारत के श्री सुंदर पिचई ने चमत्कार कर दिखाया है।

बच्चों को यह स्पष्ट होना चाहिए कि बारहवीं कक्षा के बाद उन्हें किस दिशा में जाना है।12वीं में 75 प्रतिशत या अधिक अंक लाने पर सरकार लेपटॉप देती है। मेधावी विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा की फीस भी सरकार भर रही है। मध्यप्रदेश में मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई भी हिंदी में शुरू कर दी गई है।

प्रदेश में शीघ्र ही 1 लाख सरकारी पदों पर भर्ती की जा रही है। हर व्यक्ति को सरकारी नौकरी नहीं मिल सकती, इसलिए आवश्यक है कि स्व-रोजगार शुरू करें, राज्य सरकार पूरा सहयोग करेगी। वे अपना स्टार्टअप शुरू कर नौकरी देने वाले बन सकते हैं। प्रदेश के 2500 बच्चे अपना स्टार्टअप शुरू कर चुके हैं।

मनुष्य अनंत शक्तियों का भंडार है। व्यक्ति हिम्मत और हौसले से ब्रह्मांड पर भी कमांड कर सकता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत एक बार फिर सोने की चिड़िया और विश्व गुरू बनने की ओर अग्रसर है।

स्टार्टअप की सहूलियत के लिए प्रदेश में स्टार्टअप पोर्टल शुरू किया गया है, जो इनक्यूबेटर और निवेशकों के बीच सेतु का काम करेगा। स्टार्टअप को शासकीय टेंडर में भाग लेने के लिए पहले निर्धारित अनुभव और

टर्न ओवर की शर्त थी, अब दोनों की छूट दे दी गई है। राज्य सरकार द्वारा स्टार्टअप्स को निवेश सहायता, आयोजन सहायता, उन्नयन सहायता के साथ ही लीज पर जगह लेने पर एक सीमा और निर्धारित समय के लिए किराए की सहायता भी दी जाती है।

सेबी और आरबीआई द्वारा मान्यता प्राप्त वित्तीय संस्थानों से फंड प्राप्त करने वाले स्टार्टअप्स को 15 प्रतिशत की दर से 15 लाख रूपये तक की सहायता दी जाएगी। भंडार क्रय नियमों में सरकारी खरीद में स्टार्टअप्स को प्रोत्साहन भी दिया जाएगा। कलेक्टर, सरकार द्वारा स्टार्टअप्स को दी जाने वाली सुविधाओं के संबंध में एक नोट बना कर बच्चों को भिजवाएँ। साथ ही हर जिले के कलेक्ट्रेट में एक टीम बनाई जाए जो स्टार्टअप का सहयोग एवं मार्गदर्शन करे। स्कूल और कॉलेज में स्टार्टअप के संबंध में जागरूकता कार्यक्रम भी शुरू किए जाएँ। लघु उद्यमी प्रदेश में अधिक से अधिक लघु उद्योग स्थापित करें। डीआईसी और एमपीआईडीसी के अंतर्गत आने वाले औद्योगिक क्षेत्रों को 5 हजार वर्ग फीट के प्लॉट आवंटन में 25 प्रतिशत का आरक्षण दिया जाएगा। ग्रामीण स्तर पर स्व-रोजगार बढ़ाने के लिए मल्टी स्टोरीज बनाने की योजना है, जहाँ ''प्लग एंड प्ले'' की सुविधा दी जाएगी। छोटे उद्यमी यहाँ किराए पर स्थान लेकर अपना उद्योग शुरू कर सकेंगे।

कटनी दाल मिल का क्षेत्र है। स्थानीय मांग पर अब आयातित दाल को भी मंडी टैक्स में छूट दी जाएगी। इस संबंध में केबिनेट में शीघ्र प्रस्ताव लाया जाएगा। कटनी में जमीन की उपलब्धता अनुसार ट्रांसपोर्ट नगर की स्थापना की भी जाएगी।

उद्योग में सुरक्षा के सारे इंतजाम जरूरी हैं, परंतु यदि पूरी सुरक्षा और सावधानी के बावजूद भी कोई दुर्घटना होती है तो उस स्थिति में प्रकरण धारा 304 के स्थान पर धारा 304 ए में दर्ज किया जाएगा। मामले की पूरी जाँच की जाएगी और दोषी के विरूद्ध कार्रवाई भी होगी। केंद्र सरकार की गाइडलाइन के अनुसार मध्यप्रदेश के उद्योगों में निष्पादन की भूमि 3 प्रतिशत कर दी गई है। ट्रेड प्राथमिकता के अंतर्गत एमएसएमई को 50 प्रतिशत आरक्षण कर दिया गया है।

स्टार्टअप को प्रोत्साहन राशि का भुगतान अब ऑनलाइन डीबीटी से होगा। इससे समय की बचत के साथ अनियमितता भी समाप्त हो जायेगी। हमने अनियमितताओं के खिलाफ डण्डा उठा रखा है। शासकीय योजनाओं में गड़बड़ करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों को सस्पेंड किया है और नौकरी से निकाला गया है। लघु उद्यमों की सहायता करने के लिए हर जिले में उद्योग सहायता समूह बनाए जाएंगे। ▪

अग्रणी प्रदेश बनाएगी भाजपा : विष्णुदत्त शर्मा

एक तरफ रीवा में जहां दुनिया का सबसे बड़ा 750 मेगावाट क्षमता का सोलर प्लांट बन रहा है, वहीं केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी और मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने रीवा और सीधी को जोड़ने वाली सर्व सुविधायुक्त टनल का लोकार्पण किया। मध्यप्रदेश जो एक समय पर देश के पिछड़े राज्यों में शामिल था, उसे अधोसंरचना के मामले में भाजपा सरकार देश का अग्रणी राज्य बनाना चाहती है। इस लक्ष्य की प्राप्ति में प्रदेश सरकार को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार का भी भरपूर सहयोग मिल रहा है।

मध्यप्रदेश में जितनी तेजी से विकास कार्य हो रहे हैं, वह अभूतपूर्व है और जिस स्तर के काम हो रहे हैं, उसकी कांग्रेस की सरकारों के समय में कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। इसका उदाहरण है रीवा की मोहनिया टनल जिसका निर्माण 1004 करोड़ रुपये की लागत से तय समय से 6 महीने पहले ही पूरा हो गया है। देश की चौथी सबसे चौड़ी और मध्यप्रदेश की सबसे लंबी इस सुरंग को बनाने में अत्याधुनिक तकनीक का प्रयोग किया गया है वहीं, इसमें सीसीटीवी कैमरे, पंखे, अत्याधुनिक लाइट और फायर कंट्रोल सिस्टम की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है। इस टनल के निर्माण से रीवा और सीधी के बीच की दूरी तो कम होगी ही, समूचे विंध्य प्रदेश में आवागमन आसान होगा। मोहनिया घाटी में तीन-तीन लेन की दो टनल बनाई गई हैं, जिन्हें 7 स्थानों पर जोड़ा भी गया है। ▪

संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में
महात्मा गांधी की प्रतिमा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है कि ''संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में महात्मा गांधी की आवक्ष प्रतिमा को देखकर हर भारतीय को गर्व होता है। गांधीवादी विचारों और आदर्शों से हमारी धरती और अधिक समृद्ध बने और इसका सतत विकास होता रहे ऐसी कामना है।'' ▪

भारत की जी-20 अध्यक्षता एकता की व्यापक भावना को बढ़ावा देने के लिए काम करेगी। इसलिए हमारा विषय -
"एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य" है- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

जी-20 और भारत की अध्यक्षता

नरेन्द्र मोदी

भारत के जी-20 अध्यक्षता का विषय - ''वसुधैव कुटुम्बकम'' या '' एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य''- महा उपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। वास्तव में यह विषय सभी तरह के जीवन - मानव, पशु, पौधे और सूक्ष्मजीव- के मूल्य को और पृथ्वी और व्यापक ब्रह्मांड में उनकी परस्पर संबद्धता को स्वीकार करता है।

यह विषय व्यक्तिगत जीवन शैली के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास दोनों के स्तर पर लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली) के लिए सहयोगी, पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ और जिम्मेदार विकल्पों को भी सामने रखता है, जिससे विश्व स्तर पर बदलाव लाने वाले कार्य संपन्न होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल भविष्य प्राप्त होता है।

विकास कार्य समूह (डीडब्लूजी)

डीडब्लूजी बैठकों का उद्देश्य विकासशील देशों (डीसी), सबसे कम विकसित देशों (एलडी) और द्वीपीय देशों (छोटे द्वीपीय विकासशील देशों/ एसआईडीएस) के विकास से जुड़े मुद्दों पर चर्चा करना है।

डीडब्लूजी जी-20 सदस्य देशों के लिए एक साथ आने और बहुपक्षवाद को प्राथमिकता देने, विकास को बढ़ावा देने वाले समाधानों को साझा करने, विकास योजनाओं को फिर से तैयार करने और सतत विकास लक्ष्य(एसडीजी) को प्राप्त करने का एक मंच है। जी-20 के पास ज्ञान, विशेषज्ञता, वित्तीय संसाधन हैं जो पटरी से उतर चुके प्रयासों को वापस दिशा देने के लिए आवश्यक हैं। 10-12 अगस्त, 2022 के बीच बाली में तीसरे जी-20 में आयोजित डीडब्लूजी जी-20 के प्रमुख समझौतों पर चर्चा और उन्हें अंतिम रूप देने के साथ संपन्न हुआ।

इनमें विकासशील देश, सबसे कम विकसित देशों (एलडीसी) और एसआईडी में मजबूत रिकवरी और लचीलेपन के लिए जी-20 की आगे की योजना, डीसी में मिश्रित वित्त को बढ़ाने के लिए जी-20 सिद्धांत, जी-20 मंत्रिस्तरीय विजन स्टेटमेंटः सतत विकास लक्ष्यों के लिए बहुपक्षवाद, कार्यवाही का दशक

जी-20 का नेतृत्व करने का अवसर ऐसे समय में आया है जब अस्तित्व को लेकर खतरे बढ़ गए है, क्योंकि कोविड-19 महामारी ने जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभावों के बीच हमारे तंत्र की कमजोरियों को उजागर कर दिया है।

इस संबंध में, जलवायु परिवर्तन भारत की अध्यक्षता में एक प्रमुख प्राथमिकता है, जिसमें न केवल जलवायु, वित्त और प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान दिया गया है, बल्कि दुनिया भर के विकासशील देशों के लिए हरित ऊर्जा का इस्तेमाल बढ़ाना भी सुनिश्चित किया गया है।

और 2022 जी-20 बाली अपडेट शामिल हैं।

भारत की अध्यक्षता में पहली डीडब्लूजी बैठक 13 -16 दिसंबर, 2022 को मुंबई में आयोजित की गयी। इन बैठकों में डेटा फॉर डेवलपमेंट, 2030 एजेंडा को आगे बढ़ाने में जी-20 की भूमिका, एसडीजी पर प्रगति तेज करने के लिए और ग्रीन डेवलपमेंट में नई लाइफ को शामिल करने के लिए सत्र आयोजित किए जाएंगे। प्रतिनिधि सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आनंद लेंगे जो उन्हें भारत का एक अनूठा अनुभव प्रदान करेंगे, वे गेटवे ऑफ इंडिया की सैर के लिए जाएंगे और अंतिम दिन कान्हेरी गुफाओं का भ्रमण भी करेंगे।

1 दिसंबर, 2022 एक विशेष दिन है क्योंकि भारत ने इंडोनेशिया से जी-20 की अध्यक्षता ग्रहण की है और 2023 में देश में पहली बार जी-20 नेताओं का शिखर सम्मेलन आयोजित होगा। एक राष्ट्र जो कि लोकतंत्र और बहुपक्षवाद के लिए गहराई से प्रतिबद्ध है, भारत की जी-20 अध्यक्षता उसके इतिहास में एक ऐतिहासिक अवसर होगा क्योंकि देश सभी की भलाई के लिए व्यावहारिक वैश्विक समाधान ढूंढकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाना चाहता है, और ऐसा करने में, 'वसुधैव कुटुम्बकम' या 'विश्व एक परिवार है' की सच्ची भावना को प्रकट करता है।

तो G-20 क्या है?

बीस का समूह (जी-20) सरकारों के मध्य एक मंच है जिसमें 19 देश - अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, रिपब्लिक ऑफ कोरिया, मैक्सिको, रूस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका और यूरोपीय संघ शामिल हैं।

जी-20 के सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद के लगभग 85 प्रतिशत, वैश्विक व्यापार का 75 प्रतिशत से अधिक और विश्व जनसंख्या के लगभग दो-तिहाई का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एशिया के वित्तीय संकट के बाद 1999 में वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए एक मंच के रूप में जी-20 की स्थापना की गई थी। 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तीय संकट को देखते हुए इसे राज्य/सरकार के प्रमुखों के स्तर पर उन्नत किया गया था, और 2009 में, ''अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग के लिए प्रमुख मंच'' के रूप में नामित किया गया था।

जी-20 शिखर सम्मेलन क्या है?

जी-20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष आयोजित होता है और इसकी अध्यक्षता बारी बारी से सदस्य देशों को प्राप्त होती है।

जी-20 कैसे काम करता है?

जी-20 अध्यक्ष देश एक वर्ष के लिए जी-20 एजेंडा को आगे बढ़ाता है और शिखर सम्मेलन की मेजबानी करती है। जी-20 में दो समानांतर ट्रैक होते हैं- फाइनेंस ट्रैक और शेरपा ट्रैक। वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर फाइनेंस ट्रैक का नेतृत्व करते हैं, जबकि शेरपा ट्रैक का नेतृत्व शेरपा करते हैं।

फाइनेंस ट्रैक का नेतृत्व सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों द्वारा किया जाता है। दोनों ट्रैक के अंदर, विषयों से जुड़े कार्य समूह हैं जिनमें सदस्य देशों के संबंधित मंत्रालयों के साथ-साथ आमंत्रित/अतिथि देशों और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधि भाग लेते हैं।

शेरपा ट्रैक से जी-20 प्रक्रिया का समन्वय सदस्य देशों के शेरपाओं द्वारा किया जाता है, जो देशों के प्रमुखों के निजी दूत होते हैं। शेरपा ट्रैक 13 कार्य समूह, 2 पहल - रिसर्च इनोवेशन इनिशिएटिव गैदरिंग (आरआईआईजी) और जी-20 एम्पॉवर और विभिन्न एंगेजमेंट ग्रुप से मिले नतीजों पर नजर रखता है, जो सभी साल भर बैठकें करते हैं और साथ ही साथ अपने इश्यू नोट्स और आउटकम डॉक्यूमेंट तैयार करते हैं। इन ठोस चर्चाओं के बाद शेरपा बैठकों के लिए सर्वसम्मति-आधारित अनुशंसाएं प्राप्त होती हैं। शेरपा-स्तरीय बैठकों का परिणाम दस्तावेज अंततः नेताओं की घोषणा का आधार बनता है, जिस पर अगले साल सितंबर में होने वाली अंतिम नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में सभी जी-20 सदस्य देशों के प्रमुख बहस करेंगे और इस पर हस्ताक्षर (आम सहमति पर) किए जाएंगे।

इसके अलावा, ऐसे एंगेजमेंट ग्रुप हैं जो जी-20 देशों के नागरिक समाजों, सांसदों, थिंक टैंकों, महिलाओं, युवाओं, श्रम, कारोबारियों और शोधकर्ताओं को एक साथ लाते हैं। इनोवेशन को बढ़ाने में स्टार्टअप्स की भूमिका को पहचानते हुए स्टार्टअप 20 एंगेजमेंट ग्रुप की स्थापना पहली बार भारत की जी-20 अध्यक्षता के तहत की जाएगी, जो कि तेजी से बदलते वैश्विक परिदृश्य पर प्रतिक्रिया देगा। एंगेजमेंट ग्रुप के साथ सक्रिय बातचीत भारत की ''समावेशी महत्वाकांक्षी, निर्णायक और कार्यवाही-उन्मुख'', जी-20 दृष्टिकोण का एक अभिन्न अंग है, जैसा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस वर्ष बाली शिखर सम्मेलन में रेखांकित किया था।

भारत की जी-20 अध्यक्षता

भारत 1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक जी-20 की अध्यक्षता कर रहा है। अगले साल सितंबर में होने वाले अंतिम नई दिल्ली शिखर सम्मेलन में प्रतिनिधिमंडलों के 43 प्रमुख जो कि जी-20 में अब तक की सबसे ज्यादा संख्या है, भाग लेंगे।

जी-20 लोगो भारत के राष्ट्रीय ध्वज के जीवंत रंगों - केसरिया, सफेद, हरा और नीला से प्रेरणा लेता है। यह भारत के राष्ट्रीय फूल कमल के साथ पृथ्वी ग्रह को जोड़ता है जो चुनौतियों के बीच विकास को दर्शाता है। पृथ्वी जीवन के प्रति भारत के ग्रह-समर्थक दृष्टिकोण को दर्शाती है, जो प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य में है। जी-20 लोगो के नीचे देवनागरी लिपि में ''भारत'' लिखा हुआ है।

भारत के जी-20 अध्यक्षता का विषय - ''वसुधैव कुटुम्बकम'' या ''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' - महा उपनिषद के प्राचीन संस्कृत पाठ से लिया गया है। वास्तव में यह विषय सभी तरह के जीवन - मानव, पशु, पौधे और सूक्ष्मजीव- के मूल्य को और पृथ्वी

और व्यापक ब्रह्मांड में उनकी परस्पर संबद्धता को स्वीकार करता है। यह विषय व्यक्तिगत जीवन शैली के साथ-साथ राष्ट्रीय विकास दोनों के स्तर पर लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली) के लिए सहयोगी, पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ और जिम्मेदार विकल्पों को भी सामने रखता है, जिससे विश्व स्तर पर बदलाव लाने वाले कार्य संपन्न होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक स्वच्छ और पर्यावरण अनुकूल भविष्य प्राप्त होता है।

भारत के लिए, जी-20 की अध्यक्षता ''अमृतकाल'' यानि 15 अगस्त, 2022 को देश की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ से शुरू होने वाली 25 साल की अवधि की शुरुआत का भी प्रतीक है, जो कि देश की स्वतंत्रता की शताब्दी की ओर जाती है जहां एक भविष्य के लिए तैयार, समृद्ध, समावेशी और विकसित समाज होगा जिसकी विशेषता उसके मूल में मानव-केंद्रित दृष्टिकोण का होना है।

आपदा जोखिम को कम करने के लिए सामूहिक कदमों को प्रोत्साहित करने, बहु-विषयक अनुसंधान करने और काम करने के सर्वोत्तम तौर तरीकों का आदान-प्रदान करने के लिए भारत की जी-20 अध्यक्षता में आपदा जोखिम को घटाने पर एक नया कार्य समूह स्थापित किया जाएगा। भारत के विशेष आमंत्रित अतिथि देश बांग्लादेश, मिस्र, मॉरीशस, नीदरलैंड, नाइजीरिया, ओमान, सिंगापुर, स्पेन और संयुक्त अरब अमीरात हैं।

जी-20 के आमंत्रित अंतर्राष्ट्रीय संगठन यूएन, आईएमएफ, विश्व बैंक, डब्लूएचओ, डब्लूटीओ, आईएलओ, एफएसबी, ओईसीडी, एयू चेयर, एनईपीएडी चेयर, आसियान चेयर, एडीबी, आईएसए और सीडीआरआई हैं।

जी-20 की बैठकें केवल नई दिल्ली या अन्य महानगरों तक ही सीमित नहीं रहेंगी। ''वसुधैव कुटुम्बकम''-''एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'' की अपनी जी-20 अध्यक्षता के विषय से प्रेरणा लेते हुए, साथ ही साथ 'समग्र सरकार' दृष्टिकोण की प्रधानमंत्री की सोच के साथ, भारत 32 अलग-अलग कार्यक्षेत्रों में 50 से अधिक शहरों में 200 से अधिक बैठकों की मेजबानी करेगा और मेहमानों को भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की एक झलक पाने और उन्हें भारत का एक अद्वितीय अनुभव हासिल करने का अवसर प्रदान करेगा। यह अध्यक्षता जी-20 सचिवालय के लिए देश के नागरिकों को भारत की जी-20 कथा का हिस्सा बनने के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करने का एक मौका भी है।

भारतीय जी-20 अध्यक्षता में जी-20 सदस्य देशों, विशेष आमंत्रितों और अन्य लोगों के लिए एक साल तक भारत का अनुभव कराने की भी योजना बनाई है।

भारत की जी-20 प्राथमिकताएं क्या हैं?

हरित विकास, जलवायु, वित्त और लाइफ

जी-20 का नेतृत्व करने का अवसर ऐसे समय में आया है जब अस्तित्व को लेकर खतरे बढ़ गए है, क्योंकि कोविड-19 महामारी ने जलवायु परिवर्तन के व्यापक प्रभावों के बीच हमारे तंत्र की कमजोरियों को उजागर कर दिया है। इस संबंध में, जलवायु परिवर्तन भारत की अध्यक्षता में एक प्रमुख प्राथमिकता है, जिसमें न केवल जलवायु, वित्त और प्रौद्योगिकी पर विशेष ध्यान दिया गया है, बल्कि दुनिया भर के विकासशील देशों के लिए हरित ऊर्जा का इस्तेमाल बढ़ाना भी सुनिश्चित किया गया है।

यह मानते हुए कि जलवायु परिवर्तन का मुद्दा उद्योग, समाज और सभी क्षेत्रों में व्याप्त है, भारत दुनिया के सामने लाइफ (लाइफस्टाइल फॉर एनवायरनमेंट) -एक व्यवहार-आधारित आंदोलन की शुरुआत करता है जो हमारे देश की समृद्ध, प्राचीन और लंबे समय से जारी परंपराओं से मिला है और जो पहले उपभोक्ताओं उसी के अनुसार बाद में बाजार को पर्यावरण के प्रति जागरूक कार्यप्रणालियों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है।

त्वरित, समावेशी और लचीला विकास

सतत विकास के लिए एक त्वरित, लचीला और समावेशी विकास एक आधारशिला है। अपनी जी-20 अध्यक्षता के दौरान, भारत का लक्ष्य उन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना है जिनमें संरचनात्मक बदलाव लाए जा सकते हैं। इसमें वैश्विक व्यापार में एमएसएमई को शामिल करने की गति तेज करने, विकास के लिए व्यापार की भावना लाने, श्रम अधिकारों को बढ़ावा देने और श्रम कल्याण को सुरक्षित करने, दुनिया भर में कौशल के बीच अंतर को दूर करने और समावेशी कृषि मूल्य श्रृंखला और खाद्य प्रणाली का निर्माण करने की महत्वाकांक्षा शामिल है।

एसडीजी की तेज प्रगति

भारत की जी-20 अध्यक्षता 2030 एजेंडा के महत्वपूर्ण मध्यबिंदु के साथ आती है। इसी के साथ ही, भारत मानता है कि कोविड-19 के हानिकारक प्रभाव ने कार्यवाही के मौजूदा दशक को रिकवरी के दशक में बदल दिया है। इस को देखते हुए, भारत सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जी-20 के प्रयासों की फिर से प्रतिबद्धता पर ध्यान केंद्रित करना चाहता है।

तकनीकी बदलाव और डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर

जी-20 अध्यक्ष के रूप में, भारत प्रौद्योगिकी में मानव-केंद्रित दृष्टिकोण को लेकर अपने विश्वास को आगे बढ़ा सकता है, और कृषि से लेकर शिक्षा तक के क्षेत्रों में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर, वित्तीय समावेशन और तकनीक-सक्षम विकास जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को लेकर ज्ञान को साझा करने की अधिक से अधिक सुविधा प्रदान कर सकता है।

21वीं सदी के लिए बहुपक्षीय संस्थान

भारत की जी-20 प्राथमिकता में सुधार के साथ बहुपक्षवाद पर जोर देना जारी रहेगा जो अधिक जवाबदेह, समावेशी, न्यायसंगत और प्रतिनिधित्व वाला बहुध्रुवीय अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली बनाता है जो 21वीं सदी में चुनौतियों का हल देने के लिए उपयुक्त है।

महिलाओं के नेतृत्व में विकास

भारत उम्मीद करता है कि वो जी-20 फोरम का इस्तेमाल महिला सशक्तिकरण और उनके प्रतिनिधित्व के साथ समावेशी विकास और प्रगति को रेखांकित करे। इसमें एसडीजी की उपलब्धियों और सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए महिलाओं को आगे लाने और उन्हें अग्रणी पदों पर पहुंचाने पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है।

भारत ने सांस्कृतिक पहलों की एक श्रृंखला के साथ अपनी अध्यक्षता कार्यकाल के एजेंडे को शुरू किया, जिसमें जनभागीदारी की विभिन्न गतिविधियां, देश भर के 75 शैक्षणिक संस्थानों के साथ एक विशेष यूनिवर्सिटी कनेक्ट कार्यक्रम, जी-20 लोगो और रंगों के साथ एएसआई के 100 स्मारकों को रोशन करना और नागालैंड में हॉर्नबिल उत्सव में जी-20 का प्रदर्शन शामिल है। रेत पर कलाकृति बनाने वाले श्री सुदर्शन पटनायक ने ओडिशा के पुरी समुद्र तट पर रेत से भारत के जी-20 लोगो की कलाकृति भी बनाई। साल भर में कई अन्य कार्यक्रमों, युवाओं की गतिविधियों, सांस्कृतिक प्रदर्शनों और संबंधित शहर-आयोजन स्थलों की जगहों और परंपराओं को प्रदर्शित करने वाली सैर की भी योजना बनाई गई है। ▪

अबकी बार 200 पार

विष्णुदत्त शर्मा

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं की पार्टी है। मध्यप्रदेश की पहचान आज देशभर में आदर्श राज्य के रूप में है। सरकार, संगठन, कार्यकर्ता और जनता की दृष्टि से हमारे प्रदेश की पहचान अन्य राज्यों से अलग है।

मध्यप्रदेश में सरकार और संगठन बेहतर समन्वय के साथ काम करती है। हमें इसी विशिष्ट पहचान को बनाए रखना है। हम पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ काम करने वाले कार्यकर्ता हैं। हमारे प्रदेश और जिला पदाधिकारी संगठन विस्तार में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

गुजरात में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, श्री अमित शाह जी और श्री नड्डा जी के नेतृत्व में सरकार बनी है। किसी भी राज्य में इतनी बड़ी प्रचण्ड जीत पहले कभी नही मिली। हमें गुजरात चुनाव में 53 प्रतिशत वोट शेयर मिला है, मध्यप्रदेश में भी हम इस दिशा में आगे बढ़ रहे है। 2023 के चुनाव की दृष्टि से हम 50 प्रतिशत से अधिक वोट शेयर का संकल्प पूरा करते हुये गुजरात की जीत को मध्यप्रदेश में भी दोहराएंगे। हम ''अबकी बार 200 पार'' का संकल्प लेकर राजनीतिक इतिहास बनाएंगे।

गुजरात चुनाव में मध्यप्रदेश के कार्यकर्ताओं ने 37 में से 35 सीटों पर विजय हासिल की

मध्यप्रदेश के संगठन को आदर्श संगठन के रूप मे जाना जाता है, यही कारण है कि गुजरात चुनाव में मध्यप्रदेश संगठन को 37 सीटों की जबावदारी मिली। प्रदेश के 90 कार्यकर्ताओं की टीम ने इन सीटों पर चुनाव की कमान संभालते हुए 35 सीटों पर जीत हासिल की। चुनाव में लगे कार्यकर्ताओं की मेहनत ने प्रदेश संगठन का मान बढ़ाया है। भारतीय जनता पार्टी तकनीक और संसाधनों से युक्त उत्कृष्ट संगठन बन चुका है। हम सब मिलकर कुशाभाऊ ठाकरे जी के विचार के अनुरूप संगठन को मजबूत बनाने में लगे है।

हमारा संगठन तंत्र मजबूत

मध्यप्रदेश में प्रत्येक बूथ पर पन्ना प्रमुख और पन्ना समिति के गठन के साथ ही हर बूथ के डिजिटलाईजेशन और सशक्तिकरण के चलते हमारा संगठन तंत्र मजबूत है। प्रत्येक मंडल में अधिक से अधिक यूथ कनेक्ट को ध्यान में रखते हुए युवा मोर्चा ने खिलता कमल अभियान शुरू किया है तो वही महिला मोर्चा स्व-सहायता समूह की महिलाओं व प्रदेश की लाड़ली-लक्ष्मियों से संपर्क अभियान चला रहा है। प्रदेश में गौरव यात्राएं निकालकर जनजातीय वर्ग को पेसा एक्ट के प्रति जन-जन जागरुकता अभियान भी संचालित हुआ है।

सरकार और संगठन में बेहतर समन्वय - मुरलीधर राव

भारतीय जनता पार्टी कार्यकर्ताओं की पार्टी है। मध्यप्रदेश की पहचान देशभर में आदर्श राज्य के रूप में है। सरकार, संगठन, कार्यकर्ता और जनता की दृष्टि से हमारे प्रदेश की पहचान अन्य राज्यों से अलग है। मध्यप्रदेश में सरकार और संगठन बेहतर समन्वय के साथ काम करती है। हमें इसी विशिष्ट पहचान को बनाए रखना है। हम पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ काम करने वाले कार्यकर्ता हैं। हमारे प्रदेश और जिला पदाधिकारी संगठन विस्तार में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। यह भूमिका और अधिक बढ़ने वाली है। क्योंकि हमारे सामने 51 प्रतिशत से अधिक वोट शेयर को बढ़ाने और 200 पार विधानसभा सीट जीतने का असाधारण लक्ष्य है। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए बूथ कार्य विस्तार योजना भी प्रारंभ होने वाली है। आज मध्यप्रदेश में जो अनुकूल परिस्थितियां हैं, उसे देखकर कहा जा सकता है कि हम अपने लक्ष्य को अवश्य ही पूर्ण करेंगे। ▪

कृषकों के हित में ''न भूतो न भविष्यति'' वाला वर्ष रहा है 2022 : कमल पटेल

कमल पटेल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आत्म-निर्भर भारत के स्वप्न को साकार करने के लिये मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश के किसानों के हित में राज्य सरकार ने वर्ष 2022 में अभूतपूर्व निर्णय लिये। ये ऐसे निर्णय रहे, जिनसे किसानों को अप्रत्याशित रूप से दो गुने से ज्यादा लाभ मिला। किसानों का धन और समय बचा, जिसका लाभ उन्हें और उनके परिवार को मिला। हम कह सकते हैं कि किसानों के लिये वर्ष 2022 ''न भूतो न भविष्यति'' की उक्ति को चरितार्थ करने वाला रहा है। राज्य सरकार को लगातार 7वीं बार 'कृषि कर्मण अवार्ड' के अतिरिक्त कृषि अधोसंरचना निधि के सर्वाधिक उपयोग के लिये 'बेस्ट फरफॉर्मिंग स्टेट', मिलेट मिशन योजना में 'बेस्ट इमर्जिंग स्टेट' और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 'एक्सीलेंस अवार्ड' प्राप्त हुआ।

प्रदेश में वन ग्राम के किसानों को भी प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना से लाभान्वित करने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया। सरकार ने महत्वपूर्ण पहल करते हुए वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में शामिल करवा दिया। इससे वनाधिकार पट्टेधारियों की फसलों को क्षति होने पर फसल बीमा योजना का लाभ मिलने लगा। फसल बीमा योजना का ज्यादा से ज्यादा किसान लाभ ले सकें और इसमें अपनी विभिन्न फसलों का बीमा कराने के लिये सरकार ने अधिसूचित फसल क्षेत्र का मापदंड 100 हेक्टेयर के स्थान पर 50 हेक्टेयर किया। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के 4 हजार रूपये मिला कर प्रदेश के लाखों किसानों को 10 हजार रूपये की सालाना मदद की जा रही है।

प्रदेश में किसानों की ग्रीष्म कालीन मूंग को समर्थन मूल्य पर खरीदने का निर्णय लिया गया, जिससे किसानों की आय में वृद्धि हुई। चना, मसूर, सरसों की उपज का उपार्जन, गेहूँ उपार्जन के साथ किया गया। इससे किसानों को लगभग 10 हजार करोड़ रूपये का अतिरिक्त लाभ हुआ।

हम कह सकते हैं कि किसानों के लिये वर्ष 2022 ''न भूतो न भविष्यति'' की उक्ति को चरितार्थ करने वाला रहा है।

राज्य सरकार को लगातार 7वीं बार 'कृषि कर्मण अवार्ड' के अतिरिक्त कृषि अधोसंरचना निधि के सर्वाधिक उपयोग के लिये 'बेस्ट फरफॉर्मिंग स्टेट', मिलेट मिशन योजना में 'बेस्ट इमर्जिंग स्टेट' और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में 'एक्सीलेंस अवार्ड' प्राप्त हुआ।

सरकार ने 8 जिलों में तिवड़ा मिश्रित चने का उपार्जन समर्थन मूल्य पर किया। प्रदेश सरकार के 'जितना उत्पादन-उतना उपार्जन' के निर्णय से चने के उपार्जन की क्षमता में वृद्धि हुई और किसानों को 750 करोड़ रूपये का अतिरिक्त लाभ हुआ। इस वर्ष समितियों में एक दिन में किसानों से उपार्जन की अधिकतम सीमा 25 क्विंटल को समाप्त कर दिया गया।

किसानों के हित में परंपरागत फसलों के स्थान पर लाभकारी फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिये फसल विविधीकरण योजना लागू की गई। राज्य में प्राकृतिक खेती को मिशन मोड में आगे बढ़ाने के लिये भी सरकार प्रतिबद्ध है। प्रत्येक किसान को अपनी कुछ भूमि पर प्राकृतिक खेती के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है। सरकार ने निर्णय लिया है कि नर्मदा नदी के किनारों पर 4 लाख 45 हजार हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में प्राकृतिक खेती की जायेगी। एक लाख 86 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती करने के लिये 60 हजार किसानों ने पंजीयन कराया है। राज्य सरकार ने यह निर्णय भी लिया कि प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के प्रोत्साहन के लिये सरकार देसी गाय के लालन-पालन के लिये 900 रूपये प्रतिमाह का अनुदान दिया जायेगा। सरकार ने किसानों के हित में कृषि आदानों की गुणवत्ता नियंत्रण को प्राथमिकता देते हुए अमानक बीज, उर्वरक एवं कीटनाशक विक्रेताओं के विरूद्ध भी इस वर्ष सख्ती से कार्रवाई की। इस वर्ष 136 बीज विक्रेताओं, 120 उर्वरक विक्रेताओं और 14 कीटनाशक विक्रेताओं की अनुज्ञप्तियों को निलंबित और निरस्त करने की कार्यवाही की। बीज, उर्वरक और कीटनाशक के 39 विक्रेताओं के विरूद्ध एफआईआर की कार्रवाई की गई।

राज्य सरकार के विशेष प्रयासों से प्रदेश में एपीडा का क्षेत्रीय कार्यालय स्वीकृत कराकर चालू कराया गया। यह कार्यालय मंडी बोर्ड भोपाल (किसान भवन) में स्थित है। इससे मध्यप्रदेश के किसानों को अपने कृषि उत्पाद निर्यात करने में सुविधा मिल रही है। साथ ही उन्हें अपनी उपज का अधिकतम लाभ भी प्राप्त हो रहा है। एपीडा की मदद से ही बालाघाट के चिन्नूर चावल को जीआई टेग मिलने में सफलता मिली है। प्रदेश के विभिन्न जिलों के उत्पादों को जीआई टेग दिलवाने के लिये एपीडा प्रयासरत है। ▪

भाजपा ने गरीबों का जीवन स्तर सुधारा : विष्णुदत्त शर्मा

हम गौरवान्वित है कि भारत जी-20 देशों की अध्यक्षता कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज देश वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। एक समय था जब गरीबों को सरकार घर दे, यह कल्पना होती थी। आज वह कल्पना साकार हो रही है।

कांग्रेस ने गरीबी हटाओ का नारा दिया, लेकिन हकीकत में गरीबी नहीं हटी। कांग्रेस का यह नारा सिर्फ नारा ही रह गया। सही मायनों में गरीबों के जीवन स्तर को सुधारने का काम सिर्फ भारतीय जनता पार्टी की सरकार और प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने साकार किया है। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा किसी ने किया है तो वह भाजपा सरकार ने किया है। प्रधानमंत्री आवास योजना इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

अंत्योदय की कल्पना साकार हो रही

हम गौरवान्वित है कि भारत जी-20 देशों की अध्यक्षता कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज देश वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है। एक समय था जब गरीबों को सरकार घर दे, यह कल्पना होती थी। आज वह कल्पना साकार हो रही है। आजादी के बाद लंबे समय कांग्रेस ने राज किया, लेकिन कांग्रेस गरीबों को घर क्यों नहीं दे पायी?

गरीबों को प्रधानमंत्री आवास के मकान मिल रहे है। यह मकान पहले की सरकार में क्यों नहीं मिल पाए? हमें सरकार-सरकार के इस भेद के समझना होगा। स्वाभिमानी गरीब की चिंता किसी ने की है तो वह केन्द्र की श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार है। गरीब अगर बीमार पड़ जाए तो उसकी पैसे के अभाव में मृत्यु नहीं होगी, बल्कि उसे आयुष्मान भारत योजना का सुरक्षा कवच मिलेगा। आज केन्द्र और राज्य की सरकार सिर्फ घोषणा नहीं बल्कि जो कहा उसे धरातल पर साकार कर रही है। पं. दीनदयाल जी के अंत्योदय की कल्पना आज योजनाओं के माध्यम से साकार हो रही है।

दिव्यांगों में विशेष प्रतिभा होती हैं। ऐसी प्रतिभा को पहचानने का पुण्य कार्य प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया है, जिसके लिए वह सदियों तक याद किए जाएगें। कल तक जिन्हें लोग विकलांग कहते थे, आज वह दिव्यांग हैं। यह कोई अभिशाप नहीं ऐसे हर व्यक्तियों के लिए देश मे श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार एवं प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की सरकार लगातार कार्य को सेवा के रूप में कर रही हैं। यह दिव्यांग नहीं भगवान का रूप हैं। ▪

अटूट विश्वास की जीत- अमित शाह

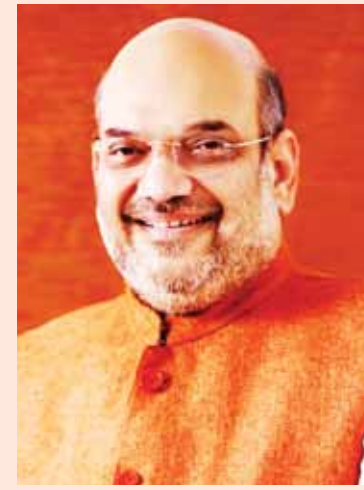

गुजरात में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता को मिली प्रचंड, ऐतिहासिक और भव्य जीत माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकास मॉडल में जनता के अटूट विश्वास की जीत है।

गुजरात में भारतीय जनता पार्टी की अब तक की सबसे बड़ी और लगातार सातवीं बार जीत ने इतिहास रचने का काम किया है। पिछले दो दशक में मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा ने गुजरात में विकास के सभी रिकॉर्ड तोड़े और गुजरात की जनता ने भाजपा को आशीर्वाद देकर जीत के सभी रिकॉर्ड तोड़ दिये।

गुजरात ने खोखले वादे, रेवड़ी व तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों को नकार कर विकास और जनकल्याण को चरितार्थ करने वाली नरेन्द्र मोदी जी की भाजपा को अभूतपूर्व जनादेश दिया है। इस प्रचंड जीत ने दिखाया है कि हर वर्ग चाहे महिला हो, युवा हो या किसान हो सभी पूरे दिल से भाजपा के साथ हैं। ▪

जनजाति गौरव यात्रा

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता जनजातीय गौरव यात्रा के माध्यम से ग्राम और चौपालों पर जाकर पेसा एक्ट के लाभ बता रहे हैं, ताकि कांग्रेस अपने गलत मंसूबों में कामयाब नहीं हो सके। जनजातीय गौरव यात्रा का उद्देश्य जनजातीय वर्ग में पेसा एक्ट कानून को लेकर जनजाग्रति लाना है।

भारतीय जनता पार्टी ने सदैव जनजाति समाज के उत्थान का कार्य किया है, लेकिन कांग्रेस ने हमेशा ही जनजाति समाज को गुमराह करने का काम किया। आज कांग्रेस पेसा एक्ट के बारे में जनजातीय भाई बहनों के बीच भ्रम फैला रही है। लेकिन भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता जनजातीय गौरव यात्रा के माध्यम से ग्राम और चौपालों पर जाकर पेसा एक्ट के लाभ बता रहे हैं, ताकि कांग्रेस अपने गलत मंसूबों में कामयाब नहीं हो सके। जनजातीय गौरव यात्रा का उद्देश्य जनजातीय वर्ग में पेसा एक्ट कानून को लेकर जनजाग्रति लाना है।

भाजपा सरकार ने पेसा एक्ट लागू कर जनजातीय बंधुओं को उनका अधिकार दिया।

जल, जंगल और जमीन पर पहला हक जनजातीय समाज का है। हमारे जनजातीय भाई बहन पेसा एक्ट को लेकर वर्षों से प्रतीक्षारत थे। हमें गर्व है कि मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी सरकार ने पेसा एक्ट लागू कर जनजातीय बंधुओं को उनका अधिकार प्रदान किया है। कांग्रेस ने कभी भी जनजातीय क्रांतिवीरों का सम्मान नहीं किया। उन्होंने हमेशा इस वर्ग की उपेक्षा की। भाजपा ने जनजातीय समाज का गौरवशाली अतीत लोगों तक पहुंचे इसके लिए हमेशा प्रयास किए। भगवान बिरसा मुंडा केवल जनजातीय वर्ग के ही नहीं बल्कि पूरे देश के गौरव है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मध्यप्रदेश की धरती से धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की।

अटल जी ने जनजातीय मंत्रालय बनाया, मोदी जी मुख्यधारा में लाए

आजादी के बाद कांग्रेस सबसे अधिक सत्ता में रही, लेकिन कांग्रेस ने जनजातीय वर्ग की उपेक्षा की और उनके साथ छलावा किया। कांग्रेस ने कभी भी इस वर्ग के लिए कोई योजना नहीं बनायी। जबकि श्री अटलबिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में जनजातीय वर्ग के उत्थान के लिए पृथक से जनजातीय मंत्रालय बनाया गया। आज जनजातीय वर्ग को मुख्यधारा में लाने और उनका सम्मान दिलाने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र और राज्य सरकार संकल्पित है।

आजादी के अमृत महोत्सव में जनजातीय वीर महानायकों को याद कर देश कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा है। जनजातीय गौरव यात्रा जनजातीय अंचलों में पहुंचेगी और क्रांतिसूर्य जननायक टंट्या मामा की वीरगाथा लोगों तक पहुंचायेगी साथ ही पेसा एक्ट को लेकर लोगों को जागरूकता प्रदान करेगी। ▪

20 देशों के प्रतिनिधियों की मेजबानी करेगा पन्ना- विष्णुदत्त शर्मा

जी-20 देशों की बैठकें देशभर में 56 स्थानों पर होंगी। यह प्रदेश का सौभाग्य है कि इनमें से दो बैठकें खजुराहो में भी होंगी। हम इसलिए भी सौभाग्यशाली हैं कि बैठकों में आने वाले 20 देशों के प्रतिनिधि पन्ना टाइगर रिजर्व देखने आएंगे और वे पन्ना में जुगलकिशोर जी के दर्शन करने भी आ सकते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश को जी-20 देशों की अध्यक्षता करने का अवसर मिला है। पहली बैठक 23,24,25 फरवरी को और दूसरी 11,12 सितंबर को होगी। ▪

स्वास्थ्य सेवा भविष्य की जरूरतों के अनुरूप

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में सरकार द्वारा एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव आया है।

हेल्थ एंड वेलनेस का एक नया दृष्टिकोण स्वास्थ्य क्षेत्र की कार्यप्रणाली का मूल बन गया।

- 2014 में मातृ मृत्यु दर (एमएमआर) प्रति लाख पर 130 थी, 2020 में यह घटकर प्रति लाख पर 97 हो गई।
- शिशु मृत्यु दर (आईएमआर), जो 2014 में प्रति 1000 जीवित जन्मों पर 39 थी, 2022 में घटकर 28 हो गई।
- नवजात मृत्यु दर (एनएमआर), जो 2014 में प्रति 1000 जीवित जन्मों पर 26 थी, 2020 में घटकर 20 हो गई
- 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर 2014 में 45 से घटकर 2020 में 32 हो गई।
- सरकार ने लगभग 10.74 करोड़ गरीब और कमजोर परिवारों को प्रति परिवार प्रति वर्ष 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य कवरेज प्रदान किया है।
- अब तक जारी किए गए आयुष्मान कार्डों की कुल संख्या 21.24 करोड़ है और अस्पतालों में भर्ती होने की कुल संख्या 4.22 करोड़ है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में सरकार द्वारा एक सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है और स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव आया है। हेल्थ एंड वेलनेस का एक नया दृष्टिकोण स्वास्थ्य क्षेत्र की कार्यप्रणाली का मूल बन गया। सरकार आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से समग्र स्वास्थ्य सेवा सुनिश्चित कर रही है। योजना 4 स्तंभों पर टिकी है, जो आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस (एबी-एचडब्ल्यूसी), आयुष्मान भारत- प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई), आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) और आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन (पीएम-एबीएचआईएम) हैं।

2006-07 से 2013-14 तक कुल 1,59,832 करोड़ रुपये जारी किए गए थे, और फिर 2014-15 के बाद, 2013-14 से 2021-22 तक कुल 4,27,501 करोड़ रुपये जारी किए गए हैं।

2012-13 में 6 एम्स ने अपने शैक्षणिक सत्र शुरू किए। लेकिन 2014 के बाद पीएमएसएसवाई के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विजन का अनुसरण करते हुए देश के विभिन्न राज्यों यानी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, असम, झारखंड, गुजरात, तेलंगाना, जम्मू-कश्मीर, बिहार, हरियाणा और तमिलनाडु में नए एम्स के लिए 16 प्रमुख परियोजनाएं शुरू की गई हैं। इस तरह, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने भारतीय हेल्थकेयर को भविष्य की जरूरतों के अनुरूप तैयार किया है।

30.11. 2022 तक, कैबिनेट ने 20,944 करोड़ रुपये के फंड के साथ 16 नए एम्स के परिव्यय को मंजूरी दी। इसके लिए 10,595 करोड़ रुपये का कोष जारी किया गया है।

कोविड-19 की रोकथाम के लिए 20/12/2022 तक, 102.55 करोड़ पहली खुराक, 95.12 करोड़ दूसरी खुराक, और 22.34 करोड़ एहतियाती खुराक, यानी कुल मिलाकर 220.01 करोड़ टीके लगाए गए है।

वैक्सीन मैत्री कार्यक्रम के तहत, भारत ने कोविड-19 महामारी की शुरुआत के बाद से 150 से अधिक देशों को बहुत सस्ती कीमत पर कोविड-19 से संबंधित चिकित्सा और अन्य सहायता उपलब्ध कराई गई है।

महामारी से लड़ने के लिए सरकार ने 2020 से नवंबर 2022 तक 3388 परीक्षण प्रयोगशालाएं विकसित की हैं।

मिशन इंद्रधनुष की घोषणा 25 दिसंबर, 2014 को घातक बीमारियों के खिलाफ टीकाकरण दर बढ़ाने के लिए की गई थी, जिसे पूरे देश में टीकाकरण से रोका जा सकता है।

मिशन इन्द्रधनुष ने अंतर को पाटने और व्यापक टीकाकरण की दिशा में स्थायी लाभ प्राप्त करने में अत्यधिक योगदान दिया है। आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) दुनिया की सबसे बड़ी स्वास्थ्य बीमा योजना है। सरकार नागरिकों के मानसिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रख रही है। छात्रों, शिक्षकों एवं परिवारों को मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक तंदुरूस्ती के लिए मनोसामाजिक सहायता प्रदान करने के लिए ''मनोदर्पण'' पहल कोविड महामारी के दौरान की गई थी।

2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में शुरुआत के बाद, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में, 2015 से 21 जून को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है।

योग की विश्वव्यापी स्वीकृति हमारे देश के लिए गर्व की बात है, क्योंकि योग हमारे देश की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत का अभिन्न अंग है। योग के अनगिनत फायदे हैं, यह एक ऐसा व्यायाम है जिससे हम अपने शरीर के तत्वों को संतुलित करते हैं। भारतीय पारंपरिक स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, हमारी प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों के गहन ज्ञान को पुनर्जीवित करने और अधिकतम विकास और प्रचार सुनिश्चित करने की दिशा में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, आयुष मंत्रालय द्वारा वर्ष 2014 में एक अलग और समर्पित मंत्रालय स्थापित किया गया है। इसके लिए सरकार ने 2021-22 में लगभग 3,000 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया है। ▪

संकल्प विकसित भारत के निर्माण का है
सरकार (DevINE) इरादे से काम कर रही है

- सरकार ने पिछले 8 वर्षों में नॉर्थ ईस्ट के विकास से जुड़ी अनेक रुकावटों को रेड कार्ड दिखाया है।
- वह दिन दूर नहीं जब भारत भी वर्ल्ड कप टूर्नामेंट आयोजित करेगा और हर भारतीय भी हमारी टीम का स्वागत करेगा।
- विकास सिर्फ बजट, टेंडर, शिलान्यास, उद्घाटन तक सीमित नहीं है।
- हम जो परिवर्तन देख रहे हैं, वह हमारे इरादों, संकल्पों, प्राथमिकताओं और हमारी कार्य संस्कृति में बदलाव का परिणाम है।
- केंद्र सरकार इस साल सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर पर 7 लाख करोड़ रुपए खर्च कर रही है, जबकि 8 साल पहले यह खर्च 2 लाख करोड़ रुपए से भी कम था।
- पीएम-डिवाइन के तहत अगले 3-4 साल के लिए 6,000 करोड़ रुपये का बजट तय किया गया है।
- आदिवासी समाज की परंपरा,भाषा और संस्कृति को बनाए रखते हुए जनजातीय क्षेत्रों का विकास सरकार की प्राथमिकता।
- लंबे समय तक जिन दलों की सरकारें रहीं, उनकी नॉर्थ ईस्ट के लिए 'डिवाइड' की सोच थी और हम 'डिवाइन' का इरादा लेकर आए हैं।

नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए भाजपा की, एनडीए की सरकार पूरी ईमानदारी से काम कर रही है। इस वर्ष ही 3 नई योजनाएं शुरु की गई हैं, जो या तो सीधे नॉर्थ ईस्ट के लिए हैं या फिर उनसे नॉर्थ ईस्ट का सबसे अधिक लाभ होने वाला है।

पर्वतमाला योजना के तहत रोप-वे का नेटवर्क बनाया जा रहा है। इससे नॉर्थ ईस्ट के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में सुविधा बढ़ेगी और टूरिज्म का विकास भी होगा। PM DEVINE योजना तो नॉर्थ ईस्ट के विकास को नई गति देने वाली है।

फुटबॉल में अगर कोई खेल भावना के विरूद्ध sportsmanship spirit के खिलाफ अगर कोई भी व्यवहार करता है। तो उसे Red Card दिखाकर बाहर कर दिया जाता है। इसी तरह पिछले 8 वर्षों में नॉर्थ ईस्ट के विकास से जुड़ी अनेक रुकावटों को Red Card दिखा दिया है। भ्रष्टाचार, भेदभाव, भाई-भतीजावाद, हिंसा, प्रोजेक्टों को लटकाना-भटकाना, वोट बैंक की राजनीति को बाहर करने के लिए ईमानदारी से प्रयास कर रहे हैं। इन बुराईयों की, बीमारियों की जड़ें बहुत गहरी हैं, इसलिए सबको मिलकर के उसे हटाकर के ही रहना है। हमें विकास के कार्यों को ज्यादा रफ्तार देने और ज्यादा प्रभावशाली बनाने में प्रयासों के अच्छे परिणाम नजर आ रहे हैं। यही नहीं, स्पोर्ट्स को लेकर भी केंद्र सरकार एक नई अप्रोच के साथ आगे बढ़ रही है। इसका लाभ नॉर्थ ईस्ट को हुआ है, नॉर्थ ईस्ट के जवानों को, बेटे-बेटियों को हुआ है। देश की पहली स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी नॉर्थ ईस्ट में है। नॉर्थ ईस्ट में मल्टीपर्पज हॉल, फुटबॉल मैदान, एथलेटिक्स ट्रैक, ऐसे 90 प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है।

विकास सिर्फ बजट, टेंडर, शिलान्यास, उद्घाटन इन्ही ritual तक सीमित नहीं है। ये तो

साल 2014 से पहले भी होता रहता था। फीते काटने वाले पहुंच जाते थे। नेता मालाएं भी पहन लेते थे, जिंदाबाद के नारे भी लग जाते थे। तो फिर बदला क्या है? जो बदलाव आया है, वो इरादे में आया है। संकल्पों में आया है, प्राथमिकताओं में आया है, कार्य संस्कृति में आया है, बदलाव प्रक्रिया और परिणाम में भी आया है। संकल्प, आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर, आधुनिक कनेक्टिविटी से विकसित भारत के निर्माण का है। इरादा, भारत के हर क्षेत्र, हर वर्ग को तेज विकास के मिशन से जोड़ने का है, सबके प्रयास से भारत के विकास का है। प्राथमिकता, अभाव को दूर करने की है, दूरियों को कम करने की है, कैपेसिटी बिल्डिंग की है, युवाओं को अधिक अवसर देने की है। कार्य संस्कृति में बदलाव यानि हर प्रोजेक्ट, हर प्रोग्राम समय-सीमा के भीतर पूरा किया जाए।

जब केंद्र सरकार ने प्राथमिकताएं बदलीं, priority बदली, तो पूरे देश में इसका पॉजिटिव असर भी दिख रहा है। इस वर्ष देश में 7 लाख करोड़ रुपए, ये आंकड़ा मेघालय के भाई-बहन याद रखना, नार्थ ईस्ट के भाई-बहन याद रखना। सिर्फ इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए केंद्र सरकार 7 लाख करोड़ रुपया खर्च कर रही है। जबकि 8 वर्ष पहले ये खर्च 2 लाख करोड़ रुपए से भी कम था। यानि आजादी के 7 दशक बाद भी सिर्फ 2 लाख करोड़ रुपए तक पहुंचे और 8 वर्षों में लगभग 4 गुणा क्षमता बढ़ाई है।

इंफ्रास्ट्रक्चर को लेकर अनेक राज्य भी, राज्यों के बीच मे competition हो रही है, स्पर्धा हो रही है, विकास की स्पर्धा हो रही है। देश में जो ये बदलाव आया है उसका सबसे बड़ा लाभार्थी भी नॉर्थ ईस्ट ही है। शिलॉन्ग सहित नॉर्थ ईस्ट की सभी राजधानियां रेल-सेवा से जुड़ें, इसके लिए तेजी से काम चल रहा है। साल 2014 से पहले जहां हर हफ्ते 900 उड़ानें ही संभव हो पाती थीं, आज इनकी संख्या करीब एक हजार नौ सौ तक पहुंच गई है। कभी 900 हुआ करती थी, अभी 1900 हुआ करेगी। मेघालय में उड़ान योजना के तहत 16 रूट्स पर हवाई सेवा चल रही है। इससे मेघालय वासियों को सस्ती हवाई सेवा का लाभ मिल रहा है। बेहतर एयर कनेक्टिविटी से मेघालय और नॉर्थ ईस्ट के किसानों को भी लाभ हो रहा है। केंद्र सरकार की कृषि उड़ान योजना से यहां के फल-सब्जी देश और विदेश के मार्केट तक आसानी से पहुंच पा रहे हैं।

जिन प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है, उससे मेघालय की कनेक्टिविटी और सशक्त होने वाली है। पिछले 8 वर्षों में मेघालय में नेशनल हाईवे के निर्माण पर 5 हजार करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं। पिछले 8 वर्षों में जितनी ग्रामीण सड़कें मेघालय में प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत बनी हैं, वह उससे पहले 20 वर्षों में बनी सड़कों से सात गुना ज्यादा है।

नॉर्थ ईस्ट की युवा शक्ति के लिए डिजिटल कनेक्टिविटी से नए अवसर बनाए जा रहे हैं। डिजिटल कनेक्टिविटी से सिर्फ बातचीत, कम्यूनिकेशन नहीं, उतना ही लाभ मिलता है ऐसा नहीं है। बल्कि इससे टूरिज्म से लेकर टेक्नॉलॉजी तक, शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य तक, हर क्षेत्र में सुविधाएं बढ़ती हैं, अवसर बढ़ते हैं। साथ ही विश्व में तेजी से उभरती डिजिटल अर्थव्यवस्था का सामर्थ्य भी इससे बढ़ता है।

2014 की तुलना में नॉर्थ ईस्ट में ऑप्टिकल फाइबर की कवरेज लगभग 4 गुणा बढ़ी है। वहीं मेघालय में ये वृद्धि 5 गुणा से अधिक है। नॉर्थ ईस्ट के कोने-कोने तक बेहतर मोबाइल कनेक्टिविटी पहुंचे, इसके लिए 6 हजार मोबाइल टावर लगाए जा रहे हैं। इस पर 5 हजार करोड़ रुपए से अधिक खर्च किया जा रहा है। मेघालय में अनेक 4G मोबाइल टावर्स का लोकार्पण इन प्रयासों को गति देगा। ये इंफ्रास्ट्रक्चर यहां के युवाओं को नए अवसर देने वाला है। मेघालय में IIM का लोकार्पण और टेक्नॉलॉजी पार्क का शिलान्यास भी पढ़ाई और कमाई के अवसरों का विस्तार करेगा। नॉर्थ ईस्ट के आदिवासी क्षेत्रों में डेढ़ सौ से अधिक एकलव्य मॉडल स्कूल बनाए जा रहे हैं, इसमें से 39 मेघालय में हैं। दूसरी तरफ IIM जैसे प्रोफेशनल एजुकेशन के संस्थानों से युवाओं को प्रोफेशनल एजुकेशन का लाभ भी यहीं मिलने वाला है।

नॉर्थ ईस्ट के विकास के लिए भाजपा की, एनडीए की सरकार पूरी ईमानदारी से काम कर रही है। इस वर्ष ही 3 नई योजनाएं शुरु की गई हैं, जो या तो सीधे नॉर्थ ईस्ट के लिए हैं या फिर उनसे नॉर्थ ईस्ट का सबसे अधिक लाभ होने वाला है। पर्वतमाला योजना के तहत रोप-वे का नेटवर्क बनाया जा रहा है। इससे नॉर्थ ईस्ट के प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों में सुविधा बढ़ेगी और टूरिज्म का विकास भी होगा। PM DEVINE योजना तो नॉर्थ ईस्ट के विकास को नई गति देने वाली है। इस योजना से नॉर्थ ईस्ट के लिए बड़े डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स अधिक आसानी से स्वीकृत हो पाएंगे। यहां महिलाओं और युवाओं की आजीविका के साधन विकसित होंगे। पीएम-डिवाइन के तहत आने वाले 3-4 साल के लिए 6 हजार करोड़ रुपए का बजट तय किया जा चुका है।

लंबे समय तक जिन दलों की सरकारें रहीं, उनकी नॉर्थ ईस्ट के लिए Divide की सोच थी और हम DEVINE का इरादा लेकर आए हैं। अलग-अलग समुदाय हो, या फिर अलग-अलग क्षेत्र, हम हर प्रकार के डिविजन को दूर कर रहे हैं। आज नॉर्थ ईस्ट में हम विवादों के बॉर्डर नहीं बल्कि विकास के कॉरिडोर बना रहे हैं उस पर बल दे रहे हैं। बीते 8 वर्षों में अनेक संगठनों ने हिंसा का रास्ता छोड़ा है, स्थाई शांति की राह पकड़ी है। नॉर्थ ईस्ट में AFSPA की आवश्यकता ना पड़े, इसके लिए लगातार राज्य सरकारों के साथ मिलकर स्थितियों को सुधारा जा रहा है। यही नहीं, राज्यों के बीच सीमाओं को लेकर भी दशकों से जो विवाद चल रहे थे, उनको सुलझाया जा रहा है।

नॉर्थ ईस्ट, बॉर्डर एरिया, आखिरी छोर नहीं बल्कि सुरक्षा और समृद्धि के गेट-वे हैं। राष्ट्र की सुरक्षा भी यहीं से सुनिश्चित होती है और दूसरे देशों से व्यापार-कारोबार भी यहीं से होता है। इसलिए एक और महत्वपूर्ण योजना है, जिसका लाभ नॉर्थ ईस्ट के राज्यों को होने वाला है। ये योजना है वाइब्रेंट बॉर्डर विलेज बनाना है। इसके तहत सीमावर्ती गांवों में बेहतर सुविधाएं विकसित की जाएंगी। लंबे समय तक देश में ये सोच रही है कि बॉर्डर एरिया में विकास होगा, कनेक्टिविटी बढ़ेगी तो दुश्मन को फायदा होगा। ये सोचा जाता था, मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता हूं। क्या ऐसा भी कभी सोचा जा सकता है? पहले की सरकार की इस सोच के कारण नॉर्थ ईस्ट समेत देश के सभी सीमावर्ती क्षेत्रों में कनेक्टिविटी बेहतर नहीं हो पाई। लेकिन आज डंके की चोट पर बॉर्डर पर नई सड़कें, नई टनल, नए पुल, नई रेल लाइन, नए एयर स्ट्रिप, जो भी आवश्यक है एक के बाद एक उसके निर्माण का काम तेज गति से चल रहा है। जो सीमावर्ती गांव कभी वीरान हुआ करते थे, हम उन्हें वाइब्रेंट बनाने में जुटे हैं। जो गति हमारे शहरों के लिए महत्वपूर्ण है, हमारे बॉर्डर पर भी वही गति होनी आवश्यक है। इससे यहां टूरिज्म भी बढ़ेगा और जो लोग गांव छोड़कर गए हैं, वे भी वापस लौटकर आएंगे।

शांति और विकास की राजनीति का सबसे अधिक लाभ हमारे जन-जातीय समाज को हुआ है। आदिवासी समाज की परंपरा, भाषा-भूषा, संस्कृति को बनाए रखते हुए आदिवासी क्षेत्रों का विकास सरकार की प्राथमिकता है। इसलिए बांस की कटाई पर जो प्रतिबंध था उसे हमने हटा दिया है। इससे बांस से जुड़े आदिवासी उत्पादों के निर्माण को बल मिला। वनों से प्राप्त उपज में वैल्यू एडिशन के लिए नॉर्थ ईस्ट में साढ़े 8 सौ वनधन केंद्र स्थापित किए जा चुके हैं। इनसे अनेक सेल्फ-हेल्प ग्रुप जुड़े हैं, जिनमें अनेक हमारी माताएं-बहनें काम कर रही हैं। यही नहीं, घर, पानी, बिजली, गैस जैसे सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर का भी नॉर्थ ईस्ट को सबसे अधिक लाभ हुआ है। बीते वर्षों में मेघालय में 2 लाख घरों तक पहली बार बिजली पहुंची है। गरीबों के लिए लगभग 70 हजार घर स्वीकृत हुए हैं। लगभग तीन लाख परिवारों को पहली बार नल से जल की सुविधा मिली है। ऐसी सुविधाओं के सबसे बड़ी लाभार्थी हमारे आदिवासी भाई-बहन हैं। ▪

2014 से पूर्वोत्तर में शांति का दौर

2014 से उग्रवाद प्रभावित हिंसा में 80 प्रतिशत और नागरिकों की मौतों में 89 प्रतिशत की भारी गिरावट आने की वजह से भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में शांति का एक युग शुरू हो गया है। 2014 के बाद से छह हजार उग्रवादियों द्वारा आत्मसमर्पण की उपलब्धि भी है।

सरकार आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए सशस्त्र कार्रवाई से आगे जाने के लिए प्रतिबद्ध है और उसने पूरे क्षेत्र में स्थायी शांति का माहौल बनाने के लिए काम किया है।

भारत सरकार की नीति ''आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस'' पर केन्द्रित है। सरकार ने जहां यूएपीए को मजबूत करने के लिए कानूनी मोर्चे पर काम किया है, वहीं प्रवर्तन स्तर पर भी विभिन्न कदम उठाए गए हैं, राष्ट्रीय जांच एजेंसी (संशोधन) अधिनियम को पेश करके राष्ट्रीय जांच एजेंसी को वास्तविक तौर पर एक संघीय संरचना दी गयी है। इन उपायों का सामूहिक प्रभाव, आतंकवाद के इकोसिस्टम को कमजोर कर रहा है।

भारत ने उच्चतम वैश्विक स्तर पर अपनी चिंताओं को उठाया है, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों और बैठकों में, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया पर आतंकवाद के खिलाफ एकजुट होने के लिए हमेशा दबाव डाला है। 90वीं इंटरपोल महासभा में 2000 से अधिक विदेशी प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिसका समापन ''आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक कार्यवाही'' की घोषणा के साथ हुआ। ''आतंक के खिलाफ सरकार के संकल्प को सर्जिकल स्ट्राइक से लेकर बालाकोट स्ट्राइक तक बार-बार प्रदर्शित किया गया है। हमारे सशस्त्र बलों की कार्रवाई से जम्मू-कश्मीर में आतंकी घटनाओं में भारी कमी दर्ज की गयी है। इसी तरह, आतंकवाद को वित्तीय मदद देने के मामलों में सजा की दर 94 प्रतिशत तक हासिल की गयी है।''

2014 से उग्रवाद प्रभावित हिंसा में 80 प्रतिशत और नागरिकों की मौतों में 89 प्रतिशत की भारी गिरावट आने की वजह से भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र में शांति का एक युग शुरू हो गया है। 2014 के बाद से छह हजार उग्रवादियों द्वारा आत्मसमर्पण की उपलब्धि भी है।

सरकार आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए सशस्त्र कार्रवाई से आगे जाने के लिए प्रतिबद्ध है और उसने पूरे क्षेत्र में स्थायी शांति का माहौल बनाने के लिए काम किया है। ये शांति समझौते सरकार की उपलब्धियों की विरासत हैं।

- बोडो समझौते पर जनवरी 2020 में हस्ताक्षर किए गए,
- ब्रू-रियांग समझौता जनवरी 2020,
- एनएलएफटी-त्रिपुरा समझौता, अगस्त 2019 में,
- कार्बी आंगलोंग समझौता, सितंबर 2021,
- असम-मेघालय अंतर-राज्यीय सीमा समझौता, मार्च 2022 में।

सशस्त्र बल विशेष अधिकार

अफ्स्पा को वापस लेने के बारे में अब तक सिर्फ चर्चा ही होती रही, लेकिन इस सरकार ने इसे पूरे त्रिपुरा और मेघालय सहित पूर्वोत्तर के एक बड़े हिस्से से वापस ले लिया। यह कानून अरुणाचल प्रदेश के सिर्फ तीन जिलों में लागू है, असम का 60 प्रतिशत हिस्सा अफ्स्पा से मुक्त है, छह जिलों के अंतर्गत 15 पुलिस थानों को अशांत क्षेत्र की श्रेणी से बाहर कर दिया गया है, सात जिलों में 15 पुलिस थानों से अशांत क्षेत्र अधिसूचना को हटा दिया गया है।

संकट में फंसे भारतीय लोगों का जीवन बचाना, सरकार का एक सबसे प्रमुख चिंता का विषय है और भारत पूरी दुनिया में बचाव अभियान चलाने के मामले में सबसे आगे रहा है-

1. फरवरी-मार्च 2022 में ऑपरेशन गंगा के तहत 22,500 नागरिकों को बचाया गया,
2. ऑपरेशन देवी शक्ति में अफगानिस्तान से 670 भारतीय नागरिकों को बचाया गया।
3. वर्ष 2021-22 में वंदे भारत मिशन के तहत, बचाव अभियानों की एक सबसे बड़ी सफलता में 1.83 करोड़ नागरिकों की कोविड-19 संकट के दौरान घर वापसी की गई।
4. भारत द्वारा चीन के वुहान से 654 लोगों को बचाया गया।

- भारत ने न केवल भारतीयों को बल्कि संकट में फंसे विदेशी नागरिकों के लिए भी मदद की पेशकश की।
- वर्ष 2016 में ऑपरेशन संकट मोचन के तहत दक्षिण सूडान से 2 नेपाली नागरिकों सहित 155 लोगों को देश में वापस लाया गया।
- ऑपरेशन मैत्री के दौरान नेपाल से 5,000 भारतीयों को बचाया गया
- नेपाल से ही 170 विदेशी नागरिकों का भी बचाव किया गया।
- ऑपरेशन राहत के तहत यमन से 1,962 विदेशी नागरिकों सहित 6,710 लोगों को बचाया गया।

भारत को अब एक ऐसे देश के रूप में देखा जा रहा है जो संकट के समय अन्य देशों को भी सभी प्रकार की सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहता है और आतंकवाद के खिलाफ मजबूती से कार्य करता है, जबकि एक पड़ोसी देश को केवल आतंकवाद को शरण देने वाले और हिंसा को बढ़ावा देने वाले देश के रूप में ही देखा जाता है। ▪

2022 में मध्यप्रदेश ने गढ़े अनेक कीर्तिमान

वर्ष 2022 में अक्टूबर माह की 11 तारीख मध्यप्रदेश के आध्यात्मिक धार्मिक परिदृश्य पर स्वर्ण अक्षरों में अंकित हुई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राज्य सरकार के प्रदेश की संस्कृति/ आध्यात्मिक वैभव की पुर्नस्थापना की मुहिम के अंतर्गत द्वादश ज्योर्तिलिंग में से एक महाकाल की नगरी उज्जयिनी में श्री महाकाल महालोक का शिवार्पण किया।

सात दशक के बाद भारत की धरती पर मध्यप्रदेश के कूनो पालपुर (जिला श्योपुर) अभयारण्य में अफ्रीकी चीतों का पुर्नस्थापन हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विशेष प्रयासों से मध्यप्रदेश को चीता स्टेट बनने का मौका मिला।

भगवान बिरसा मुण्डा की जन्म जयंती का दिन 15 नवम्बर 2022 को राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु जी की गरिमामय उपस्थिति में शहडोल के लालपुर गाँव में राज्य स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस समारोह में मध्यप्रदेश में पेसा एक्ट लागू किया गया। यह एक्ट लागू करके राज्य सरकार ने जनजातीय वर्ग के लोगों को जल, जंगल, जमीन पर उनके जायज हक दिलाने की ऐतिहासिक पहल की है।

वर्ष 2022 में मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन योजना, आजीविका मिशन, पीएम स्व-निधि योजना, मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ-विक्रेता योजना, संत रविदास स्व-रोजगार आदि योजनाओं में 31 लाख से अधिक स्व-रोजगार के नये अवसर सृजित किए गए। लगभग 20 हजार 500 करोड़ रूपए की ऋण सहायता स्वीकृत की गई।

- स्वामी विवेकानंद जी की जयंती से रोजगार दिवस का आयोजन प्रारंभ। हर माह करीब 2 लाख रोजगार के नए अवसर सृजित।
- स्टार्ट योर बिजनेस इन 30 डेज कार्यक्रम शुरू किया। कार्यक्रम में 8 विभागों की 44 सेवाएँ 30 दिन के भीतर प्रदाय की जा रही हैं। इनमें से 35 सेवाएँ डीम्ड अप्रूवल की श्रेणी में।
- पोषण आहार की नई व्यवस्था लागू पोषण आहार संयंत्रों का संचालन महिला स्व-सहायता समूहों समूहों को सौंपा। टर्न ओवर प्रतिवर्ष 750 करोड़।

सात दशक के बाद भारत की धरती पर मध्यप्रदेश के कूनो पालपुर (जिला श्योपुर) अभयारण्य में अफ्रीकी चीतों का पुर्नस्थापन हुआ। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विशेष प्रयासों से मध्यप्रदेश को चीता स्टेट बनने का मौका मिला।

भगवान बिरसा मुण्डा की जन्म जयंती का दिन 15 नवम्बर 2022 को राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु जी की गरिमामय उपस्थिति में शहडोल के लालपुर गाँव में राज्य स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस समारोह में मध्यप्रदेश में पेसा एक्ट लागू किया गया। यह एक्ट लागू करके राज्य सरकार ने जनजातीय वर्ग के लोगों को जल, जंगल, जमीन पर उनके जायज हक दिलाने की ऐतिहासिक पहल की है।

- आजीविका मार्ट पोर्टल से अब तक महिला स्व-सहायता समूहों द्वारा बनाए 531 करोड़ रूपये से अधिक के उत्पाद बिके।

महिलाओं के लिये पृथक से इंडस्ट्रियल कलस्टर

स्टार्ट-अप नीति 2022 लागू

- 21 से अधिक स्टार्ट-अप को सहायता स्वीकृत। प्रदेश में 2500 से अधिक स्टार्ट-अप्स और 30 से अधिक इन्क्यूबेटर्स कार्यरत।

मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना लागू

- 4 हजार से अधिक प्रकरणों में ऋण सहायता स्वीकृत।

लाड़ली लक्ष्मी योजना 2.0 की लांचिंग

- योजना के प्रभाव से बेटियों के प्रति बदला दृष्टिकोण और लिंगानुपात में हुआ सुधार। बाल विवाह में भी आई कमी। हर साल 2 मई को लाड़ली लक्ष्मी दिवस मनाने, प्रत्येक

शहर में लाड़ली लक्ष्मी पथ और लाड़ली लक्ष्मी वाटिका बनाने का निर्णय।
- मुख्यमंत्री कन्या विवाह एवं निकाह योजना का पुनः आरंभ
- आँगनवाड़ियों को सशक्त और बच्चों को कुपोषण मुक्त प्रदेश बनाने में जन-सहभागिता के लिए एडप्ट एन आँगनवाड़ी आभियान का संचालन जन-भागीदारी से 37 करोड़ से अधिक की नगद राशि एवं सामग्री हुई एकत्र।
- महिला स्व- सहायता समूहों को दिया 4 हजार करोड़ रूपये से अधिक का क्रेडिट लिंकेज
- 100 करोड़ रूपये के साथ मुख्यमंत्री नारी सम्मान कोष की स्थापना
- चाइल्ड बजटिंग शुरू करने वाला देश का पहला राज्य बना मध्यप्रदेश
- बच्चों के स्वास्थ्य और पोषण के लिये निःशुल्क मूंग वितरण शुरू
- प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना में मध्यप्रदेश, देश में नंबर वन
- अब तक 32 लाख 43 हजार से अधिक गर्भवती महिलाओं को 1370 करोड़ रूपये से अधिक की सहायता।
- एग्रीकल्चर इन्फ्रास्ट्रक्चर फंड में लगभग 3500 करोड़ के प्रकरण स्वीकृत कर मध्यप्रदेश देश में पहले स्थान पर।
- उद्यानिकी फसलों के क्षेत्रफल में वृद्धि मध्यप्रदेश संतरा, धनिया, मसाले, औषधीय एवं सुगंधित पौधों के उत्पादन में देश में नंबर वन बना।
- परम्परागत फसलों के स्थान पर लाभकारी फसलों के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए फसल विविधीकरण योजना लागू।
- प्राकृतिक खेती को मिशन मोड में बढ़ाया आगे, एक लाख 86 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में प्राकृतिक खेती के लिये 60 हजार से अधिक किसानों ने कराया पंजीयन।
- किसानों को देसी गाय पालन के लिये 900 रूपये का प्रतिमाह अनुदान।
- नरवई जलाने की प्रथा को हतोत्साहित करने 'फसल अवशेष प्रबंधन योजना' लागू। नरवई से भूसा तैयार करने की मशीन के लिये किसानों को अनुदान का प्रावधान।
- मध्यप्रदेश औषधीय पादप बोर्ड का हुआ गठन।
- मुख्यमंत्री राशन आपके ग्राम योजना 89 जनजातीय बहुल विकासखंडों में लागू कर 472 जनजातीय युवाओं को राशन वाहन के लिये 10 करोड़ 80 लाख रूपये से अधिक की सहायता दी गई।
- तेंदूपत्ता संग्रहण की दर बढ़ा कर 3 हजार रूपये मानक बोरा की गई।
- जनजातीय वर्ग, मछुआ, केश शिल्पी, महिला स्व-सहायता समूह और युवाओं के हित में विशेष सत्रों का आयोजन कर विचार-विमर्श।
- सिकलसेल मिशन प्रदेश के सभी 89 जनजातीय बहुल विकासखंडों में लागू कर 10 करोड़ रूपये का बजट प्रावधान।
- जनजातीय बहुल जिले श्योपुर और मंडला में नये मेडिकल कॉलेज स्वीकृत।
- भोपाल स्थित हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम रानी कमलापति और पातालपानी रेलवे स्टेशन का नामकरण जननायक टंटया भील स्टेशन किया गया।
- छिंदवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम राजा शंकर शाह विश्वविद्यालय किया गया।
- भू-माफियाओं के अवैध कब्जे वाली 23 हजार एकड़ भूमि अतिक्रमण से मुक्त कराई गई। मुक्त जमीन पर आवासहीन गरीबों को आवास देने के लिए सुराज कालोनियाँ बनाने का निर्णय।
- जोर-जबरदस्ती बहला-फुसला कर विवाह और धर्म परिवर्तन रोकने के लिए प्रदेश में धर्म स्वातंत्रय विधेयक हुआ लागू।
- मासूम बच्चियों के साथ दुष्कर्म के दोषियों को कानून में मृत्युदंड का प्रावधान।
- महिलाओं के विरूद्ध अपराधों के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति, हर जिले में एक महिला थाने की स्थापना। साथ ही ऊर्जा महिला, आपरेशन मुस्कान, पंख अभियान और गौरवी सेंटर का सफल संचालन।
- मध्यप्रदेश स्वामित्व योजना को लागू करने वाला पहला राज्य। योजना में 9 लाख 37 हजार से अधिक भू-अभिलेख वितरित।
- प्रदेश के 827 वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने का महत्वपूर्ण फैसला।
- सायबर तहसील की क्रांतिकारी अवधारणा लागू। राजस्व प्रकरणों के निराकरण की प्रक्रिया फेसलेस और पारदर्शी बनी।
- आजादी के अमृत महोत्सव में 9 करोड़ घनमीटर जल भंडारण क्षमता के 6 हजार से अधिक अमृत सरोवर का निर्माण।
- प्रदेश में सिंचाई के रकबे में आशातीत वृद्धि, सिंचाई परियोजनाओं पर हुआ तेजी से कार्य।
- जल संसाधन के बांधों की सुरक्षा के लिये बांध सुरक्षा संचालनालय स्थापित और डेम सेफ्टी रिव्यू पेनल का गठन।
- मध्यप्रदेश मत्स्य महासंघ मर्यादित को सर्वश्रेष्ठ महासंघ का राष्ट्रीय पुरस्कार।
- शहर और गाँव के गौरव दिवस मनाने की परम्परा शुरू की गई।
- जन-कल्याण के लिये 45 दिन का मुख्यमंत्री जन-सेवा अभियान संचालित कर विभिन्न योजनाओं में पात्र 83 लाख नये हितग्राही शामिल।
- पंचायत चुनाव में बना समरसता का नया रिकार्ड-780 से अधिक जन-प्रतिनिधि निर्विरोध निर्वाचित।
- भ्रष्टाचार के विरूद्ध जीरो टॉलरेंस नीति। लोक सेवा गारंटी कानून में 600 से अधिक सेवाएँ समय-सीमा में प्रदान करने की गारंटी, सीएम हेल्पलाइन के जरिये मुख्यमंत्री तक जनता की सीधी पहुँच, जन-सुनवाई, समाधान ऑनलाइन, सीएम जन-सेवा, समाधान एक दिवस आदि के माध्यम से लोकसेवाओं का प्रदाय और काम-काज की प्रभावी मॉनिटरिंग।
- सुशासन को और अधिक बेहतर बनाने के लिये आईटी का प्रभावी उपयोग।
- विभिन्न क्षेत्रों में मध्यप्रदेश के नागरिकों द्वारा अर्जित की जाने वाली असाधारण उपलब्धियों को पुरस्कृत करने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश गौरव सम्मान की स्थापना।
- मैदानी स्तर पर शासकीय योजनाओं/ कार्यक्रमों/ परियोजनाओं की मॉनिटरिंग के लिये मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा जिलेवार मॉर्निंग मीटिंग की शुरूआत।
- बिजली के उत्पादन में आत्म-निर्भरता के साथ निर्बाध आपूर्ति का बनाया रिकार्ड।
- घरेलू और औद्योगिक उपभोक्ताओं को 24 घंटे और कृषि उपभोक्ताओं को 10 घंटे नियमित बिजली का प्रदाय। घरेलू एवं कृषि उपभोक्ताओं को लगभग 22 हजार 400 करोड़ रूपये से अधिक की बिजली सब्सिडी।
- घरेलू उपभोक्ताओं को 100 यूनिट की खपत पर 643 रूपये के स्थान पर केवल 100 रूपये का बिल, 84 प्रतिशत दी गई सब्सिडी, 88 लाख उपभोक्ता लाभान्वित।
- नवकरणीय ऊर्जा में भी मध्यप्रदेश बना अग्रणी, 5 हजार 500 मेगावॉट हुई क्षमता।
- ओंकारेश्वर में 3500 करोड़ के निवेश से 600 मेगावॉट का देश के पहले फ्लोटिंग सोलर पॉवर प्लान्ट का कार्य शुरू।
- बिजली की बचत के लिये ऊर्जा साक्षरता अभियान - 11 लाख 61 हजार से अधिक नागरिकों की सहभागिता।
- मुख्यमंत्री तीर्थ-दर्शन योजना की फिर हुई शुरुआत, नये धार्मिक स्थलों को जोड़ा गया।
- उज्जैन स्थित श्री महाकाल महालोक से 5 जी की मध्यप्रदेश में ऐतिहासिक शुरूआत।
- ग्रामीण पर्यटन नीति को मूर्त रूप। विदिशा जिले में पायलेट प्रोजेक्ट से 76 मार्गों को

पर्यटन के माध्यम से रोजगार के अवसर बढ़ाने ग्राम -स्टे और होम-स्टे का नवाचार।

- जल जीवन मिशन में बेहतर कार्य करने और मिशन की राशि का व्यय करने में प्रथम राज्य। मिशन में अब तक 50 हजार करोड़ रूपये की लागत की नल-जल योजनाएँ स्वीकृत, 55 लाख 12 हजार से अधिक ग्रामीण परिवारों के घरों में नल से जल पहुँचा, 7100 से अधिक ग्राम हुए शत-प्रतिशत कवर।
- प्रदेश का बुरहानपुर जिला बना देश का पहला हर घर नल से जल प्रमाणित जिला।
- मध्यप्रदेश की विकास दर 19.74 फीसदी हुई, जो देश में सबसे ज्यादा है।
- राज्य की प्रति व्यक्ति आय बढ़ कर एक लाख 37 हजार रूपये हुई।
- भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थ-व्यवस्था बनाने में मध्यप्रदेश का 550 बिलियन डॉलर का योगदान देने का संकल्प। इस साल 48 हजार करोड़ रूपये से अधिक का पूँजीगत व्यय करने का लक्ष्य।
- शिक्षा के क्षेत्र में नई क्रांति - सर्व-सुविधा युक्त 350 सी.एम.राइज स्कूल।
- हिन्दी में मेडिकल की पढ़ाई करने वाला देश का पहला राज्य बना मध्यप्रदेश।
- रीवा-सीधी को जोड़ने वाली देश की सबसे लंबी 2280 मीटर टनल हुई शुरू।
- स्वास्थ्य संस्थाओं को सुविधायुक्त बनाने के लिए राज्य स्तरीय कायाकल्प अभियान का संचालन।
- साढ़े तीन करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाकर मध्यप्रदेश आयुष्मान योजना के कार्ड बनाने में देश में प्रथम।
- मध्यप्रदेश राज्य पिछड़ा वर्ग कल्याण आयोग का गठन। स्थानीय निकाय निर्वाचन 27 प्रतिशत आरक्षण के साथ हुए।
- पीएम स्व-निधि योजना के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश देश में प्रथम। पीएम स्व-निधि एवं मुख्यमंत्री ग्रामीण पथ-विक्रेता योजना को मिला कर 10 लाख से अधिक पथ विक्रेताओं को ब्याज मुक्त ऋण मुहैया।
- विभिन्न क्षेत्रों में मध्यप्रदेश के नागरिकों द्वारा अर्जित की जाने वाली असाधारण उपलब्धियों के लिये मध्यप्रदेश गौरव सम्मान की स्थापना।
- जनजातीय नायकों की प्रतिमाओं की स्थापना एवं उनके नाम पर संस्थाओं और अधो-संरचनाओं का नामकरण एवं गौरव यात्राओं का संचालन।
- गरीबों को नाममात्र की दर पर भरपेट भोजन सुलभ कराने के लिए दीनदयाल रसोई केंद्रों की संख्या 56 से बढ़ाकर 100 की गई। ▪

आओ, मन की गाँठें खोलें

अटल बिहारी वाजपेयी

यमुना तट, टीले रेतीले,
घास-फूस का घर डाँडे पर,
गोबर से लीपे आँगन में,
तुलसी का बिरवा, घण्टी स्वर,
माँ के मुँह से रामायण के दोहे-चौपाई रस घोलें!
आओ, मन की गाँठें खोलें!

बाबा की बैठक में बिछी
चटाई, बाहर रखे खड़ाऊँ,
मिलने वाले के मन में
असमंजस, जाऊँ या ना जाऊँ?
माथे तिलक, नाक पर ऐनक, पोथी खुली, स्वयं से बोलें!
आओ, मन की गाँठें खोलें!

सरस्वती की देख साधना,
लक्ष्मी ने संबंध न जोड़ा,
मिट्टी ने माथे का चंदन,
बनने का संकल्प न छोड़ा,
नये वर्ष की अगवानी में टुक रुक लें, कुछ ताजा हो लें!
आओ, मन की गाँठें खोलें!

जनता का भाजपा पर विश्वास: कैलाश विजयवर्गीय

प्रधानमंत्री जी की नीतियों के कारण जनता का भारतीय जनता पार्टी पर विश्वास बढ़ा है। प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की ऐसी योजनाएं हैं, जिनका अनुसरण अनेक राज्यों ने किया है। हमारे पास कार्यकर्ताओं का बूथ स्तर तक मजबूत तंत्र है।

इन सबके साथ हमारे सामने कुछ चुनौतियां हैं, जिन्हें हमें दूर करना है। सरकार की नीतियों एवं संगठन तंत्र की मजबूती के कारण आने वाले चुनाव में हमें 200 पार सीटें जीतने से कोई नहीं रोक सकता।

हमारे पास दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी हैं, वहीं प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी जैसे नेता हैं। प्रधानमंत्री जी की नीतियों के कारण जनता का भारतीय जनता पार्टी पर विश्वास बढ़ा है। प्रदेश में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की ऐसी योजनाएं हैं, जिनका अनुसरण अनेक राज्यों ने किया है। हमारे पास कार्यकर्ताओं का बूथ स्तर तक मजबूत तंत्र है। इन सबके साथ हमारे सामने कुछ चुनौतियां हैं, जिन्हें हमें दूर करना है। सरकार की नीतियों एवं संगठन तंत्र की मजबूती के कारण आने वाले चुनाव में हमें 200 पार सीटें जीतने से कोई नहीं रोक सकता। हम सिर्फ चुनाव लड़ने के लिए काम नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपनी विचार धारा को आगे बढ़ाने के लिए काम कर रहे हैं। हम लोकसभा में 56 प्रतिशत वोट लाए हैं आने वाले चुनाव में भी वोट शेयर के लक्ष्य को पूरा करेंगे।

बूथ स्तर तक आयोजित हों पार्टी के कार्यक्रम- हितानंद जी

पार्टी के कार्यक्रम बूथ स्तर तक आयोजित हों, इसकी कार्ययोजना पर हमें काम करना है। मण्डल स्तर पर बैठकें आयोजित होगी, वहीं प्रदेश के सभी शक्ति केन्द्रों पर एक साथ बैठक होगी, जिनमें बूथ अध्यक्ष और शक्ति केन्द्रों की टोली भाग लेगी। आगामी समय में प्रबुद्ध जनों के सम्मेलन सेवा बस्तियों में स्नेह यात्रा और स्कॉलरशिप प्राप्त करने वालों को जोड़ने का अभियान भी चलेगा। पंचायत स्तर तक प्रधानमंत्री आवास योजना के हितग्राहियों के कार्यक्रम होंगे। जी-20 की अध्यक्षता भारत को मिलना हमारे लिए गौरव का क्षण है। हमारा सौभाग्य है कि जी-20 की दो बैठकें इंदौर और खजुराहो में आयोजित होंगी। इन बैठकों के आयोजन के दो सप्ताह पूर्व प्रदेश भर में स्वच्छता अभियान के कार्यक्रम होंगे। ▪

मोदी सरकार से हो रहा देश का कायाकल्प

अमित शाह

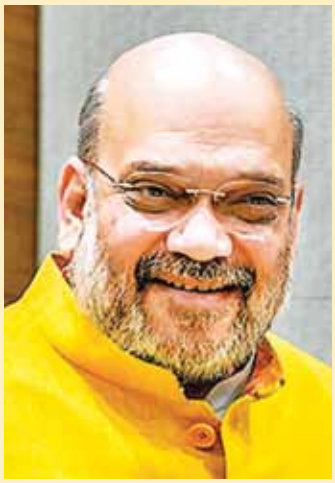

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पिछले आठ वर्षों में देश में भ्रष्टाचार मुक्त सरकार दी है। श्री नरेन्द्र मोदी सरकार सत्ता का सुख भोगने के लिए नहीं बल्कि देश का कायाकल्प करने के लिए आई है। सुशासन का अर्थ सभी के लिए सभी क्षेत्रों में समावेशी विकास के दृष्टिकोण के साथ पारदर्शी सरकार है। मोदी सरकार इसी लक्ष्य के साथ देश का कायाकल्प करने की दिशा में आगे बढ़ रही है। इसके अन्तर्गत लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करते हुए शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों का विकास किया जा रहा है।

नीतियों के कार्यान्वयन और प्रशासन में प्रौद्योगिकी के उपयोग से ही सुशासन मिल सकता है। नागरिकों की समस्याओं के निराकरण के लिए ऐसी नीतियां और कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए जिससे उन समस्याओं को जड़ से समाप्त किया जा सके। श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने दो करोड़ से अधिक लोगों को घर उपलब्ध कराये हैं। हर घर में बिजली और शौचालय उपलब्ध कराने का काम पूरा हो चुका है। ▪

G-20 को जन-आंदोलन बनाना है हर क्षेत्र में भारत का दमखम

अतीत का अवलोकन तो हमेशा हमें वर्तमान और भविष्य की तैयारियों की प्रेरणा देता है। 2022 में देश के लोगों का सामर्थ्य, उनका सहयोग, उनका संकल्प, उनकी सफलता का विस्तार इतना ज्यादा रहा कि 'मन की बात' में सभी को समेटना मुश्किल होगा। 2022 वाकई कई मायनों में बहुत ही प्रेरक रहा, अद्भुत रहा। इस साल भारत ने अपनी आजादी के 75 वर्ष पूरे किये और इसी वर्ष अमृतकाल का प्रारंभ हुआ। इस साल देश ने नई रफ्तार पकड़ी, सभी देशवासियों ने एक से बढ़कर एक काम किया। 2022 की विभिन्न सफलताओं ने, आज, पूरे विश्व में भारत के लिए एक विशेष स्थान बनाया है।

- 2022 यानि भारत द्वारा दुनिया की पाँचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था का मुकाम हासिल करना।
- 2022 यानि भारत द्वारा 220 करोड़ vaccine का अविश्वसनीय आंकड़ा पार करने का रिकॉर्ड।
- 2022 यानि भारत द्वारा निर्यात का 400 Billion Dollar का जादुई आंकड़ा पार कर जाना।
- 2022 यानि देश के जन-जन द्वारा 'आत्मनिर्भर भारत' के संकल्प को अपनाना, जी कर दिखाना।
- 2022 यानि भारत के पहले स्वदेशी Aircraft Carrier INS Vikrant का स्वागत।
- 2022 यानि Space, Drone और Defence Sector में भारत का परचम।
- 2022 यानि हर क्षेत्र में भारत का दमखम।
- खेल के मैदान में भी, चाहे, Common wealth Games हो, या हमारी महिला हॉकी टीम की जीत, हमारे युवाओं ने जबरदस्त सामर्थ्य दिखाया।
- इन सबके साथ ही साल 2022 एक और कारण से हमेशा याद किया जाएगा। ये है, 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना का विस्तार।

देश के लोगों ने एकता और एकजुटता को celebrate करने के लिए भी कई अद्भुत आयोजन किए। गुजरात का माधवपुर मेला हो, जहाँ, रुक्मिणी विवाह और भगवान कृष्ण के पूर्वोत्तर से संबंधों को celebrate किया जाता है या फिर काशी-तमिल संगमम् हो, इन पर्वों में भी एकता के कई रंग दिखे।

World Ayurveda Congress गोवा में 40 से ज्यादा देशों के Delegates शामिल हुए और यहां 550 से अधिक Scientific Papers present किये गए। भारत सहित दुनियाभर की करीब 215 कंपनियों ने यहाँ Exhibition में अपने products को display किया।

चार दिनों तक चले इस Expo में एक लाख से भी अधिक लोगों ने आयुर्वेद से जुड़े अपने Experience को Enjoy किया। आयुर्वेद कांग्रेस में भी मैंने दुनिया भर से जुटे आयुर्वेद Experts के सामने Evidence based research का आग्रह दोहराया। जिस तरह कोरोना वैश्विक महामारी के इस समय में योग और आयुर्वेद की शक्ति को हम सभी देख रहे हैं, उसमें इनसे जुड़ी Evidence-based research बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगी।

2022 में देशवासियों ने एक और अमर इतिहास लिखा है। अगस्त के महीने में चला 'हर घर तिरंगा' अभियान भला कौन भूल सकता है। वो पल थे हर देशवासी के रौंगटे खड़े हो जाते थे। आजादी के 75 वर्ष के इस अभियान में पूरा देश तिरंगामय हो गया। 6 करोड़ से ज्यादा लोगों ने तो तिरंगे के साथ Selfie भी भेजीं। आजादी का ये अमृत महोत्सव अभी अगले साल भी ऐसे ही चलेगा - अमृतकाल की नींव को और मजबूत करेगा।

इस साल भारत को G-20 समूह की अध्यक्षता की जिम्मेदारी भी मिली है।

साल 2023 में हमें G-20 के उत्साह को नई ऊँचाई पर लेकर जाना है, इस आयोजन को एक जन-आंदोलन बनाना है।

हम सभी के श्रद्धेय श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्मदिन भी है। वे एक महान राजनेता थे, जिन्होनें देश को असाधारण नेतृत्व दिया। हर भारतवासी के हृदय में उनके लिए एक खास स्थान है। मुझे कोलकाता से आस्था जी का एक पत्र मिला है। इस पत्र में उन्होंने

हाल की अपनी दिल्ली यात्रा का जिक्र किया है। वे लिखती हैं कि इस दौरान उन्होंने PM Museum देखने के लिए समय निकाला। इस Museum में उन्हें अटल जी की Gallery खूब पसंद आई। अटल जी के साथ वहाँ खिंची गई तस्वीर तो उनके लिए यादगार बन गई है। अटल जी की गैलरी में, हम, देश के लिए उनके बहुमूल्य योगदान की झलक देख सकते हैं। Infrastructure हो, शिक्षा या फिर विदेश नीति, उन्होंने भारत को हर क्षेत्र में नई ऊँचाइयों पर ले जाने का काम किया।

26 दिसम्बर को 'वीर बाल दिवस' है देश, साहिबजादे और माता गुजरी के बलिदान को हमेशा याद रखेगा।

हमारे यहां कहा जाता है -

सत्यम किम प्रमाणम,

प्रत्यक्षम किम प्रमाणम।

यानि सत्य को प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती, जो प्रत्यक्ष है, उसे भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती। लेकिन बात जब आधुनिक Medical Science की हो, तो उसमें सबसे महत्वपूर्ण होता है - प्रमाण- Evidence. सदियों से भारतीय जीवन का हिस्सा रहे योग और आयुर्वेद जैसे हमारे शास्त्रों के सामने Evidence based research की कमी, हमेशा-हमेशा एक चुनौती रही है - परिणाम दिखते हैं, लेकिन प्रमाण नहीं होते हैं। लेकिन, Evidence- based medicine के युग में, अब योग और आयुर्वेद, आधुनिक युग की जाँच और कसौटियों पर भी खरे उतर रहे हैं। आप सभी ने मुंबई के Tata Memorial centre के बारे में जरूर सुना होगा। इस संस्थान ने Research, Innovation और Cancer care में बहुत नाम कमाया है। इस Centre द्वारा की गई एक Intensive Research में सामने आया है कि Breast (ब्रेस्ट) Cancer के मरीजों के लिए योग बहुत ज्यादा असरकारी है। Tata Memorial Centre ने अपनी Research के नतीजों को अमेरिका में हुई बहुत ही प्रतिष्ठित, Breast cancer conference में प्रस्तुत किया है। इन नतीजों ने दुनिया के बड़े-बड़े Experts का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। क्योंकि, Tata Memorial centre ने Evidence के साथ बताया है कि कैसे मरीजों को योग से लाभ हुआ है। इस centre की research के मुताबिक, योग के नियमित अभ्यास से, Breast Cancer के मरीजों की बीमारी के, फिर से उभरने और मृत्यु के खतरे में,15 प्रतिशत तक की कमी आई है। भारतीय पारंपरिक चिकित्सा में यह पहला उदाहरण है,

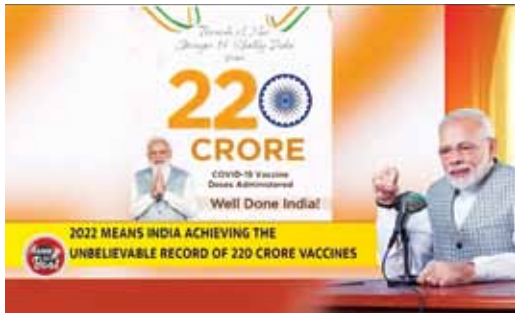

जिसे, पश्चिमी तौर-तरीकों वाले कड़े मानकों पर परखा गया है। साथ ही, यह पहली study है, जिसमें Breast Cancer से प्रभावित महिलाओं में, योग से, Quality of life के बेहतर होने का पता चला है। इसके long term benefits भी सामने आये हैं। Tata Memorial Centre ने अपनी study के नतीजों को पेरिस में हुए European Society of Medical Oncology (ऑन्कोलॉजी) में, उस सम्मेलन में, प्रस्तुत

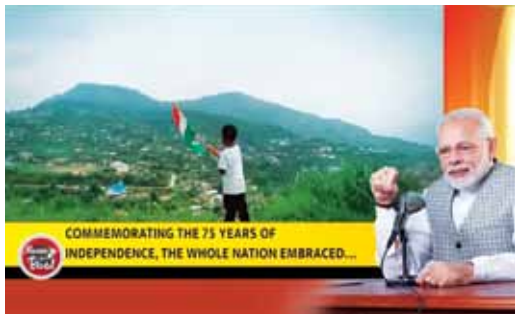

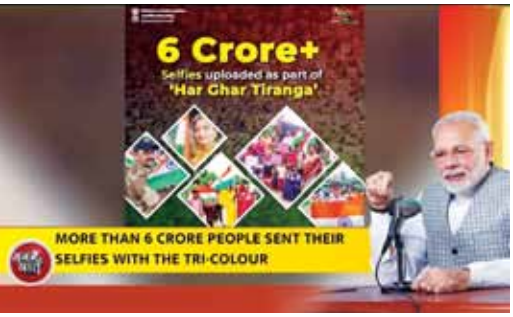

किया है।

आज के युग में, भारतीय चिकित्सा पद्तियो, जितनी ज्यादा Evidence-based होंगी, उतनी ही पूरे विश्व में उनकी स्वीकार्यता, बढ़ेगी। इसी सोच के साथ, दिल्ली के AIIMS में भी एक प्रयास किया जा रहा है। यहाँ, हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्तियों को validate करने लिए छह साल पहले Centre for Integrative Medicine and Research की स्थापना की गई। इसमें Latest Modern Techniques और

जब हमारी संकल्प शक्ति मजबूत हो, तो, बड़ी से बड़ी चुनौती भी आसान हो जाती है। इसकी मिसाल पेश की है - सिक्किम के थेगू गाँव के 'संगे शेरपा जी' ने।

ये पिछले 14 साल से 12,000 फीट से भी ज्यादा की ऊँचाई पर पर्यावरण संरक्षण के काम में जुटे हुए हैं। संगे जी ने सांस्कृतिक और पौराणिक महत्व का Tsomgo (सोमगो) lake को स्वच्छ रखने का बीड़ा उठा लिया है।

Research Methods का उपयोग किया जाता है। यह centre पहले ही प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय journals में 20 papers प्रकाशित कर चुका है। American college of Cardiology के journal में प्रकाशित एक paper में syncope (सिन्कपी) से पीड़ित मरीजों को योग से होने वाले लाभ के बारे में बताया गया है। इसी प्रकार, Neurology Journal के paper में, Migraine में, योग के फायदों के बारे में बताया गया है। इनके अलावा कई और बीमारियों में भी योग के benefits को लेकर study की जा रही है। जैसे Heart Disease, Depression, Sleep Disorder और Pregnancy के दौरान महिलाओं को होने वाली समस्यायें।

World Ayurveda Congress गोवा में 40 से ज्यादा देशों के Delegates शामिल हुए और यहां 550 से अधिक Scientific Papers present किये गए। भारत सहित दुनियाभर की करीब 215 कंपनियों ने यहाँ Exhibition में अपने products को display किया। चार दिनों तक चले इस Expo में एक लाख से भी अधिक लोगों ने आयुर्वेद से जुड़े अपने Experience को Enjoy किया। आयुर्वेद कांग्रेस में भी मैंने दुनिया भर से जुटे आयुर्वेद Experts के सामने Evidence based research का आग्रह दोहराया। जिस तरह कोरोना वैश्विक महामारी के इस समय में योग और आयुर्वेद की शक्ति को हम सभी देख रहे हैं, उसमें इनसे जुड़ी Evidence- based research बहुत ही महत्वपूर्ण साबित होगी। आपसे भी आग्रह है कि योग, आयुर्वेद और हमारी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों से जुड़े हुए

ऐसे प्रयासों के बारे में अगर आपके पास कोई जानकारी हो तो उन्हें सोशल मीडिया पर जरुर शेयर करें।

बीते कुछ वर्षों में हमने स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ी कई बड़ी चुनौतियों पर विजय पाई है। इसका पूरा श्रेय हमारे Medical Experts, Scientists और देशवासियों की इच्छाशक्ति को जाता है। हमने भारत से Smallpox, Polio और 'Guinea Worm' जैसी बीमारियों को समाप्त करके दिखाया है।

एक और चुनौती, जो अब, समाप्त होने की कगार पर है। ये चुनौती, ये बीमारी है - 'कालाजार'। इस बीमारी का परजीवी, Sand Fly यानि बालू मक्खी के काटने से फैलता है। जब किसी को 'कालाजार' होता है तो उसे महीनों तक बुखार रहता है, खून की कमी हो जाती है, शरीर कमजोर पड़ जाता है और वजन भी घट जाता है। यह बीमारी, बच्चों से लेकर बड़ों तक किसी को भी हो सकती है। लेकिन सबके प्रयास से, 'कालाजार' नाम की ये

बीमारी, अब, तेजी से समाप्त होती जा रही है। कुछ समय पहले तक, कालाजार का प्रकोप, 4 राज्यों के 50 से अधिक जिलों में फैला हुआ था। लेकिन अब ये बीमारी, बिहार और झारखंड के 4 जिलों तक ही सिमटकर रह गई है। विश्वास है, बिहार-झारखंड के लोगों का सामर्थ्य, उनकी जागरूकता, इन चार जिलों से भी 'कालाजार' को समाप्त करने में सरकार के प्रयासों को मदद करेगी। 'कालाजार' प्रभावित क्षेत्रों के लोगों से भी मेरा आग्रह है कि वो दो बातों का जरूर ध्यान रखें। एक है - Sand Fly या बालू मक्खी पर नियंत्रण, और दूसरा, जल्द से जल्द इस रोग की पहचान और पूरा इलाज। 'कालाजार' का इलाज आसान है, इसके लिए काम आने वाली दवाएं भी बहुत कारगर होती हैं। बस, आपको सतर्क रहना है। बुखार हो तो लापरवाही ना बरतें, और, बालू मक्खी को खत्म करने वाली दवाइयों का छिड़काव भी करते रहें। जरा सोचिए, हमारा देश जब 'कालाजार' से भी मुक्त हो जाएगा,

तो ये हम सभी के लिए कितनी खुशी की बात होगी। सबका प्रयास की इसी भावना से, हम, भारत को 2025 तक टी.बी. मुक्त करने के लिए भी काम कर रहे हैं। आपने देखा होगा, बीते दिनों, जब, टी.बी. मुक्त भारत अभियान शुरू हुआ, तो हजारों लोग, टी.बी. मरीजों की मदद के लिए आगे आए। ये लोग निक्षय मित्र बनकर, टी.बी. के मरीजों की देखभाल कर रहे हैं, उनकी आर्थिक मदद कर रहे हैं। जनसेवा और जनभागीदारी की यही शक्ति, हर मुश्किल लक्ष्य को प्राप्त करके ही दिखाती है।

हमारी परंपरा और संस्कृति का माँ गंगा से अटूट नाता है। गंगा जल हमारी जीवनधारा का अभिन्न हिस्सा रहा है और हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है:-

नमामि गंगे तव पाद पंकजं,
सुर असुरैः वन्दित दिव्य रूपम्।
भुक्तिम् च मुक्तिम् च ददासि नित्यम्,
भाव अनुसारेण सदा नराणाम्।।

अर्थात हे माँ गंगा! आप, अपने भक्तों को, उनके भाव के अनुरूप- सांसारिक सुख, आनंद और मोक्ष प्रदान करती हैं। सभी आपके पवित्र चरणों का वंदन करते हैं। मैं भी आपके पवित्र चरणों में अपना प्रणाम अर्पित करता हूं। ऐसे में सदियों से कल-कल बहती माँ गंगा को स्वच्छ रखना हम सबकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इसी उद्देश्य के साथ, आठ साल पहले, 'नमामि गंगे अभियान' की शुरुआत की थी। सभी के लिए यह गौरव की बात है, कि, भारत की इस पहल को, आज, दुनिया भर की सराहना मिल रही है। United Nations ने 'नमामि गंगे' मिशन को Ecosystem को Restore करने वाले दुनिया के Top Ten Initiatives में शामिल किया है। ये और भी खुशी की बात है कि पूरे विश्व के 160 ऐसे Initiatives में 'नमामि गंगे' को यह सम्मान मिला है।

'नमामि गंगे' अभियान की सबसे बड़ी ऊर्जा, लोगों की निरंतर सहभागिता है। 'नमामि गंगे' अभियान में, गंगा प्रहरियों और गंगा दूतों की भी बड़ी भूमिका है। वे पेड़ लगाने, घाटों की सफाई, गंगा आरती, नुक्कड़ नाटक, पेंटिंग और कविताओं के जरिए जागरूकता फैलाने में जुटे हैं। इस अभियान से Biodiversity में भी काफी सुधार देखा जा रहा है। हिल्सा मछली, गंगा डॉल्फिन और कछुवों की विभिन्न प्रजातियों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। गंगा का Ecosystem clean होने से, आजीविका के अन्य अवसर भी बढ़ रहे हैं। यहाँ मैं, 'जलज आजीविका मॉडल' की चर्चा करना चाहूंगा, जो कि Biodiversity को ध्यान में रख कर तैयार किया गया है। इस Tourism-based Boat Safaris को

26 Locations पर Launch किया गया है। जाहिर है, 'नमामि गंगे' मिशन का विस्तार, उसका दायरा, नदी की सफाई से कहीं ज्यादा बढ़ा है। ये, जहाँ, हमारी इच्छाशक्ति और अथक प्रयासों का एक प्रत्यक्ष प्रमाण है, वहीं, ये, पर्यावरण संरक्षण की दिशा में विश्व को भी एक नया रास्ता दिखाने वाला है।

जब हमारी संकल्प शक्ति मजबूत हो, तो, बड़ी से बड़ी चुनौती भी आसान हो जाती है। इसकी मिसाल पेश की है - सिक्किम के थेगू

गाँव के 'संगे शेरपा जी' ने। ये पिछले 14 साल से 12,000 फीट से भी ज्यादा की ऊँचाई पर पर्यावरण संरक्षण के काम में जुटे हुए हैं। संगे जी ने सांस्कृतिक और पौराणिक महत्व का Tsomgo (सोमगो) lake को स्वच्छ रखने का बीड़ा उठा लिया है। अपने अथक प्रयासों से उन्होंने इस ग्लेशियर लेक का रंग रूप ही बदल डाला है। साल 2008 में संगे शेरपा जी ने जब स्वच्छता का यह अभियान शुरू किया था, तब उन्हें, कई मुश्किलों का सामना

करना पड़ा। लेकिन देखते ही देखते उनके इस नेक कार्यों में युवाओं और ग्रामीणों के साथ ही पंचायत का भी भरपूर सहयोग मिलने लगा। आज आप अगर Tsomgo (सोमगो) lake को देखने जाएंगे तो वहां चारों ओर आपको बड़े-बड़े Garbage Bins मिलेंगे। अब यहां जमा हुए कूड़े-कचरे को Recycling के लिए भेजा जाता है। यहां आने वाले पर्यटकों को कपड़े से बने Garbage Bags भी दिए जाते हैं ताकि कूड़ा-कचरा इधर-उधर न फैंके। अब बेहद साफ-सुथरी हो चुकी इस झील को देखने हर साल करीब 5 लाख पर्यटक यहां पहुंचते हैं। Tsomgo (सोमगो) lake के संरक्षण के इस अनूठे प्रयास के लिए संगे शेरपा जी को कई संस्थाओं ने सम्मानित भी किया है। ऐसी ही कोशिशों की बदौलत आज सिक्किम की गिनती भारत के सबसे स्वच्छ राज्यों में होती है।

'स्वच्छ भारत मिशन' आज हर भारतीय के मन में रच-बस चुका है। साल 2014 में इस जन आंदोलन के शुरू होने के साथ ही, इसे, नयी ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए, लोगों ने, कई अनूठे प्रयास किये हैं और ये प्रयास सिर्फ समाज के भीतर ही नहीं बल्कि सरकार के भीतर भी हो रहे हैं। लगातार इन प्रयासों का परिणाम यह है - कूड़ा कचरा हटने के कारण, बिन जरुरी सामान हटने के कारण, दफ्तरों में काफी जगह खुल जाती है, नया space मिल जाता है। पहले, जगह के आभाव में दूर-दूर किराये पर दफ्तर रखने पड़ते थे। इन दिनों ये साफ-सफाई के कारण इतनी जगह मिल रही है, कि, अब, एक ही स्थान पर सारे दफ्तर बैठ रहें हैं। पिछले दिनों सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने भी मुंबई में, अहमदाबाद में, कोलकता में, शिलांग में, कई शहरों में अपने दफ्तरों में भरपूर प्रयास किया और उसके कारण आज उनको दो-दो, तीन-तीन मंजिलें, पूरी तरह से नये सिरे से काम में आ सके, ऐसी उपलब्ध हो गई। ये अपने आप में स्वच्छता के कारण हमारे संसाधनों का optimum utilizations का उत्तम अनुभव आ रहा है। समाज में भी, गाँव-गाँव, शहर-शहर में भी, उसी प्रकार से दफ्तरों में भी, ये अभियान, देश के लिए भी हर प्रकार से उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

हमारे देश में अपनी कला-संस्कृति को लेकर एक नई जागरूकता आ रही है, एक नई चेतना जागृत हो रही है। 'मन की बात' में, हम, अक्सर ऐसे उदाहरणों की चर्चा भी करते हैं। जैसे कला, साहित्य और संस्कृति समाज की सामूहिक पूंजी होते हैं, वैसे ही इन्हें, आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी भी पूरे समाज की होती है। ऐसा ही एक सफल प्रयास लक्षद्वीप में हो

'स्वच्छ भारत मिशन' आज हर भारतीय के मन में रच-बस चुका है। साल 2014 में इस जन आंदोलन के शुरू होने के साथ ही, इसे, नयी ऊँचाइयों पर ले जाने के लिए, लोगों ने, कई अनूठे प्रयास किये हैं और ये प्रयास सिर्फ समाज के भीतर ही नहीं बल्कि सरकार के भीतर भी हो रहे हैं।

रहा है। यहां कल्पेनी द्वीप पर एक क्लब है - कू मेल ब्रदर्स चैलेंजर्स क्लब। ये क्लब युवाओं को स्थानीय संस्कृति और पारंपरिक कलाओं के संरक्षण के लिए प्रेरित करता है। यहाँ युवाओं को लोकल आर्ट कोलकली, परीचाकली, किलिप्पाट्ट और पारंपरिक गानों की ट्रेनिंग दी

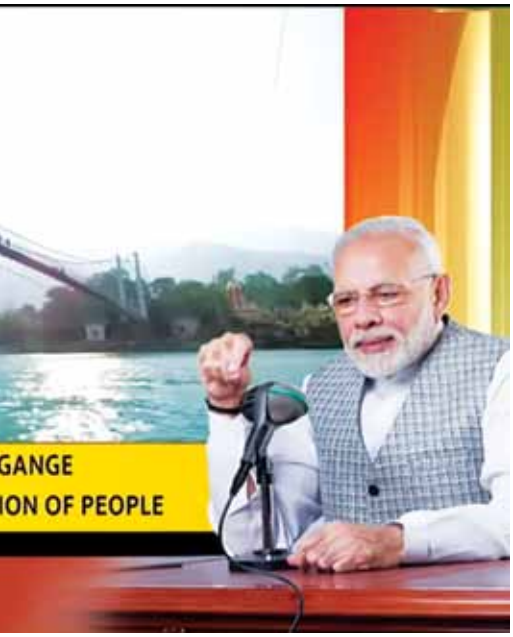

जाती है। यानि पुरानी विरासत, नई पीढ़ी के हाथों में सुरक्षित हो रही है, आगे बढ़ रही है इस प्रकार के प्रयास देश में ही नहीं विदेश में भी हो रहे हैं। हाल ही में दुबई से खबर आई कि वहाँ के कलारी club ने Guinness Book of World Records में नाम दर्ज किया है। कोई भी सोच सकता है कि दुबई के club ने Record बनाया तो इसमें भारत से क्या संबंध? दरअसल, ये record, भारत की प्राचीन मार्शल आर्ट कलारीपयट्टू से जुड़ा है। ये record एक साथ सबसे अधिक लोगों के द्वारा कलारी के प्रदर्शन का है। कलारी club दुबई ने, दुबई पुलिस के साथ मिलकर ये plan किया और UAE के National Day में प्रदर्शित किया।

इस आयोजन में 4 साल के बच्चों से लेकर 60 वर्ष तक के लोगों ने कलारी की अपनी क्षमता का बेहतरीन प्रदर्शन किया। अलग-अलग पीढ़ियां कैसे एक प्राचीन परम्परा को आगे बढ़ा रही है, पूरे मनोयोग से बढ़ा रही है,

ये उसका अदभुत उदाहरण है।

'मन की बात' के श्रोताओं को मैं कर्नाटका के गडक जिले में रहने वाले 'क्वेमश्री' जी के बारे में भी बताना चाहता हूँ। 'क्वेमश्री' दक्षिण में कर्नाटका की कला-संस्कृति को पुनर्जीवित करने के mission में पिछले 25 वर्षों से अनवरत लगे हुए हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि उनकी तपस्या कितनी बड़ी है। पहले तो वो Hotel Management के profession से जुड़े थे। लेकिन, अपनी संस्कृति और परम्परा को लेकर उनका लगाव इतना गहरा था कि उन्होंने इसे अपना Mission बना लिया। उन्होंने 'कला चेतना' के नाम से एक मंच बनाया। ये मंच, आज कर्नाटका के, और देश-विदेश के कलाकारों के, कई कार्यक्रम आयोजित करता है। इसमें local art और culture को promote करने के लिए कई innovative काम भी होते हैं।

अपनी कला-संस्कृति के प्रति देशवासियों का ये उत्साह 'अपनी विरासत पर गर्व' की भावना का ही प्रकटीकरण है। हमारे देश में तो हर कोने में ऐसे कितने ही रंग बिखरे हैं। हमें भी उन्हें सजाने- सवाँरने और संरक्षित करने के लिए निरंतर काम करना चाहिए।

देश के अनेक क्षेत्र में बांस से अनेक सुन्दर और उपयोगी चीजें बनाई जाती हैं। विशेष रूप से आदिवासी क्षेत्रों में बांस के कुशल कारीगर, कुशल कलाकार हैं। जब से देश ने बैम्बू से जुड़े अंग्रेजों के जमाने के कानूनों को बदला है, इसका एक बड़ा बाजार तैयार हो गया है। महाराष्ट्र के पालघर जैसे क्षेत्रों में भी आदिवासी समाज के लोग बैम्बू से कई खूबसूरत Products बनाते हैं। बैम्बू से बनने वाले Boxes, कुर्सी, चायदानी, टोकरियाँ, और ट्रे जैसी चीजें खूब लोकप्रिय हो रही हैं। यही नहीं, ये लोग बैम्बू घास से खूबसूरत कपड़े और सजावट की चीजें भी बनाते हैं। इससे आदिवासी महिलाओं को रोजगार भी मिल रहा है, और उनके हुनर को पहचान भी मिल रही है।

कर्नाटक के एक दंपति सुपारी के रेशे से बने कई unique products international market तक पहुँचा रहे हैं। कर्नाटक में शिवमोगा के ये दम्पति हैं - श्रीमान सुरेश और उनकी पत्नी श्रीमती मैथिली। ये लोग सुपारी के रेशे से tray, plate और handbag से लेकर कई decorative चीजें बना रहे हैं। इसी रेशे से बनी चप्पलें भी आज खूब पसंद की जा रही हैं। उनके products आज लंदन और यूरोप के दूसरे बाजारों तक में बिक रहे हैं। यही तो हमारे प्राकृतिक संसाधनों और पारंपरिक हुनर की खूबी है, जो, सबको पसंद

आ रही है। भारत के इस पारंपरिक ज्ञान में दुनिया, sustainable future के रास्ते देख रही है। हमें, खुद भी इस दिशा में ज्यादा से ज्यादा जागरूक होने की जरुरत है। हम खुद भी ऐसे स्वदेशी और local product इस्तेमाल करें और दूसरों को भी ये उपहार में दें। इससे हमारी पहचान भी मजबूत होगी, स्थानीय अर्थव्यवस्था भी मजबूत होगी, और, बड़ी संख्या में, लोगों का भविष्य भी उज्जवल होगा। ▪

भारत को विश्वगुरु बनना है

सुबह की शांत वेला है। सदा की तरह मैं अपने भगवान् के साथ हूँ। मन को बेचैन करने वाले विचारों को बुझाने और ईश्वर के आगे दीये जलाने का प्रयास करती हूँ। आँखों के आगे धुँधलका घिर आता है। इस धुँधलके में देश को गलत दिशा में ले जाने वाले नेताओं की श्रृंखला उभरती है। पिछले दिनों उजागर हुए उच्च पदों पर आसीन, भ्रष्टाचार में आकंठ डूबे हुए लोगों के चेहरे हैं। घोटाले ही घोटाले परदा उठ रहा है।

मन के बैचेन क्षण में ही वह शाश्वत पंक्ति कौंधती है 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।' लेकिन परिश्रम वाला फल की आशा न करे, यह बात मन को जँचती नहीं थी। पराभूतों का यह ध्येय वाक्य मेरे आहत मन को शांत नहीं कर पा रहा था। आखिर मैं एक कार्यकर्ता हूँ। हाड़मांस की बनी एक नारी हूँ। आजीवन मैंने फल की आशा रखी तो इसमें मैंने कुछ भी गलत नहीं किया। यह फल, यह सफलता मैंने केवल अपने लिए कब चाही थी। सौभाग्य से मुझे किसी बात की कोई कमी नहीं रही, मैं तो किसी और उद्देश्य के लिए लड़ रही थी। अपने सभी साथियों से कदम मिलाए मेरी सारी भागदौड़ और छटपटाहट केवल इसलिए थी कि दिग्भ्रमित शासकों द्वारा राष्ट्र व जनजीवन में तेजी के साथ होता जा रहा अधःपतन रोक सकूँ। अपने करोड़ों देशवासियों के बारे में मेरा सपना एकदम सामान्य है। मेरे देवता भी इसे जानते हैं। मैं तो उनसे दामन पसारे केवल इतना ही माँग रही थी कि इन करोड़ों जीवों को रोटी, कपड़ा और मकान की बुनियादी आवश्यकताओं के लिए किसी के सामने हाथ पसारने की नौबत न आए और मानव द्वारा मानव के लिए पैदा किए गए दुःखों का यथासंभव परिहार हो सके। इससे अधिक मैं कुछ भी नहीं माँग रही थी। इसी उद्देश्य से इतना सारा परिश्रम, इतनी दौड़धूप और इतना समर्पण करने के बाद थोड़े दिन के लिए ही सही, वह दिन भी देख लिया, जिससे मन को संतोष हुआ कि सपना पूरा हो सकता है। वह समय पुनः आएगा और युगों तक चलेगा। मेरे पास की पूँजी, इतना ही संतोष क्या कम है कि मैंने जीवन में कभी किसी को धोखा नहीं दिया है। लोगों को अनाप-शनाप आश्वासनों के सब्जबाग दिखाकर चुनाव नहीं जीते। मैं अपने आपको धन्य मानती हूँ कि मेरे हाथों लोगों का विश्वासघात कभी नहीं हुआ। बड़े शहरों में बसे झोंपड़पट्टी वालों की दुर्दशा का कारण मैं नहीं हूँ। दिल्ली के सिक्खों और पंजाब तथा कश्मीर के हिंदुओं का जीवन बिताने वाले लोगों को मैंने धोखा नहीं दिया है। गरीबी हटाने का जादू अपने पास होने का झूठा दावा कर मैंने किसी को नहीं भरमाया है। बड़े से बड़े घोटालों में मैं कहीं नहीं हूँ। सर्वत्र हिंसा, आतंक, अपहरण, लूट का वातावरण बनाने में मेरा कोई योगदान नहीं रहा है। मेरी इस आयु में यह संतोष धन क्या कम है।

आँखों के सामने घिर आया कुहासा छँट जाता है। आरती की ज्योति फिर से अपना प्रकाश फैलाने लगती है। मेरे देवताओं की मूर्तियाँ उस प्रकाश में फिर से देदीप्यमान हो उठती हैं। मन में उठे सारे संदेह, शंका व कुंठाएँ समाप्त हो जाती हैं। मैं आत्मचिंतन में विभोर हो जाती हूँ तो मुझे अपने भाग्य से ईर्ष्या होने लगती है। नाना खड्ग शमशेर जंगबहादुर राणा की दृढ़ता, पिता ठाकुर महेन्द्र सिंह की निस्पृहता और पति जिवाजीराव की दिलेरी मुझे विरासत में मिली है। यह त्रिवेणी संगम एक महान संस्कार धन के रूप में मुझे धरोहर के नाते मिला और वही मेरा पाथेय रहा है, बची हुई जिंदगी में भी रहेगा। शेष यात्रा भी उसी के सहारे चलती रहे, बस इससे अधिक मुझे कुछ और नहीं चाहिए; सचमुच में कुछ नहीं चाहिए। पुनः कर्तव्यपथ पर चलते रहने की प्रेरणा मिलती है। बचपन में ही मन मे एक प्रश्न उठा करता था 'मातृभूमि को गुलाम क्यों कहते हैं?' और इस प्रश्न के साथ मन पीड़ा से भर उठता था। ज्यों-ज्यों बड़ी होती गई, भारत माँ को स्वतंत्र कराने वाले आंदोलनकारियों ने प्रेरित किया। उनके संघर्ष ने मन को उद्वेलित किया। मातृभूमि को स्वतंत्र बनाना उनके लिए एक यज्ञ था। उस यज्ञ में समिधा बनने का भाव मन में घर करता गया। हिंदू दर्शन में जीवन ही एक यज्ञ है। छोटे यज्ञ से बड़े यज्ञ के लिए जीना भी यज्ञ ही है। इसलिए समाज हित में अपनी छोटी-सी जिंदगी का एक कदम भी उठे तो चिरंतन चलने वाले महायज्ञ में एक समिधा डालने के बराबर ही है। समाज शाश्वत है। समाज को दिशा देने में, उसकी दशा पर विचार करते रहने में मात्र तत्कालीन सरकार व शासन की भूमिका नहीं रहती रही है। यह संतों की भूमि है। समाज को अक्षुण्ण बनाए रखने में समय समय पर उन्होंने भी अपने जीवन की आहुति दी है। आठ सौ वर्षों तक विदेशी आक्रांताओं के प्रभाव में रहे भारत में समाज जीवन के मूल्यों के बीज तत्व को ऋषि मुनियों, संत महात्माओं और मठ आश्रमों ने ही सँभालकर रखा। पिछले सारे वर्षों से संघ परिवार की भूमिका भी इसी परंपरा को जीवित रखने का प्रयास है। अपने देश में वोट प्राप्ति का लोभ और कुरसी की खातिर राजनीतिज्ञ भी भ्रमित हुए हैं।

समाज की समरसता को जाति और धर्म के नाम पर छिन्नभिन्न करने, भोग के लिए जीने, व्यक्तिशः अपनी जिंदगी जीने के भाव घर करने लगे हैं। हिंदू जीवन पद्धति जीवन को समग्रता को देखने की है। 'ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' का आदर्श यहाँ नहीं चल सकता। जमाखोरी और भ्रष्टाचार बहुत दिनों तक नहीं चलेगा। ये स्थितियाँ सनातन हिंदू जीवनमूल्यों के विपरीत हैं। इसलिए समाज में कसमसाहट है। यह कसमसाहट की स्थिति समाप्त होगी। नजर के सामने संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार, गुरुजी गोलवलकर, बालासाहब देवरस की तस्वीर उभरती है। बालासाहब देवरस ने अपने जीतेजी अस्वस्थता की स्थिति में अपना उाराधिकारी नियुक्त कर दिया, नई परंपरा डाली। प्रसन्नता है कि संघ परिवार की राष्ट्रवादी विचारधारा को जनमानस स्वीकारने लगा है। इस विचारधारा को आज कोई चुनौती नहीं है। यह एक व्यापक अनुभूति बन रही है कि राष्ट्र अपनी जड़ों को नहीं छोड़ सकता। किसी भी विपरीत परिस्थिति में राष्ट्र एक होकर खड़ा हो जाएगा। महान् भारत की रचना, समृद्धिशाली भारत का सपना लेकर संघ परिवार आगे बढ़ रहा है। परिवार बृहत् से बृहत्तर होता जा रहा है। एक दिन भारत को पुनः विश्व गुरु बनना है। व्यक्ति जीवन में शुचिता, प्रशासकीय जीवन में पारदर्शिता, लोक जीवन में स्वावलंबन, समाज जीवन में समरसता के बिना हम लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते। **चरैवेति चरैवेति** संकल्प से राष्ट्र जीवन चिरंतन बना रहेगा। ▪

(पुस्तक राजपथ से लोकपथ से साभार)

11 सितम्बर 1893 :स्वामी विवेकानन्द द्वारा शिकागो की धर्मसभा में दिया गया ऐतिहासिक भाषण

अमेरिका निवासी बहनों और भाइयों! जिस सौहार्द और स्नेह से आपने हम लोगों का स्वागत किया है, उसके फलस्वरूप मेरा हृदय अकथनीय हर्ष से प्रफुल्लित हो रहा है। संसार के प्राचीन महर्षियों के नाम पर मैं आपको धन्यवाद देता हूँ तथा सब धर्मों की मातृस्वरूपा हिन्दू धर्म एवं भिन्न-भिन्न संप्रदायों के लाखों करोड़ों हिन्दुओं की ओर से भी आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं उन सज्जनों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ, जिन्होंने इस सभा मंच पर से प्राच्य-प्रतिनिधियों के संबंध में आपको यह बतलाया है कि ये दूर देश से आए विद्वान् सर्वत्र सहिष्णुता का भाव प्रसारित करते रहे हैं तथा इस कारण यश और गौरव के पात्र हैं।

मुझको ऐसे धर्मावलंबी होने का गौरव है, जिसने संसार को 'सहिष्णुता' तथा सब धर्मों को मान्यता प्रदान करने की शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर ग्रहण करते हैं। आपसे यह निवेदन करते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि मैं ऐसे धर्म का अनुयायी हूँ, जिसकी पवित्र भाषा संस्कृत में अंग्रेजी शब्द exclusion (बहिष्कार) का कोई पर्यायवाची शब्द ही नहीं है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी की समस्त पीड़ित और शरणागत जातियों तथा विभिन्न धर्मों के बहिष्कृत मतावलंबियों को आश्रय दिया है। मुझे यह बतलाते हुए गर्व हो रहा है कि जिस वर्ष यहूदियों का पवित्र मंदिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिला दिया गया, उसी वर्ष कुछ अभिजात यहूदी आश्रय लेने दक्षिण भारत में आए। हमारी जाति ने उन्हें अपनी छाती से लगाकर शरण दी। ऐसे धर्म में जन्म लेने का मुझे अभिमान है, जिसने पारसी जाति की रक्षा की और उसका पालन अब तक कर रहा है।

भाइयों, मैं आप लोगों को एक स्तोत्र के कुछ पद सुनाता हूँ, जिसे मैं अपने बचपन से गाता रहा हूँ और जिसे प्रतिदिन लाखों मनुष्य गाया करते हैं-

रूचीनां वैचित्र्येदृजुकुटिलनानापथजुषाम्।
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥
शिव महिम्न स्तोत्र

''जैसे विभिन्न नदियाँ भिन्न-भिन्न स्थानों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी प्रकार है प्रभो! भिन्न-भिन्न रुचि के अनुसार विभिन्न टेढ़े-मेढ़े अथवा सीधे रास्ते से जानेवाले लोग अंत में तुझमें आकर मिल जाते हैं।'' यह सभा संसार की अब तक की सर्वश्रेष्ठ सभाओं में से एक है। इस सभा के माध्यम से जगत् के लिए 'गीता' का यह उपदेश अत्यंत उपयुक्त है-

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम व्रत्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः॥
गीता, 4.11

''जो कोई मेरी ओर आता है- चाहे किसी रास्ते में हो- मैं उसे प्राप्त होता हूँ। लोग भिन्न-भिन्न मार्ग द्वारा प्रयत्न करते हुए अंत में मेरी ओर ही आते हैं।''

सांप्रदायिकता, संकीर्णता और इनसे उत्पन्न भयंकर धार्मिक उन्माद हमारी इस पृथ्वी पर काफी समय तक राज कर चुके हैं। इनके घोर अत्याचार से पृथ्वी थक गई है। इस उन्माद ने अनेक बार मानव रक्त से पृथ्वी को सींचा है, सभ्यताएँ नष्ट कर डाली हैं तथा समस्त जातियों को हताश कर डाला है। यदि यह सब न होता तो मानव समाज आज की अवस्था से कहीं अधिक उन्नत हो गया होता, पर अब उनका भी समय आ गया है और मेरा दृढ़ विश्वास है कि जो घंटे आज सुबह इस सभा के सम्मान के लिए बजाए गए, वे समस्त अत्याचारों तथा मानवों की पारस्परिक कटुताओं के लिए मृत्यु-नाद सिद्ध होंगे। ▪

मुझको ऐसे धर्मावलंबी होने का गौरव है, जिसने संसार को 'सहिष्णुता' तथा सब धर्मों को मान्यता प्रदान करने की शिक्षा दी है। हम लोग सब धर्मों के प्रति केवल सहिष्णुता में ही विश्वास नहीं करते, वरन् समस्त धर्मों को सच्चा मानकर ग्रहण करते हैं।

आपसे यह निवेदन करते हुए मुझे गर्व हो रहा है कि मैं ऐसे धर्म का अनुयायी हूँ, जिसकी पवित्र भाषा संस्कृत में अंग्रेजी शब्द exclusion (बहिष्कार) का कोई पर्यायवाची शब्द ही नहीं है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है, जिसने इस पृथ्वी की समस्त पीड़ित और शरणागत जातियों तथा विभिन्न धर्मों के बहिष्कृत मतावलंबियों को आश्रय दिया है।

क्रांतिकारी विचारों के प्रेरक थे लालाजी

लाहौर से लाला जी ने कानून की पढ़ाई पूरी की, उसके बाद उन्होंने लाहौर और हिसार में अपनी वकालत की प्रैक्टिस की। आपने राष्ट्रीय स्तर पर दयानंद वैदिक स्कूल की स्थापना की जहाँ वे दयानन्द सरस्वती जी के अनुयायी भी बने।

आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और उसके बाद उन्होंने कई सारे राजनैतिक अभियानों में हिस्सा लिया।

लाला लाजपत राय का जन्म 28 जनवरी 1865 को धड़िके ग्राम (मोगा जिला पंजाब) में अग्रवाल परिवार में हुआ था। 1870 के अंत और 1880 के प्रारंभ तक जहाँ उनके पिता उर्दू शिक्षक थे वहाँ से उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा रेवारी (तब का पंजाब, अभी का हरियाणा) के सरकारी उच्च माध्यमिक स्कूल से ग्रहण की।

लाला जी हिन्दुत्व से अत्यधिक प्रेरित थे, इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने राजनीति में जाने की सोची। लाहौर में कानून की पढ़ाई के दौरान उनके मन में ये भाव गहरा हो गया था कि हिन्दुत्वता सबसे महत्वपूर्ण है। लाला लाजपत राय जी प्रखर देशभक्त, आर्य समाजी, हिन्दुत्ववादी थे। वे इस विषय पर गहन भरोसा रखते थे, और हिन्दुत्व के माध्यम से ही भारत में शांति बनाये रखना चाहते थे और मानवता को बढ़ाना चाहते थे, ताकि भारतवासी आसानी से एक-दूसरे की मदद करते हुए, एक दूसरे पर भरोसा कर सके। इसका प्रमुख कारण उस समय की सामाजिक व्यवस्था में फैली भेदभाव व ऊँच-नीच का भाव था। लाला जी हिन्दुत्व के फैलाव के माध्यम से समाज में व्याप्त इन प्रथाओं की प्रणाली को ही बदलना चाहते थे। आज उनका ये प्रयास बहुत हद तक सफल हो रहा है। लाला जी आर्य समाज के भक्त थे जब वे विद्यार्थी थे तभी उन्होंने ''आर्य राजपत्र'' की स्थापना की, जिसके वे संपादक बने।

लाहौर से लाला जी ने कानून की पढ़ाई पूरी की, उसके बाद उन्होंने लाहौर और हिसार में अपनी वकालत की प्रैक्टिस की। आपने राष्ट्रीय स्तर पर दयानंद वैदिक स्कूल की स्थापना की जहाँ वे दयानन्द सरस्वती जी के अनुयायी भी बने। आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हुए और उसके बाद उन्होंने कई सारे राजनैतिक अभियानों में हिस्सा लिया। लाला जी की राजनीतिक सक्रियता से और उनका जनाधार देखकर 1907 में अचानक ही लाला जी को अंग्रेज सरकार ने निर्वासित कर मॉडले (बर्मा) भेज दिया, पर उनके खिलाफ वो किसी भी तरह के सबूत पेश न कर सकें फलतः वाइसराय लार्ड मिन्टो को उन्हें स्वदेश वापस भेजने का निर्णय करना पड़ा। लाला जी १९२० के विशेष कांग्रेस सेशन में कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। उनका ये नीति वाक्य सदैव रहा कि -

''मनुष्य अपने गुणों से आगे बढ़ता है, न कि दूसरों की कृपा से।''

इसीलिए हमेशा उन्होंने पूरी ताकत के साथ अपने काम को पूरा करने का प्रयास किया, उन्हीं की कोशिशों के फलस्वरूप बाद में स्वतंत्रता आन्दोलन ने विशाल रूप ले लिया। जिसका अंत भारत को स्वतंत्र राष्ट्र बनाकर हुआ।

1888 में लाला जी ने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की थी, पर वे कांग्रेस के नरमपंथी नेताओं और कांग्रेस की भिक्षा नीति से काफी असंतुष्ट थे। बाल गंगाधर तिलक के समान वे भी उग्र राष्ट्रवादिता के हिमायती थे, जल्द ही तिलक और विपिनचन्द्र पाल के साथ उन्होंने अपना गुट बना लिया, जिसे लाल-बाल-पाल के नाम से जाना गया। इन लोगों ने कांग्रेस की नरम नीतियों का विरोध आरंभ किया, जिससे कांग्रेस के अन्दर नरमपंथियों का प्रभाव कम होने लगा और इनका प्रभाव बढ़ने लगा। बनारस कांग्रेस अधिवेशन (1905 ई.) में इन लोगों के समूह ने कांग्रेस पांडाल में अलग बैठक की। जिसमें लाला जी ने ओज पूर्ण शब्दों में कहा कि- ''अगर भारत स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहता है, तो उसको भिक्षावृत्ति का परित्याग कर स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होना पड़ेगा।''

1907 में कांग्रेस के विभाजन के बाद लाला लाजपत राय कांग्रेस से अलग हो गये। कांग्रेस से अलग होकर इसी वर्ष उन्होंने पंजाब में 'उपनिवेशीकरण अधिनियम' के विरोध में एक व्यापक आन्दोलन चलाया। लाला हरदयाल के साथ मिलकर उन्होंने क्रांतिकारी आन्दोलनों में भी भाग लिया इसीलिये सरकार ने उन्हें निर्वासित किया था। निर्वासन के बाद लाला जी अमेरिका चले गये और वहीं से राष्ट्रीय आन्दोलनों और अंग्रेजी सरकार विरोधी गतिविधियों में भाग लेते रहे। इसी दौरान उन्होंने भारत की दयनीय स्थिति से सम्बन्धित एक पुस्तक लिखी, जिसे उस समय की सरकार ने जब्त कर लिया।

1920 में लाला जी पुनः भारत आये, उस समय देश महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन की तैयारी कर रहा था, जब गाँधीजी ने अपना आन्दोलन शुरू किया तो लाला लाजपत राय ने इसमें भाग लेकर पंजाब में इसे अत्याधिक सफल बनाया, जिससे सरकार ने क्रोधित होकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया, जेल से छूटने के बाद वे फिर से राजनीति में सक्रिय हो उठे, 1923 में वे केन्द्रीय सभा के सदस्य निर्वाचित हुऐ। वे स्वराज दल के सदस्य भी बने परन्तु बाद में वे इससे अलग हो गये और एक राष्ट्रीय दल की स्थापना की। 1925 में लाला जी को हिन्दु महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का सभापति बनाया गया।

1928 ई. मे जब साइमन कमीशन के बहिष्कार की योजना बनाई गई तो लाला जी ने उसमें काफी सक्रियता से भाग लिया और लाहौर में साइमन कमीशन विरोधी जुलूस का नेतृत्व किया, पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर बर्बरतापूर्वक लाठियाँ बरसाई, इस लाठी चार्ज में लाला जी के सिर पर गहन चोट लगी। इसी दर्दनाक चोट की वजह से इस महान युग पुरुष का देहावसान हो गया। उनकी इस असामयिक मृत्यु से पूरा देश स्तब्ध रह गया। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लाला जी का योगदान बहुमूल्य है। ▪

सूर्य नारायण का पर्व है मकर संक्रान्ति

प्रयागराज में हर साल माघ मेला लगता है, जहाँ भक्तगण कल्पवास करते है, यहाँ हर बारह वर्षों के बाद कुंभ मेला लगता है, जो कि एक महीने तक रहता है, जबकि छः वर्ष के पश्चात अर्धकुंभ लगता है।

मकर संक्रान्ति का हमारे देश में बहुत ज्यादा सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक महत्व है। इसी कारण रामचरित मानस में उल्लेखित है-

माघ मकरगत रबि जब होई।
तीरथपतिहिं आव सब कोई।।
देव दनुज किंनर नर श्रेनीं।
सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनी।।
पूजही माधव पद जल जाता।
परसि अखय बटु हरषहिं गाता।।

ऐसा माना जाता है, कि प्रयाग में संगम पर मकर संक्रान्ति के दिन सारे देव-देवियाँ स्नान करने आते है, इसीलिये प्रयाग में इस दिन स्नान करना अत्याधिक पुण्यकारक माना गया है। प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मकर संक्रान्ति होती है, क्योंकि आज ही के दिन सूर्यदेव दक्षिणायन से उत्तरायण होकर धनु से मकर राशि में प्रविष्ट होते है, जो सूर्य के पुत्र शनि की राशि है। मकर संक्रान्ति का बहुत बड़ा मेला गंगासागर में लगता है, इसके पीछे की एक कथा है, कि मकर संक्रान्ति को ही गंगाजी स्वर्ग से उतर कर भागीरथ जी के पीछे-पीछे चलकर कपिल मुनी के आश्रम में जाकर सागर से मिल गई थी। गंगा जी के इसी पावन जल से राजा सगर के साठ हजार पुत्रों का जो शाप से पीड़ित थे उनका उद्धार हुआ, इसी घटना की याद में ये तीर्थ गंगासागर के नाम से विख्यात हुआ और इसीलिये यहाँ पर विशाल मेले का मकर संक्रान्ति के दिन आयोजन होता है।

प्रयागराज में हर साल माघ मेला लगता है, जहाँ भक्तगण कल्पवास करते है, यहाँ हर बारह वर्षों के बाद कुंभ मेला लगता है, जो कि एक महीने तक रहता है, जबकि छः वर्ष के पश्चात अर्धकुंभ लगता है।

ऐसा माना जाता है, कि मकर संक्रान्ति से सूर्य की गति तिल-तिल करके बढ़ती है, इसीलिये इस दिन तिल और गुड़ के दान का महत्व है। इस दिन को पंजाब व जम्मू-कश्मीर में 'लोहड़ी' के रूप में मनाते है, इसके पीछे एक लोक कथा है, कि मकर संक्रान्ति के ही दिन कंस ने भगवान श्रीकृष्ण को मारने के लिये लोहिता नाम की एक राक्षसी को गोकुल भेजा था, जिसे श्रीकृष्ण ने खेल-खेल में ही मार डाला था, इसी घटना की याद में इसे लोहिड़ी पर्व के रूप में मनाया जाता है। सिन्धी समाज भी मकर-संक्रान्ति के एक दिन पूर्व इसे 'लाह-लोही' के रूप में मनाते है। इसी प्रकार तमिलनाडु में मकर संक्रान्ति को 'पोंगल' के रूप में मनाते है, जिसमें तिल, चावल व दाल की खिचड़ी बनाते है, क्योंकि वे नई फसल का चावल, दाल, तिल से पूजा करके कृषि देवता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते है, इसी दिन से तमिल पंचांग का नया वर्ष पोंगल शुरु होता है। माघ मास के स्नान का प्रारम्भ पौष की पूर्णिमा से प्रारम्भ हो जाता है। भारतीय संवत्सर का ग्यारहवाँ चान्द्रमास और दसवाँ सौर मास 'माघ' कहलाता है। क्योंकि इस माह मघा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा होती है, इसीलिये इसका नाम माघ पड़ा। धार्मिक दृष्टिकोण से माघ माह का बहुत महत्व है। इस माह में जल के भीतर डुबकी लगाने से प्राणी पापमुक्त हो जाता है। इस माह की ऐसी विशेषता है, कि इसमें जहाँ कही भी जल हो, वह गंगाजल के समान होता है। इसी प्रसंग में पद्मपुराण में एक कथा का वर्णन है कि प्राचीन काल में नर्मदा जी के तट पर सुव्रत नामक ब्राह्मण रहते थे। वे अत्यंत ज्ञानी थे उन्हें वेद, पुराणों, ज्योतिष, तर्क, मंत्र, सांख्य, योग व चौसठ कलाओं का अच्छा खासा ज्ञान था। वे अनेक देशों की भाषा व लिपियाँ भी जानते थे। इतने ज्ञानी होने के बाद भी वे अपने ज्ञान का प्रयोग धार्मिक कार्यों के लिये न करते हुए धन कमाने के लिये करते थे, जिससे उन्होंने कई स्वर्ण मुद्राएं अर्जित कर ली। धन कमाते-कमाते वे बूढ़े हो गये और बीमारी ने आ घेरा। तब उनके मन में विवेक का उदय हुआ कि मैंने अपना सारा जीवन धनार्जन में लगा दिया, परलोक की तो सोची ही नहीं, मेरा उद्धार कैसे हो? वे इसी सोच में थे कि इसी दौरान उनका संग्रहित धन भी चोरी हो गया, जिससे उन्हें धन की वास्तविक नश्वरता का बोध भी हुआ। अब उन्हें चिन्ता थी, तो सिर्फ परलोक की। व्याकुलता में उन्हें ये श्लोक याद आया-

माघे निमग्नाः सलिले सुशीते
विमुक्तपापास्त्रिदिवं प्रयान्ति।।

सुव्रत को अपने उद्धार का मूल मंत्र मिल गया, उन्होंने माघ स्नान का संकल्प लिया और नर्मदा जी में लगातार नौ दिन तक स्नान किया। दसवें दिन स्नान के बाद उनके प्राणांत हो गये। यद्यपि उन्होंने जीवन भर कोई सत्कर्म नहीं किया था, धनार्जन ही किया था, परन्तु माघ मास में स्नान के कारण निर्मल मन से पश्चाताप करते हुए उन्हें देवलोक की प्राप्ति हुई।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में हुए परिवर्तन को अन्धकार से प्रकाश की ओर हुआ परिवर्तन माना जाता है। सूर्योपासना का पर्व मकर संक्रान्ति हिन्दुओं द्वारा अंग्रेजी कलैन्डर के अनुसार मनाया जाने वाला एकमात्र पर्व है, जो प्रतिवर्ष 14 जनवरी को मनाया जाता है। ज्योतिष शास्त्र में ये माना जाता है, कि कुल 12 राशियों में से प्रत्येक राशि में सूर्य का भ्रमण काल एक माह तक होता है, इसीलिये प्रत्येक वर्ष सूर्य 14जनवरी के आस-पास मकर राशि में प्रवेश करता है। यह स्थिति वैज्ञानिकों द्वारा निर्धारित मकर रेखा के उत्तर की ओर सूर्य के प्रवेश की होती है, इसीलिये इसे सूर्य का उत्तरायण में आना भी कहा जाता है, जो धार्मिक आधार पर शुभता का प्रतीक है। ▪

पं. सलिल मालवीय

भारत के राष्ट्रवाद की अवधारणा

पं. दीनदयाल उपाध्याय

अंग्रेजों के शासनकाल में देश में जितने भी आन्दोलन चले और देश की जितनी भी राजनीति थी, उन सबका एक ही लक्ष्य था कि अंग्रेजों को हटाकर हम स्वराज्य प्राप्त करें। स्वराज्य के बाद हमारा रूप क्या होगा? हम किस दिशा में आगे बढ़ेंगे? इसका बहुत कुछ विचार नहीं हुआ था। बहुत कुछ शब्द का मैंने प्रयोग इसलिए किया है कि बिलकुल विचार नहीं हुआ था यह कहना ठीक न होगा। ऐसे लोग थे कि जिन्होंने उस समय भी बहुत-सी बातों पर विचार किया था। स्वयं गांधी जी ने हिन्द स्वराज्य लिखकर उसमें स्वराज्य आने के बाद भारत का चित्र क्या होगा, इस पर अपने विचार रखे थे। उसके पहले लोकमान्य तिलक ने भी गीता रहस्य लिखकर संपूर्ण आंदोलन के पीछे की तात्विक भूमिका क्या होगी, इसका विवेचन किया था। साथ ही उस समय दुनिया में जो भिन्न-भिन्न विचारसरणियां चल रही थी, उनकी भी तुलनात्मक दृष्टि से आलोचना की थी।

इसके अतिरिक्त समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे राजनैतिक दलों ने जो प्रस्ताव स्वीकार किये, उनमें भी ये विचार आये थे। किन्तु उन सबका जितना गंभीर अध्ययन होना चाहिए था, उतना उस समय तक नहीं हुआ था। क्योंकि सबके सामने प्रमुख प्रश्न यही था कि पहले अंग्रेजों को निकालें फिर अपने घर का निर्माण कैसे करेंगे, इसका विचार कर लेंगे। इसलिए यदि विचारों के मतभेद भी कहीं थे तो लोगों ने उनको दबा करके रखा था। यहाँ तक कि समाजवाद के आधार पर आगे का भारत बनना चाहिए, इस तरह का विचार करने वाले जो लोग थे, वे कांग्रेस के अन्दर ही एक सोशलिस्ट पार्टी बनाकर काम करते रहे। उसके बाहर निकलकर उन्होंने अलग से कार्य करने का प्रयत्न नहीं किया। क्रान्तिकारी भी अपने-अपने विचारों के अनुसार स्वराज्य के लिए काम करते थे। इसी प्रकार और भी लोग थे। किन्तु प्रमुखता इसी बात की रही कि पहले देश को आजाद कर लिया जाए।

अतः देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी? किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गंभीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया और आज भी जब इतने वर्ष देश को स्वतन्त्र हुए हो गए हम यह नहीं कह सकते कि कोई दिशा निश्चित हो गयी है।

देश आजाद होने के बाद स्वाभाविक रूप से यह सवाल हम सब लोगों के सामने आना चाहिए था कि अब हमारे देश की दिशा क्या होगी?

किन्तु सबसे बड़ा आश्चर्य तो यह है कि देश की स्वतंत्रता के बाद भी जितनी गंभीर रूप से इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए था, उतना गम्भीर रूप से लोगों ने विचार नहीं किया।

भारत किधर जाने वाला है?

समय-समय पर कांग्रेस या दूसरे दल के लोगों ने कल्याणकारी राज्य, समाजवाद, उदारमतवाद, आदि का ध्येय अवश्य घोषित किया है। विविध नारे लगाये गये हैं। परन्तु ये जितने नारे लगाने वाले लोग हैं, उनके सामने उन सब विचार धाराओं का नारे से अधिक कोई महत्व नहीं रहता। यह बात मैं इसलिए कह रहा हूं कि इसका मुझे अनुभव है। एक बार एक सज्जन से बातचीत हो रही थी। वह कह रहे थे कि कांग्रेस के विरूद्ध मिल-जुलकर अपने को एक मोर्चा बनाना चाहिए ताकि अच्छी तरह से लड़ सकें। राजनीतिक दृष्टि से समय-समय पर इस प्रकार की नीतियाँ लेकर दल चलते है और इसलिए उनके इस प्रस्ताव में तो कोई अनुचित बात नहीं थी। परन्तु बात करते-करते मैंने सहज में पूछ लिया कि हम लोग मोर्चा तो शायद बना लेंगे परन्तु कुछ थोड़ा बहुत कार्यक्रम लेकर चलें? कौन सा आर्थिक कार्यक्रम लेकर चलें? कौनसा राजनैतिक कार्यक्रम लेकर चलें? इन प्रश्नों पर भी विचार करना चाहिए।

इस पर उन्होंने सहज भाव से कह दिया कि इसकी कोई चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है, आपको जो पसन्द हो स्वीकार कर लीजिए। हम तो घोर साम्यवादी कार्यक्रम से लेकर बिल्कुल पूंजीवादी कार्यक्रम तक जो आप चाहें उसमें समर्थन कर देंगे। उनको किसी भी कार्यक्रम में कोई आपत्ति नहीं थी। उद्देश्य केवल इतना ही था कि किसी न किसी तरीके से कांग्रेस को हरा देना चाहिए। आज भी बहुत बार लोग कहते हैं कि

कम्युनिस्टों तथा बाकी सब लोगों से मिलकर भी कांग्रेस को हरा दिया जाए।

साँप-नेवला एक साथ

केरल में अभी-अभी चुनाव हुए हैं। उसमें कम्युनिस्ट, मुस्लिम लीग, स्वतंत्र पार्टी, संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी, विद्रोही कांग्रेस जो केरल कांग्रेस के नाम से आई, क्रान्तिकारी सोशलिस्ट पार्टी आदि जितनी भी पार्टियां हैं, इनमें आपस में भिन्न-भिन्न प्रकार से गठबंधन हुए। इन गठबन्धनों के कारण यह पता नहीं लग सकता था कि इनके कोई राजनीतिक सिद्धान्त, विचार अथवा आदर्श भी हैं या नहीं। विचारों की दृष्टि से यह स्थिति है। कांग्रेस में भी यही बात दिखाई दे रही है। यद्यपि कांग्रेस ने प्रजातन्त्रीय समाजवाद का सिद्धान्त स्वीकार किया है तथापि कांग्रेस के लोग जो बोलते हैं उनमें यही दिखाई देता है कि वहाँ पर एक निश्चित सिद्धान्त निश्चित कार्यक्रम नहीं। घोर कम्युनिस्ट विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर विद्यमान हैं और उस कयुनिज्म का डटकर विरोध करते हुए पूँजीवादी विचारधारा वाले भी कांग्रेस के अन्दर मौजूद हैं। अहिनकुल योग के अनुसार नकुल और साँप के सहअस्तित्व का कोई जादू का पिटारा हो सकता है तो वह आज की कांग्रेस है।

हमें आत्माभिमुख्र होना पड़ेगा

इस स्थिति में हम आगे बढ़ सकेंगे या नहीं, इसका हमें विचार करना चाहिए। देश में आज की अनेक समस्याओं की कारण मीमांसा करें तो पता चलेगा कि अपने गन्तव्य और उसकी दिशा का अज्ञान बहुतांश में आज की अव्यवस्था के लिए जिम्मेदार है। यह तो मैं मानता हूं कि हिन्दुस्थान के सभी 45 करोड़ लोग सब प्रश्नों पर अथवा किसी एक प्रश्न पर भी पूर्णतः एक विचार और एक मत नहीं हो सकते। किसी भी देश में यह संभव नहीं है। फिर भी राष्ट्र की एक सामान्य इच्छा नाम की कोई चीज होती है। उसको आधार बनाकर काम किया जाएं तो सर्वमान्य व्यक्ति को लगता है कि मेरे मन के मुताबिक काम हो रहा है। उसमें से विचारों की अधिकतम एकता भी पैदा होती हैं। अक्टूबर-नवम्बर 1962 में कम्युनिस्ट चीन के आक्रमण के समय जनता की अवस्था इस तथ्य का अच्छा उदाहरण है। इस समय देश में एक उत्साह की लहर पैदा हो गई थी। कर्म तथा त्याग दोनों की शक्ति जाग्रत हो गई थी। जनता और सरकार के बीच भिन्न-भिन्न दलों के बीच तथा नेता और जनता के बीच कोई खाई नहीं दिखाई देती थी। यह सब कैसे हुआ? सरकार ने वह नीति अपनाई जो जनता के मन के अनुसार तथा पुरूषार्थ का आह्वान करने वाली थी। फलतः हम एक होकर खड़े हो गए।

समस्याओं का कारण स्व के प्रति दुर्लक्ष्य

आवश्यकता है कि अपने स्व का विचार किया जाए। बिना उसके स्वराज्य का कोई अर्थ नहीं। स्वतंत्रता हमारे विकास और सुख का साधन नहीं बन सकती। जब तक हमें अपनी असलियत का पता नहीं तब तक हमें अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं हो सकता और न उसका विकास ही संभव है। परतन्त्रता में समाज का स्व दब जाता है। इसीलिए राष्ट्र स्वराज्य की कामना करते हैं जिससे वे अपनी प्रकृति और गुणधर्म के अनुसार प्रयत्न करते हुए सुख की अनुभूति कर सकें। प्रकृति बलवती होती है। उसके प्रतिकूल काम करने से अथवा उसकी ओर दुर्लक्ष्य करने से कष्ट होते हैं। प्रकृति का उन्नयन कर उसे संस्कृति बनाया जा सकता है, पर उसकी अवहेलना नहीं कर सकती। आधुनिक मनोविज्ञान बताता है कि किसी प्रकार मानव प्रकृति एवं भावों की अवहेलना से व्यक्ति के जीवन में अनेक रोग पैदा हो जाते हैं। ऐसा व्यक्ति प्रायः उदासीन एवं अनमना रहता है। उसकी कर्मशक्ति क्षीण हो हो जाती है अथवा विकृत होकर विपथ गामिनी बन जाती है। व्यक्ति के समान राष्ट्र भी प्रकृति के प्रतिकूल चलने पर अनेक व्यथाओं का शिकार बनता है। आज भारत की अनेक समस्याओं का यही कारण है।

राजनीति में अवसरवादिता

राष्ट्र का मार्गदर्शन करने वाले तथा राजनीति के क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश व्यक्ति इस प्रश्न की ओर उदासीन है। फलतः भारत की राजनीति, अवसरवादी एवं सिद्धान्तहीन व्यक्तियों का अखाड़ा बन गई है। राजनीतिज्ञों तथा राजनीतिक दलों के न कोई सिद्धान्त एवं आदर्श है और न कोई आचार संहिता। एक दल छोड़कर दूसरी दल में जाने में व्यक्ति को कोई संकोच नहीं होता। दलों के विघटन अथवा विभिन्न दलों की युक्ति भी होती है तो वह किसी तात्विक मतोद अथवा समानता के आधार पर नहीं अपितु उसके मूल में चुनाव और पद ही प्रमुख रूप से रहते हैं। 1937 में जब हाफिज मुहम्मद इब्राहिम मुस्लिम लीग के टिकट पर चुने जाने के बाद कांग्रेस में सम्मिलित हुए तो उन्होंने स्वस्थ राजनीतिक परंपरा के अनुसार विधानसभा से त्याग पत्र देकर पुनः कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ा और जीतकर आए। 1948 में जब कांग्रेस से अलग हटकर सोशलिस्ट पार्टी का निर्माण हुआ तब सभी सोशलिस्टों ने, जो विधानमण्डलों के सदस्य थे, त्यागपत्र देकर अपनेअपने क्षेत्र से पुनः चुनाव लड़े। किन्तु उसके बाद किसी ने इस परंपरा का निर्वाह नहीं किया। अब राजनीतिक क्षेत्र में पूर्ण स्वैच्छाचार है। इसी का परिणाम है कि आज भी सभी के विषय में जनता के मन में समान रूप से अनास्था है। ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं कि जिसकी आचरणहीनता के विषय में कुछ कहा जाए तो जनता विश्वास न करे। इस स्थिति को बदलना होगा। बिना उसके समाज में व्यवस्था और एकता स्थापित नहीं की जा सकती।

हम किस ओर चलें?

हम किस ओर चले? राष्ट्र के सामने यह प्रश्न है। कुछ लोग कहते हैं कि राष्ट्र के परतन्त्र होने के पूर्व एक हजार वर्ष पहले जहाँ हमने राष्ट्र जीवन का सूत्र छोड़ दिया था वहीं से हम उसे आगे बढ़ाएँ। पर राष्ट्र कोई वस्त्र या पुस्तक के समान निर्जीव वस्तु तो है नहीं जिसे बुनते या पढ़ते समय जहाँ एक बार छोड़ दिया, वहाँ से फिर किसी विशेष अतिथि के बाद उसे आगे बढ़ाया जा सके। फिर यह कहना भी युक्ति संगत नहीं होगा कि परतन्त्रता के साथ एक हजार वर्ष पूर्व हमारे जीवन का सूत्र एकदम टूट गया है तथा तब से अब तक हम पूर्णतया निष्क्रिय अथवा गतिहीन रहे हैं। बदली हुई परिस्थितियों में अपने जीवन को बनाये रखने तथा स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने में अपने जीवन को अभिव्यक्त किया। हमारे जीवन का प्रवाह अवरूद्ध नहीं अपितु आगे बढ़ता गया। गंगा की धारा की लौटाने का प्रयत्न बुद्धिमानी नहीं होगी। बनारस की गंगा हरिद्वार के समान शीतल एवं स्वच्छ चाहे न हो, परन्तु उतनी ही पवित्र एवं मुक्ति-दायिनी है। उसमें मिलने वाले जिन नदी-नालों को उसने आत्मसात कर लिया है उनकी कलुषा तथा गन्दगी की ओर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं। वे गंगा में मिलकर गंगा ही बन गये हैं। अब तो गंगा के प्रवाह को आगे ही बढ़ाना होगा।

यदि संपूर्ण स्थिति इतनी ही होती तब तो कोई कठिनाई नहीं थी। विश्व में हम अकेले ही तो नहीं है। दूसरे राष्ट्र भी है। उन्होंने पिछले एक हजार वर्ष में अभूतपूर्व उन्नति की है। हमारा सपूर्ण ध्यान तो अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने तथा अपनी रक्षा के प्रयत्नों में ही लगा रहा है। विश्व की इस प्रगति में हम सहभागी नहीं हो सके। अब जब हम स्वतंत्र हो गये हैं तो क्या हमारा यह कर्तव्य नहीं हो जाता कि हम अपनी इस कमी को शीघ्राति-शीघ्र पूरा करके विश्व के इन प्रगट देशों के साथ खड़े हो जाएँ? यहाँ तक तो, मैं समझता हूं, मतभेद की कोई गुंजाइश नहीं है।

स्वदेशी की भावना सर्वव्यापी हो

समस्या तब पैदा होती है, जब हम पश्चिम

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही।

औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतंत्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहां उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग से काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था।

की प्रगति के कारणों तथा परिणामों अथवा वास्तविकता एवं भासवान के सबन्ध में ठीक-ठीक निर्णय नहीं कर पाते। यह कठिनाई तब तक बढ़ जाती है जब हम यह देखते हैं कि इन प्रगत देशों में से ही एक ने हमारे ऊपर डेढ़ सौ वर्षों तक राज्य किया तथा अपने राज्यकाल में उसने ऐसे अनेक उपाय किये जिससे हमारे अन्दर अपने सबन्ध में तिरस्कार तथा उनके विषय में आदर का भाव पैदा हो जाए। पश्चिम के ज्ञानविज्ञान के साथ ही पश्चिमी देशों रहन सहन, बोल चाल, खान-पान आदि के तरीके भी इस देश में आये। भौतिकविज्ञान ही नहीं अपितु, नीतिशास्त्र, राज्यव्यवस्था, अर्थनीति तथा समाज धारणा के क्षेत्र में भी इन देशों के मानदण्ड हमारे मानक बने गये। आज भारत के शिक्षित वर्ग के जीवन मूल्यों पर पश्चिम का यह प्रभाव स्पष्ट दिखायी देता है। हमें निर्णय करना पड़ेगा कि यह प्रभाव अच्छा है या बुरा। जब तक अंग्रेज थे तब तक तो हम स्वदेशी की भावना से अंग्रेजियत को दूर रखने में ही गौरव समझते थे, किन्तु अब जब अंग्रेज चला गया है तब अंग्रेजियत पश्चिम की प्रगति का द्योतक एवं माध्यम बनकर अनुकरण की वस्तु बन गयी है। यदि सत्य है तो संकुचित के भाव का आड़े लाकर राष्ट्र की प्रगति में बाधा डालना ठीक नहीं होगा। किन्तु इसके विपरीत पाश्चात्य जीवन मूल्यों और विज्ञान की प्रगति को यदि अलग किया जा सकता है तो अंग्रेजियत के मोह का परित्याग करना ही हमारे लिए श्रेयस्कर होगा। पर कुछ लोग ऐसे भी है जो पाश्चात्य राजनीति एवं अर्थनीति की दिशा को ही प्रगति

की दिशा समझते हैं और इसलिए भारत पर वहाँ की स्थिति का प्रक्षेपण करना चाहते हैं। अतः भारत की भावी दिशा का निर्णय करने से पूर्व यह उचित होगा कि हम पश्चिम की राजनीति के वैचारिक अधिष्ठान तथा उनकी वर्तमान पहेली का विचार कर लें।

यूरोप में राष्ट्रों का उदय

जिन विचारधाराओं ने यूरोपीय राजनीति एवं जीवन को विशेषतः प्रभावित किया है उनमें राष्ट्रवाद, प्रजातंत्र तथा समाजवाद की प्रमुख रूप से गणना की जा सकती है। इसके साथ ही विश्व एकता तथा शांति का स्वप्न देखने वाले भी वहाँ हुए है और उस दिशा में भी कुछ प्रयत्न किये जा रहे हैं।

इन विचारों में राष्ट्रवाद सबसे पुराना तथा बलशाली है। रोम के साम्राज्य के पतन के बाद तथा रोमन कैथोलिक चर्च के प्रति विद्रोह अथवा उसके प्रभाव के कमी के कारण यूरोप में राष्ट्रों का उदय हुआ। यूरोप का पिछला एक हजार वर्ष का इतिहास इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष का इतिहास है। इन राष्ट्रों के आविर्भाव तथा पारस्परिक संघर्ष इतिहास है। इन राष्ट्रों ने यूरोप महाद्वीप से बाहर जाकर अपने उपनिवेश बनाये तथा दूसरे स्वतंत्र देशों को गुलाम बनाया। राष्ट्रवाद के उदय के कारण राष्ट्र और राज्य की एकता की प्रवृत्ति भी बढ़ी तथा राष्ट्रीय राज्य का यूरोप में उदय हुआ। साथ ही रोमन कैथोलिक चर्च के केन्द्रीय भाव में कमी होकर या तो राष्ट्रीय चर्च का निर्माण हुआ या मजहब का। मजहबी गुरुओं का राजनीति में कोई विशेष स्थान नहीं रहा। सेक्युलर स्टेट की कल्पना का इस प्रकार जन्म हुआ।

यूरोप में प्रजातंत्र का जन्म

दूसरी क्रांतिकारी कल्पना प्रजातंत्र की है जिसका यूरोप की राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव हुआ है। प्रारंभ में तो जितने राष्ट्र बने उनमें राजा ही शासनकर्ता रहा, किन्तु राजा की निरंकुशता के विरूद्ध जनता में भी धीरे धीरे जागरण हुआ। औद्योगिक क्रांति के कारण तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के परिणाम स्वरूप सभी देशों में एक वैश्य वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ। स्वभावतः इनका पुराने सामन्तों तथा राजाओं से संघर्ष आया। इस संघर्ष ने प्रजातंत्र की तात्विक भूमिका ग्रहण की। यूनान के नगर गणराज्यों से इस विचार का उद्‌गम ढूंढा गया। प्रत्येक नागरिक की समानता, बन्धुता और स्वतंत्रता के आदर्श के सहारे जनसाधारण को इस तत्व के प्रति आकृष्ट किया गया। फ्रांस में बड़ी भारी राज्यक्रांति हुई। इंग्लैण्ड में भी समय-समय पर आन्दोलन हुए। प्रजातंत्र की जनपथ पर पकड़ हुई। राजवंश या तो समाप्त कर दिये गये अथवा उनके अधिकार मर्यादित कर वैधानिक राज्यपद्धति की नींव डाली गई। आज प्रजातंत्र यूरोप की मान्य पद्धति है। जिन्होंने प्रजातंत्र की अवहेलना की वे भी प्रजातंत्र के प्रति निष्ठा व्यक्त करने में कमी नहीं करते। हिटलर, मुसोलिनी तथा स्टालिन जैसे तानशाहों ने भी प्रजातंत्र को अमान्य नहीं किया।

व्यक्ति का शोषण होता रहा

प्रजातंत्र ने यद्यपि प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार दिया, किन्तु जिन लोगों ने प्रजातंत्र के संघर्ष का नेतृत्व किया था। शक्ति उन्हीं के हाथों में रही। औद्योगिक क्रान्ति के परिणाम स्वरूप उत्पादन की नई पद्धति पर विश्वास हो गया था। स्वतंत्र रहकर घर में काम करने वाला मजदूर अब कारखानेदार का नौकर बनकर काम करने लगा था। अपना गाँव छोड़कर वह नगरों में आ बसा था। वहां उसके आवास की व्यवस्था बहुत ही अधूरी थी। कारखाने में जिस ढंग से काम होता था, उसके कोई नियम नहीं थे। मजदूर असंगठित एवं दुर्बल था। वह शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का शिकार बन गया था। राज्य की शक्ति जिनके हाथों में थी, वे भी उसी वर्ग में से थे, जो उनका शोषण कर रहे थे। अतः राज्य से कोई भी आशा नहीं थी।

इस अन्यायपूर्ण अवस्था के विरूद्ध विद्रोह तथा स्थिति में सुधार की भावना लेकर कई महापुरूष खड़े हुए। उन्होंने अपने आपको समाजवादी कहा। कार्ल मार्क्स भी इन समाजवादियों में से एक है। उसने विद्यमान अन्याय का विरोध करने के प्रयत्न में अर्थव्यवस्था तथा इतिहास का अध्ययन कर एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। कार्ल मार्क्स की विवेचना के बाद समाजवाद एक वैज्ञानिक आधार पर खड़ा हो गया। बाद में समाजवादियों ने मार्क्स को माना हो या ना, किन्तु उनके विचारों पर उसकी छाप अवश्य है। ▪

(पं. दीनदयाल उपाध्याय लिखित एकात्म मानववाद पुस्तक से साभार)

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने उज्जैन में श्री महाकाल महालोक से 5जी टेक्नालॉजी का शुभारंभ किया।

इंदौर में क्रांतिसूर्य टंट्या मामा भील जी की प्रतिमा का अनावरण किया गया।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी पन्ना में 25 वीं यूथ ओपन महिला, पुरूष राष्ट्रीय वॉलीबॉल चैंपियनशिप में शामिल हुए।

प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी, ने छिंदवाड़ा में नगरीय निकाय जनप्रतिनिधियों के वर्ग का शुभारंभ किया।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने जननायक टंट्या मामा जी के बलिदान दिवस पर श्रद्धासुमन अर्पित किये।

मुख्यमंत्री जी ने किसान मोर्चा द्वारा भूमि सुपोषण अभियान के अंतर्गत किसान गौरव रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने अटल जी की जयंती पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी ने विदिशा जिले की नटेरन में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी की प्रतिमा का अनावरण किया।

G20
भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH · ONE FAMILY · ONE FUTURE